From The Risale-i Nur Collection

THE DAMASCUS SERMON

by

Bediuzzaman

SAID NURSI

SÖZLER PUBLICATIONS

से

रिसाले-ए नूर संग्रह

दमिश्क
उपदेश

बेदिउज्जमान सैद नर्सी द्वारा

नूर-द लाइट के स्टाफ-राइटर सुकरान वाहिद द्वारा तुर्की भाषा के 'हुतबे-ए
शामिये' से अनुवादित

दूसरा (संशोधित एवं विस्तारित) संस्करण 1996.

जानकारी के लिए, पता: सोज़लर नेसरियात
ए.एस., नुरुओस्मानिया कैड., सोरकुन हान 28/2, कागालोग्लु, इस्तांबुल, तुर्की।
टेलीफ़ोन: 0212 527 76 07; फ़ैक्स: 0212 520 8231

यहां मुद्रित: रेहान ऑफ़सेट ए.S़.
इस्तांबुल, 1996.

विषय-सूची पृष्ठ 5

अंतर्वस्तु

बेदिउज्जमां सईद नूरसी कौन थे और रिसाले-ए नूर क्या है?

बेदिउज्जमां सईद नूरसी का जन्म 1877 में पूर्वी तुर्की में हुआ था और इस्लाम के लिए अनुकरणीय संघर्ष और आत्म-बलिदान के जीवन के बाद 1960 में 83 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई। वे उच्चतम स्तर के विद्वान थे जिन्होंने न केवल सभी पारंपरिक धार्मिक विज्ञानों का बल्कि आधुनिक विज्ञान का भी अध्ययन किया था और अपनी असाधारण योग्यता और विद्वत्ता के कारण युवावस्था में ही उन्हें बेदिउज्जमां, युग का आश्चर्य, नाम मिला था।

बेदिउज़्ज़मान का जीवन काल खिलाफत और ओटोमन साम्राज्य के अंतिम दशकों, प्रथम विश्व युद्ध के बाद इसके पतन और विखंडन, तथा 1923 में इसके गठन के बाद गणतंत्र के प्रथम सैंतीस वर्षों तक फैला हुआ है, जिनमें से 1950 तक के वर्ष सरकार की दमनकारी इस्लाम-विरोधी और धर्म-विरोधी नीतियों के लिए प्रसिद्ध हैं।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद के वर्षों तक इस्लाम के लिए बेदिउज्जमां का संघर्ष सक्रिय और सार्वजनिक था।

उन्होंने न केवल अनेक छात्रों को पढ़ाया था तथा इस्लामी दुनिया भर के प्रमुख विद्वानों के साथ वाद-विवाद और चर्चा में भाग लिया था, बल्कि उन्होंने 1914 में पूर्वी तुर्की में आक्रमणकारी रूसियों के विरुद्ध एक स्वयंसेवी रेजिमेंट की कमान भी संभाली थी तथा उसका नेतृत्व भी किया था, तथा लगभग दो वर्षों तक वह इस रेजिमेंट का नेतृत्व करते रहे थे, जब तक कि उन्हें बंदी नहीं बना लिया गया।
इसके अलावा, उस समय तक उन्होंने सार्वजनिक जीवन में सक्रिय रूप से भाग लेकर इस्लाम के हितों को आगे बढ़ाने की कोशिश की थी। हालाँकि, साम्राज्य से गणतंत्र में परिवर्तन के वर्षों में 'पुराने सईद' से 'नए सईद' में भी परिवर्तन देखा गया। 'नए सईद' की विशेषता यह थी कि वह सार्वजनिक जीवन से दूर रहते थे और अध्ययन, प्रार्थना और विचार पर ध्यान केंद्रित करते थे, क्योंकि अब एक अलग तरह के संघर्ष की आवश्यकता थी।

हालाँकि उन्होंने इसमें कोई हिस्सा नहीं लिया था, और वास्तव में उन्होंने इसके नेताओं को सरकार के खिलाफ़ अपने विद्रोह को त्यागने की दृढ़ता से सलाह दी थी, 1925 के पूर्वी तुर्की में घटनाओं के दौरान, बेदिउज़्ज़मान को पश्चिमी अनातोलिया में निर्वासित कर दिया गया था। इसके बाद, अगले पच्चीस वर्षों तक, और अपने जीवन के कुछ कम हद तक अंतिम दस वर्षों तक, उन्हें अधिकारियों द्वारा निर्वासन, कारावास, उत्पीड़न और उत्पीड़न के अलावा कुछ भी नहीं सहना पड़ा। लेकिन निर्वासन और अलगाव के इन वर्षों में रिसाले-ए-नूर, प्रकाश का ग्रंथ लिखा गया और पूरे तुर्की में इसका प्रसार हुआ। खुद बेदिउज़्ज़मान को उद्धृत करते हुए, "अब मैं स्पष्ट रूप से देखता हूँ कि मेरे जीवन का अधिकांश हिस्सा मेरी अपनी स्वतंत्र इच्छा, क्षमता, समझ और दूरदर्शिता के बाहर इस तरह से निर्देशित किया गया है, कि यह कुरान के उद्देश्य की सेवा करने के लिए इन ग्रंथों का निर्माण कर सके। ऐसा लगता है कि एक विद्वान के रूप में मेरा पूरा जीवन इन लेखन की प्रारंभिक तैयारी में बीता है, जो कुरान की चमत्कारिकता को प्रदर्शित करता है।"

बेदिउज़्ज़मान ने इस्लामी दुनिया के पतन का एक अनिवार्य कारण इसकी नींव का कमज़ोर होना समझा, यानी इस्लामी आस्था के मूल सिद्धांतों में विश्वास का कमज़ोर होना। 19वीं और 20वीं सदी में भौतिकवादियों, नास्तिकों और विज्ञान और प्रगति के नाम पर अन्य लोगों द्वारा उन नींवों पर किए गए अभूतपूर्व हमलों के साथ, इसने उन्हें यह एहसास दिलाया कि आस्था को मज़बूत करने और उसे बचाने की तत्काल और सर्वोपरि आवश्यकता है।

जरूरत इस बात की थी कि इस्लाम की इमारत को उसकी नींव, विश्वास से फिर से बनाने के लिए सभी प्रयास किए जाएं और उस स्तर पर उन हमलों का जवाब
'गैर-भौतिक जिहाद' या 'जिहाद' से दिया जाए।
शब्द का।' इस प्रकार,

अपने निर्वासन में, बेदिउज़्ज़मान ने एक रचना लिखी, रिसाले-ए नूर, जो आधुनिक मनुष्य के लिए विश्वास के मूल सिद्धांतों, कुरान की सच्चाइयों को समझाती और व्याख्या करती है। उनका तरीका विश्वास और अविश्वास दोनों का विश्लेषण करना और स्पष्ट रूप से तर्कपूर्ण तर्कों के माध्यम से यह प्रदर्शित करना था कि कुरान की विधि का पालन करके न केवल विश्वास की सभी सच्चाइयों, जैसे कि ईश्वर का अस्तित्व और एकता, पैगंबरी और शारीरिक पुनरुत्थान को तर्कसंगत रूप से साबित करना संभव है, बल्कि यह भी कि ये सत्य अस्तित्व, मनुष्य और ब्रह्मांड की एकमात्र तर्कसंगत व्याख्या हैं।

इस प्रकार बेदिउज़्ज़मान ने आसानी से समझी जाने वाली कहानियों, तुलनाओं, स्पष्टीकरणों और तर्कपूर्ण प्रमाणों के रूप में यह प्रदर्शित किया कि धर्म की सच्चाई आधुनिक विज्ञान के निष्कर्षों से असंगत होने के बजाय, उन निष्कर्षों की भौतिकवादी व्याख्या तर्कहीन और बेतुकी है। वास्तव में, बेदिउज़्ज़मान ने रिसाले-ए-नूर में साबित किया कि ब्रह्मांड के बारे में विज्ञान की आश्चर्यजनक खोजें

धर्म की सच्चाई को पुष्ट और सुदृढ़ करना।
रिसाले-ए-नूर के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता, क्योंकि इसके माध्यम से बेदिउज्जमां सईद नूरसी ने तुर्की के इतिहास के सबसे काले दिनों में इस्लामी आस्था को संरक्षित करने और पुनर्जीवित करने में एक प्रमुख भूमिका निभाई थी। और वास्तव में इसकी भूमिका आज भी महत्व में बढ़ती जा रही है। लेकिन इसके अलावा, रिसाले-ए-नूर कई कारणों से न केवल सभी मुसलमानों बल्कि वास्तव में पूरी मानव जाति को संबोधित करने के लिए अद्वितीय रूप से उपयुक्त है। सबसे पहले यह आधुनिक मनुष्य की मानसिकता के अनुसार लिखा गया है, एक मानसिकता जो, चाहे मुस्लिम हो या नहीं, भौतिकवादी दर्शन से गहराई से प्रभावित है: यह विशेष रूप से उन सभी प्रश्नों, शंकाओं और भ्रमों का उत्तर देता है जो इसके कारण होते हैं। यह उन सभी 'क्यों' का भी उत्तर देता है जो आधुनिक मनुष्य के प्रश्न पूछने वाले दिमाग की पहचान हैं।

इसके अलावा, यह विश्वास के सबसे गहन विषयों को भी समझाता है, जिनका पहले केवल उन्नत विद्वान ही विस्तार से अध्ययन करते थे, इस तरह से कि हर कोई, यहां तक कि वे लोग भी जिनके लिए यह विषय नया है, बिना किसी कठिनाई या हानि के इसे समझ सकें और कुछ हासिल कर सकें।

एक और कारण यह है कि मनुष्य और ब्रह्मांड की सच्ची प्रकृति और उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए, रिसाले-ए-नूर दिखाता है कि सच्चा सुख केवल ईश्वर के विश्वास और ज्ञान में पाया जा सकता है, इस दुनिया और परलोक दोनों में। और यह उस गंभीर दर्द और दुख की ओर भी इशारा करता है जो अविश्वास मनुष्य की आत्मा और विवेक को देता है, जिसे आम तौर पर गुमराह लोग असावधानी और पलायनवाद के माध्यम से रोकने का प्रयास करते हैं, ताकि कोई भी समझदार व्यक्ति विश्वास में शरण ले सके।

समाप्त करने के लिए:

पवित्र कुरान बुद्धि के साथ-साथ मनुष्य की अन्य आंतरिक क्षमताओं को भी संबोधित करता है। यह मनुष्य को ब्रह्मांड और उसके कामकाज पर विचार करने का निर्देश देता है ताकि वह इसकी वास्तविक प्रकृति और उद्देश्यों को जान सके।

सृष्टि के बारे में जानने और इस प्रकार इसके एकमात्र रचयिता के गुणों तथा एक प्राणी के रूप में अपने कर्तव्यों को जानने का अवसर प्राप्त होता है।
तो, यही वह तरीका है जिसे बेदिउज़्ज़मान ने रिसाले-ए-नूर में अपनाया। उन्होंने ब्रह्मांड की वास्तविक प्रकृति को उसके निर्माता के संकेतों के रूप में समझाया और स्पष्ट तर्कों के माध्यम से प्रदर्शित किया कि जब इसे इस तरह से पढ़ा जाता है तो विश्वास के सभी मूल सिद्धांतों को तर्कसंगत रूप से साबित किया जा सकता है।

जब इस पद्धति का पालन किया जाता है, तो व्यक्ति एक सच्चा विश्वास प्राप्त करता है जो भौतिकवाद, प्रकृतिवाद और नास्तिकता या वैज्ञानिक प्रगति के प्रति भौतिकवादी दृष्टिकोण के सूक्ष्म हमलों के सामने उत्पन्न होने वाले किसी भी संदेह का सामना करने के लिए पर्याप्त रूप से ठोस और दृढ़ होगा। क्योंकि सभी वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति केवल ब्रह्मांड के कामकाज को उजागर करना है। जब ब्रह्मांड को एक विशाल और असीम रूप से जटिल और सार्थक एकीकृत पुस्तक के रूप में देखा जाता है जो अपने एकल लेखक का वर्णन करती है, तो संदेह और घबराहट पैदा करने के बजाय, ये सभी खोजें और प्रगति विश्वास को मजबूत करती हैं, वे इसे गहरा और विस्तारित करती हैं।

मनुष्य की सबसे बुनियादी ज़रूरत धर्म की ज़रूरत है, सर्वशक्तिमान ईश्वर को उसके सभी सबसे सुंदर नामों और गुणों के साथ पहचानने और उसकी पूजा करने की ज़रूरत है, और उसके नियमों का पालन करने की ज़रूरत है; जो ब्रह्मांड में प्रकट होते हैं और जो उसके पैगम्बरों के ज़रिए प्रकट होते हैं। कुरान के संदेश की व्याख्या करते हुए, सर्वशक्तिमान ईश्वर की अंतिम प्रकट पुस्तक, जिसे उनके अंतिम पैगंबर, मुहम्मद (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) द्वारा लाया गया और पूरी तरह से व्याख्या किया गया, और इस्लाम,

मानव जाति के लिए पूर्ण और परिपूर्ण धर्म की स्थापना करते हुए, बेदिउज्जमां सईद नूरसी ने रिसाले-ए नूर में प्रदर्शित किया कि विज्ञान और धर्म के बीच कोई विरोधाभास या द्वंद्व नहीं है; बल्कि, मानव जाति के लिए सच्ची प्रगति और खुशी केवल इसी रास्ते से, कुरान के रास्ते से ही प्राप्त की जा सकती है और प्राप्त की जाएगी।

शब्द प्रकाशन

दमिश्क धर्मोपदेश के लिए प्रकाशक की प्रस्तावना

1911 की शुरुआत में दमिश्क की यात्रा के दौरान, बेदिउज्जमान सईद नूरसी को वहां के धार्मिक अधिकारियों ने ऐतिहासिक उमय्यद मस्जिद में धर्मोपदेश देने के लिए आमंत्रित किया था। उनके आग्रह पर वह सहमत हो गए और उन्होंने लगभग दस हज़ार लोगों की एक सभा को धर्मोपदेश दिया, जिसमें सौ विद्वान शामिल थे। इसे इतनी अच्छी प्रतिक्रिया मिली कि बाद में एक सप्ताह में दो बार पाठ छपा।

इस धर्मोपदेश में, बेदिउज्जमां ने निश्चित समाचार दिया कि भविष्य में इस्लाम और कुरान की सच्चाई प्रबल होगी, और उन्होंने स्पष्ट प्रमाण भी दिए कि ऐसा होगा। उन्होंने न केवल यह प्रदर्शित किया कि इस्लामी दुनिया कुरान की दवाइयों के माध्यम से खुद को कैसे ठीक कर सकती है, बल्कि उन्होंने पश्चिम में कई विकासों की ओर भी इशारा किया, उनमें से एक सत्य की वास्तविक खोज की हलचल थी, जो इस्लाम की आगामी स्वीकृति का संकेत देती थी। असाधारण दूरदर्शिता के साथ, बेदिउज्जमां ने भविष्यवाणी की कि, जैसा कि सभी सबूतों से पता चलता है, इस्लाम निकट भविष्य में प्रभुत्व प्राप्त करेगा। हालाँकि, दो विश्व युद्धों और तुर्की और इस्लामी दुनिया में अन्य जगहों पर निरंकुशता की अवधि, जिसकी उन्होंने कल्पना नहीं की थी, ने मामलों में देरी की। यानी, जैसे-जैसे 1911 में उन्होंने जिन घटनाओं की खबर दी, वे धीरे-धीरे सामने आईं, यह धर्मोपदेश,

साथ ही इस्लामी दुनिया और उसके आसपास के देशों को प्रभावित करने वाली कुछ बुनियादी बुराइयों का निदान भी किया गया है।

पवित्र कुरान में बताए गए उपाय आज भी मुसलमानों के लिए सर्वाधिक प्रासंगिक हैं।

जैसा कि बेदिउज्जमां सईद नूरसी बताते हैं, चूंकि इस्लाम तर्क और युक्तिसंगत प्रमाण पर निर्भर करता है, इसलिए यह वर्तमान और भविष्य का धर्म है, क्योंकि यह विज्ञान, प्रौद्योगिकी और तर्क का युग है।
यह तथ्य अब बहुत से लोगों को समझ में आ रहा है, जो महसूस करते हैं कि वे सच्चे और पूर्ण धर्म के बिना नहीं रह सकते। इस्लामी दुनिया के पतन और पश्चिम की तुलना में इसके भौतिक पिछड़ेपन के कारणों को मुसलमानों द्वारा पवित्र कुरान और इस्लाम की शिक्षाओं और सत्यों का पालन करने में विफलता में खोजा जाना चाहिए। जिस तरह इस्लाम मनुष्य की भौतिक प्रगति के लिए प्रावधान करता है और वास्तव में उसे इसके लिए प्रेरित करता है, उसी तरह यह नैतिक और आध्यात्मिक मामलों में मनुष्य की सच्ची प्रगति और विकास के लिए भी प्रावधान करता है। यह संयोजन सच्ची सभ्यता का आधार बनता है।

चूँकि पश्चिमी सभ्यता सत्य और न्याय पर आधारित नहीं है, बल्कि बल, संघर्ष और आक्रामकता के सिद्धांतों पर आधारित है, इसलिए सभ्यता की बुराइयाँ इसके गुणों पर हावी हो जाती हैं। अगर मनुष्य को जीवित रहना है
वह इस्लाम को अपना लेगा, क्योंकि अब वह सच्ची सभ्यता की आवश्यकता को समझता है, जो कि ईश्वरीय प्रकाशना के सकारात्मक सत्यों, पवित्र कुरान और पैगम्बर मुहम्मद (PBUH) के शरीयत पर आधारित है, जिसमें प्रगति के गुणों की प्रधानता है, और सभ्यता के लाभों से लाभ उठाया जा सकता है।

"छह शब्दों" के रूप में, बेदिउज़्ज़मान ने इस्लाम की उन सकारात्मक सच्चाइयों का वर्णन किया है, जो मुस्लिम समुदाय को घेरने वाली गंभीर बीमारियों का इलाज हैं। आशा, साहस, ईमानदारी, प्रेम और भाईचारा, आत्म-बलिदान, विश्वासियों को एकजुट करने वाले उज्ज्वल बंधनों के बारे में जागरूकता, आपसी परामर्श। ये सभी बातें इस्लाम के लिए नहीं हैं।

वे गुण जो महत्वहीन हैं या कठिनाइयों या खतरों के सामने त्याग दिए जा सकते हैं; इसके विपरीत, वे मुस्लिम समाज की नींव बनाते हैं।

वैज्ञानिक खोज और तकनीकी उन्नति के इस युग में कुरान और इस्लाम की सच्चाईयाँ जैसे-जैसे स्पष्ट होती जा रही हैं, वैसे-वैसे बेदिउज्जमां सईद नूरसी के 1911 के पैगम्बरी उपदेश की शिक्षाएँ भी महत्वपूर्ण होती जा रही हैं। भविष्य की सभ्यता ही सच्ची सभ्यता है; इस्लाम की सभ्यता। यह तभी संभव होगा जब मुसलमान इन शिक्षाओं पर ध्यान देंगे और अपने समाज को इस्लाम की नैतिकता और आस्था की नींव पर फिर से खड़ा करेंगे।

उपदेश के दो मूल मुद्रणों के अलावा, अरबी पाठ का एक और संस्करण इस्तांबुल में 1922 में प्रकाशित हुआ था। 1950 के दशक में लेखक द्वारा इसका तुर्की भाषा में अनुवाद किया गया था, और फिर इसे रिसाले-ए-नूर संग्रह के हिस्से के रूप में प्रकाशित किया गया था। बेदिउज़्ज़मान ने इस तुर्की संस्करण को कुछ हद तक विस्तारित किया, जो वर्तमान अनुवाद का स्रोत है, ताकि समकालीन मुसलमानों को भी सीधे संबोधित किया जा सके। इस कारण से 1911 के बाद की तारीखों और रिसाले-ए-नूर के अन्य हिस्सों के संदर्भ हैं।

बेदिउज्जमान ने तुर्की संस्करण में अन्य अंश जोड़े, जो उनके विभिन्न कार्यों से लिए गए थे, जो उनके उपदेश के मुख्य विषय के पहलुओं को दर्शाते हैं, कि न केवल मुसलमान, बल्कि सभी मानव जाति, अपने सामाजिक और राजनीतिक जीवन में कुरान के सिद्धांतों को लागू करने के माध्यम से ही खुशी और मुक्ति पा सकती है। पाठकों के लिए यह ध्यान रखना भी उपयोगी होगा कि बेदिउज्जमान ने इस उपलब्धि को राजनीतिक गतिविधि के परिणामस्वरूप नहीं, बल्कि विश्वास की सच्चाइयों पर कुरान की शिक्षाओं के उपचारात्मक प्रकाश के प्रसार - रिसाले-ए नूर में उदाहरणित - और उनकी स्वीकृति के माध्यम से देखा।

मूल अरबी 'दमिश्क उपदेश' के तुर्की अनुवाद का परिचय

उसके नाम में उसकी महिमा हो!
और ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी स्तुति से महिमा न करे।

आप पर शांति बनी रहे तथा ईश्वर की दया एवं आशीर्वाद सदैव बना रहे!

मेरे प्रिय, वफादार भाइयो!

[भविष्य की एक झलक के साथ, बूढ़े सईद ने इस अरबी धर्मोपदेश में व्यक्त सत्य को समझा, जिसे उन्होंने दमिश्क के धार्मिक अधिकारियों के आग्रह पर चालीस साल पहले उमय्यद मस्जिद में लगभग दस हज़ार लोगों की एक सभा के समक्ष प्रस्तुत किया था, जिसमें सौ धार्मिक विद्वान शामिल थे; उन्होंने उन सत्यों की खबर पूरी निश्चितता के साथ दी थी जैसे कि वे जल्द ही साकार होने वाले थे। हालाँकि, दो विश्व युद्धों और पच्चीस वर्षों की निरंकुश तानाशाही ने उनके साकार होने में देरी की; अब इसके संकेत, जिनकी उस समय भविष्यवाणी की गई थी, इस्लाम की दुनिया में दिखाई देने लगे हैं। इसलिए, यदि आप इसे उचित समझते हैं, तो आप इस सबसे महत्वपूर्ण और शिक्षाप्रद लेख का अनुवाद प्रकाशित कर सकते हैं, न कि एक पुराने, अप्रचलित के रूप में

धर्मोपदेश के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक और इस्लामी प्रश्नों पर ताजा और सही निर्देश के रूप में, 1327 के बजाय 1371 में, उमय्यद मस्जिद के बजाय इस्लामी दुनिया की मस्जिद में तीन सौ सत्तर (अब दस लाख से अधिक) मिलियन लोगों की सभा को सीधे संबोधित करते हुए।]

यहाँ एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न का सबसे महत्वपूर्ण उत्तर लिखना उचित है। क्योंकि पुराने सईद ने चालीस साल पहले के उस पाठ में भविष्यवाणी की थी जैसे कि वह रिसाले-ए-नूर की अद्भुत शिक्षाओं और उसके प्रभावों को देख रहे हों। यही कारण है कि मैं यहाँ वह प्रश्न और उत्तर लिख रहा हूँ। यह इस प्रकार है: कई लोगों ने मुझसे और रिसाले-ए-नूर के छात्रों से पूछा है: "ऐसा क्यों है कि इतने विरोध और इतने सारे जिद्दी दार्शनिकों और गुमराह लोगों के सामने रिसाले-ए-नूर पराजित नहीं हुआ? विश्वास और इस्लाम पर कई मूल्यवान और सच्ची किताबों के प्रसार को एक हद तक रोककर और अपने सांसारिक सुखों और बुराइयों के माध्यम से,

उन्होंने कई युवाओं और अन्य लोगों को विश्वास की सच्चाईयों से वंचित कर दिया है। लेकिन उनके सबसे हिंसक हमले, क्रूर व्यवहार, झूठ और

रिसाले-ए-नूर को नष्ट करने, लोगों को इससे दूर भगाने और इसे छोड़ने के लिए दुष्प्रचार किया गया है। इसके बावजूद, रिसाले-ए-नूर ने इस तरह से प्रचार किया है जैसा किसी और किताब में नहीं देखा गया, इसके ग्रंथों की छह लाख प्रतियाँ हाथ से अथक उत्साह के साथ लिखी गईं और गुप्त रूप से प्रकाशित की गईं। ऐसा कैसे है कि इसे देश और विदेश दोनों में इतने उत्साह के साथ पढ़ा जाता है? इसका क्या कारण है? इस तरह के कई सवालों के जवाब में, हम कहते हैं: अपने चमत्कारों के रहस्य के माध्यम से सर्वज्ञ कुरान पर एक सच्ची टिप्पणी होने के नाते, रिसाले-ए-नूर दर्शाता है कि गुमराही में एक तरह का नरक है

यह दुनिया, विश्वास में एक प्रकार का स्वर्ग है। यह पापों, बुरे कर्मों और निषिद्ध सुखों में होने वाले कष्टों को इंगित करता है, और सिद्ध करता है कि अच्छे कर्मों और सद्गुणों तथा शरीयत की सच्चाइयों में स्वर्ग के सुखों जैसे सुख पाए जाते हैं। इस तरह यह उन समझदार लोगों को बचाता है जो दुर्गुणों और गुमराही में पड़ गए हैं। क्योंकि इस समय दो भयानक स्थितियाँ हैं: पहली: चूँकि मनुष्य की भावनाएँ, जो चीज़ों के परिणामों के प्रति अंधी हैं और भविष्य के ढेरों सुखों की अपेक्षा वर्तमान सुख के एक औंस को अधिक पसंद करती हैं, उसके मन और तर्क पर हावी हो गई हैं, इसलिए दुर्गुणों से भटके हुए लोगों को बचाने का एकमात्र तरीका उन्हें उनके सुख में मौजूद दर्द दिखाना और उनकी भावनाओं को हराना है। हालाँकि वे हीरे जैसी कृपाओं और सुखों से अवगत हैं

परलोक के बारे में, जैसा कि आयत 'वे इस दुनिया की ज़िंदगी को प्यारा समझते हैं' से संकेत मिलता है, ईमान वाले होते हुए भी गुमराह लोग सांसारिक सुखों को चुनते हैं, जो कांच के टुकड़ों की तरह हैं जो जल्द ही टूट जाएँगे। उन्हें इस दुनिया की मोहब्बत से और इसके शिकार होने के ख़तरे से बचाने का एक ही तरीक़ा है कि उन्हें इस दुनिया में भी नर्क जैसी यातनाएँ और दर्द दिखाए जाएँ जो वे भुगत रहे हैं। रिसाले-ए-नूर इसी तरीक़े को अपनाता है। क्योंकि इस समय, पूर्ण अविश्वास से पैदा हुई हठधर्मिता और विज्ञान से पैदा हुई बुराई और गुमराही के नशे के कारण, शायद दस या बीस में से कोई एक ही नर्क और उसकी यातनाओं के अस्तित्व को साबित करके, सर्वशक्तिमान ईश्वर के बारे में बताकर अपने बुरे तरीक़ों को छोड़ने के लिए प्रेरित हो सकता है। यह सुनकर, ऐसे लोग संभवतः कहेंगे: "ईश्वर क्षमाशील और दयालु है, और नर्क बहुत दूर है," और अपने व्यसन में लगे रहेंगे। उनके दिल और आत्मा उनकी भावनाओं से अभिभूत हैं।

इस प्रकार, अपनी अधिकांश तुलनाओं के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि

---

1. कुरान, 14:3.

इस अविश्वास और गुमराही की दुनिया में गंभीर और भयानक परिणाम देखने को मिलते हैं, रिसाले-ए-नूर सबसे जिद्दी और घमंडी लोगों को भी उन अशुभ, अवैध सुखों से घृणा महसूस कराता है, जिससे वे पश्चाताप करते हैं। छठे, सातवें और आठवें वचन में संक्षिप्त तुलना, और बत्तीसवें वचन में तीसरे पड़ाव में लंबी तुलना व्यक्ति को उसके द्वारा अपनाए गए मार्ग की बुराई और गुमराही से घृणा महसूस कराती है, और उसे जो सिखाया जाता है उसे स्वीकार करने के लिए प्रेरित करती है। एक उदाहरण के रूप में, मैं कल्पना की यात्रा पर मेरे द्वारा देखी गई स्थितियों का संक्षेप में वर्णन करूँगा, जो वास्तव में वास्तविकता थीं। जो लोग अधिक विस्तृत विवरण चाहते हैं, वे सिक्के-ए तस्दीक-ए-ग़ैबी (अनदेखे संग्रह की पुष्टि करने वाली मुहर) के अंत को देख सकते हैं।

जब कल्पना की उस यात्रा पर मैंने भौतिकवादी दर्शन और गुमराह और असावधान लोगों की आँखों से पशु जगत को देखा, तो जानवरों की अनगिनत ज़रूरतें और उनकी भयानक भूख, साथ ही उनकी कमज़ोरी और नपुंसकता मुझे बहुत ही दयनीय और दुःखद लगी। मैं चिल्ला उठा। फिर मैंने कुरान की बुद्धि और विश्वास की दूरबीन से देखा कि दयालु ईश्वर का नाम प्रदाता के चिह्न में चमकते सूरज की तरह उदय हुआ है; उसने अपनी दया के प्रकाश से उस भूखे, दुखी पशु जगत को चमकाया।

फिर मैंने जानवरों की दुनिया में एक और दुखद दुनिया देखी जो अंधकार में लिपटी हुई थी और किसी को भी दया आ सकती थी जिसमें युवा अपनी ज़रूरत और शक्तिहीनता में संघर्ष कर रहे थे। मुझे खेद था कि मैंने गुमराह लोगों की आँखों से देखा था। अचानक, विश्वास ने मुझे दूसरे चश्मे दिए और मैंने दया के संकेत में सर्व-दयालु का नाम देखा; इसने उस दयनीय दुनिया को खुशी और सुंदर तरीके से बदल दिया और रोशन कर दिया, मेरी शिकायत और दुख के आँसुओं को खुशी और धन्यवाद के आँसुओं में बदल दिया।

फिर मानवता की दुनिया मुझे सिनेमा के पर्दे पर दिखाई दी। मैंने गुमराह लोगों की दूरबीन से देखा और उस दुनिया को इतना अंधकारमय और भयानक पाया कि मैं अपने दिल की गहराई से चिल्ला उठा। "हाय!" मैंने रोते हुए कहा। क्योंकि उनकी इच्छाएँ और उम्मीदें अनंत काल तक फैली हुई थीं, विचार और कल्पनाएँ जो ब्रह्मांड को गले लगाती थीं, अनंत सुख और स्वर्ग की सच्ची इच्छा, एक जन्मजात क्षमता और शक्तियाँ जिस पर कोई सीमा नहीं लगाई गई थी और जो मुफ़्त थीं, फिर भी उनकी असंख्य ज़रूरतों और उनकी कमज़ोरियों और नपुंसकता के बावजूद वे

असंख्य शत्रुओं के आक्रमणों और असंख्य विपत्तियों के आघातों का सामना करना पड़ा।
मौत के निरंतर खतरे के बीच, उन्होंने अपना संक्षिप्त और उथल-पुथल भरा जीवन दयनीय परिस्थितियों में बिताया। हमेशा कब्र की ओर देखते हुए, जो गुमराह लोगों के लिए अनंत अंधकार का द्वार है, उन्होंने लगातार मौत और अलगाव के प्रहार सहे, जो दिल और विवेक के लिए सबसे दर्दनाक स्थिति थी। मैंने देखा कि अकेले और समूहों में उन्हें उस काले कुएं में फेंका जा रहा था।

मानवता की दुनिया को इस अंधकार में देखकर मैं अपने हृदय, आत्मा, मन और अपनी सभी सूक्ष्म आंतरिक शक्तियों, बल्कि अपने अस्तित्व के सभी कणों से चिल्लाने ही वाला था, जब कुरान से निकलने वाले विश्वास की रोशनी और शक्ति ने उन गुमराही के चश्मों को चकनाचूर कर दिया और मुझे अंतर्दृष्टि प्रदान की। मैंने देखा कि न्यायी का दिव्य नाम सूर्य की तरह सर्वज्ञ के चिह्न में उदय हो रहा है, दयालु का नाम दानशील के चिह्न में उदय हो रहा है, दयालु का नाम क्षमाशील के चिह्न में उदय हो रहा है, पुनरुत्थानकर्ता का नाम उत्तराधिकारी के चिह्न में उदय हो रहा है, जीवनदाता का नाम उदार के चिह्न में उदय हो रहा है, और पालनहार का नाम स्वामी के चिह्न में उदय हो रहा है। उन्होंने मानवता की पूरी दुनिया और उसके भीतर की सभी दुनियाओं को प्रकाशित कर दिया।

उन्होंने उन नरक जैसी स्थितियों को दूर कर दिया, और खिड़कियां खोल दीं

परलोक की चमकदार दुनियाएँ, और मानवता की दुनिया पर बिखरी हुई रोशनी। मैंने घोषणा की: "अस्तित्व में मौजूद कणों की संख्या के लिए ईश्वर की स्तुति और धन्यवाद हो!" मुझे पूरी तरह से यकीन हो गया कि विश्वास में इस दुनिया में भी एक तरह का स्वर्ग है और गुमराही में एक तरह का नर्क।
फिर धरती की दुनिया दिखाई दी। कल्पना की उस यात्रा पर, धर्म का पालन न करने वाले दर्शन के अंधकारमय, काल्पनिक नियमों ने एक भयावह दुनिया का चित्रण किया। बूढ़ी धरती के जहाज पर अंतरिक्ष में यात्रा करते हुए - जो एक वर्ष में पच्चीस हजार साल की दूरी तोप के गोले से सत्तर गुना तेज चलती है, हमेशा टूटने के लिए तैयार रहती है, जिसका आंतरिक भाग उथल-पुथल की स्थिति में रहता है - मुझे एक उजाड़ अंधेरे में दयनीय मानव जाति की स्थिति दिखाई दी।

मेरी आँखों के सामने अंधेरा छा गया। मैंने दर्शनशास्त्र के चश्मे को जमीन पर पटक दिया, उन्हें तोड़ दिया। फिर मैंने कुरान और ईमान की बुद्धि से प्रकाशित आँखों से देखा, और मैंने देखा कि आकाश और पृथ्वी के निर्माता, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, पालनकर्ता, अल्लाह, आकाश और पृथ्वी के पालनकर्ता, सूर्य और चंद्रमा के वश में करने वाले के नाम दया, प्रचंडता और प्रभुत्व के चिह्नों के साथ सूर्य की तरह उग आए थे। उन्होंने उस अंधेरे, उजाड़ और भयावह दुनिया को इस तरह से रोशन कर दिया कि वह दुनिया मेरी आस्था की आँखों को एक बहुत ही सुव्यवस्थित, वश में, सुखद और सुरक्षित जहाज, या हवाई जहाज या ट्रेन की तरह दिखाई दी। इसमें सभी के लिए भोजन था, और इसे व्यापार और आनंद के लिए और सूर्य के चारों ओर के प्रभु क्षेत्रों में आत्माओं के साथ प्राणियों को ले जाने के लिए सजाया गया था। मैंने कहा: "विश्वास की उदारता के लिए पृथ्वी के कणों की संख्या तक ईश्वर की सभी प्रशंसा हो।"

रिसाले-ए-नूर में अनेक तुलनाओं से यह सिद्ध हो चुका है कि जो लोग पाप और पथभ्रष्टता का अनुसरण करते हैं, उन्हें इस संसार में भी नारकीय यातना भोगनी पड़ती है, जबकि

ईमान की अभिव्यक्तियाँ, ईमानवाले और धर्मी लोग इस्लाम और मानवता के पेट के माध्यम से जन्नत के सुखों का स्वाद चख सकते हैं। वे अपने ईमान की मात्रा के अनुसार लाभ उठा सकते हैं।
लेकिन इस तूफ़ानी दौर में ऐसी धाराएँ जो इंद्रियों को सुन्न कर देती हैं और मनुष्य का ध्यान परिधीय विषयों पर बिखेर देती हैं, उसे उनमें डुबो देती हैं, उसकी इंद्रियों को सुन्न कर देती हैं और उसे भ्रमित कर देती हैं। इसके परिणामस्वरूप गुमराह लोग अस्थायी रूप से अपनी पीड़ा को महसूस करने में असमर्थ हो जाते हैं, जबकि मार्गदर्शन करने वाले लोग असावधानी से अभिभूत हो जाते हैं और उसके सुखों की सही तरह से सराहना नहीं कर पाते।
इस युग की दूसरी विस्मयकारी स्थिति: वर्तमान की तुलना में पुराने समय में

बहुत कम पूर्ण अविश्वास था, या विज्ञान से उत्पन्न गुमराही, या विकृत हठ से उत्पन्न अविश्वास। इसलिए उस समय के इस्लामी विद्वानों की शिक्षा और उनके तर्क पर्याप्त थे, जो संदेह से उत्पन्न किसी भी अविश्वास को तुरंत दूर कर देते थे। ईश्वर में विश्वास आम था, और वे अधिकांश लोगों को ईश्वर के बारे में सिखाकर और उन्हें नरक की आग की याद दिलाकर उनके गुमराह होने और गलत कामों को छोड़ने के लिए राजी कर सकते थे। लेकिन अब एक छोटे से शहर में सौ पूर्ण अविश्वासी हैं, जबकि पूरे देश में शायद एक ही हो।

जो लोग विज्ञान और ज्ञान के कारण अपने मार्ग से भटक जाते हैं और हठपूर्वक ईमान की सच्चाइयों का विरोध करते हैं, उनकी संख्या पहले के समय की तुलना में सौ गुना बढ़ गई है। फिरौन के समान अहंकार और अपनी भयंकर गुमराही के साथ ये हठीले इनकार करने वाले ईमान की सच्चाइयों का विरोध करते हैं। इसलिए एक पवित्र सत्य की बहुत आवश्यकता है जो इस दुनिया में उनके अविश्वास के आधारों को परमाणु बम की तरह पूरी तरह नष्ट कर दे, और उनके आक्रमण को रोक दे और उनमें से कुछ को ईमान की ओर ले आए।

सर्वशक्तिमान ईश्वर की स्तुति हो, जो अपनी अनेक तुलनाओं के साथ, इस घाव के लिए उत्तम उपचार है।

समय के साथ, रिसाले-ए-नूर - कुरान की चमत्कारिक व्याख्या का एक चमत्कार जो इसके तेज से आगे बढ़ता है - ने कुरान की हीरे की तलवार से उन सबसे बुरे इनकार करने वालों को भी परास्त कर दिया है। ब्रह्मांड के परमाणुओं की संख्या के लिए इसके प्रमाण और तर्क ईश्वरीय एकता और विश्वास की सच्चाइयों को प्रदर्शित करते हैं, जो दिखाते हैं कि पच्चीस वर्षों में यह सबसे गंभीर हमलों के सामने पराजित नहीं हुआ है, बल्कि खुद ही प्रबल हुआ है और विजयी हुआ है। हाँ, विश्वास और अविश्वास, और मार्गदर्शन और गुमराही की अपनी तुलनाओं के साथ, रिसाले-ए-नूर उन सत्यों को स्वयं-साक्ष्य साबित करता है। यदि उदाहरण के लिए बाईसवें शब्द के दूसरे पड़ाव, बत्तीसवें शब्द के प्रथम पड़ाव, तैंतीसवें अक्षर के 'विंडोज', तथा असा-यी मूसा (मूसा का कर्मचारी) के ग्यारह प्रमाणों और प्रमाणों पर ध्यान दिया जाए, तो यह समझा जा सकता है कि यह रिसाले-ए-नूर में प्रकट कुरान की सच्चाईयां हैं जो इस समय पूर्ण अविश्वास और विकृत गुमराही को चूर-चूर कर देंगी। जिस तरह से धर्म के महानतम रहस्यों और दुनिया के निर्माण की पहेलियों को सुलझाने वाले रिसाले-ए-नूर के हिस्सों को तिलसिमलर मेकमुआसी ('रहस्यों' का संग्रह) में एक साथ एकत्र किया गया है, वे टुकड़े जो गुमराह लोगों के इस दुनिया में नरक और मार्गदर्शन करने वालों के स्वर्ग जैसे सुखों का वर्णन करते हैं और दिखाते हैं कि विश्वास स्वर्ग के बीज की तरह है जबकि अविश्वास स्वर्ग का बीज है। यदि ईश्वर की इच्छा हुई तो नरक का जक्कुम वृक्ष नामक पुस्तक को एक छोटे संग्रह में एकत्रित कर प्रकाशित किया जाएगा।

एस सहायता एन भालू

दमिश्क धर्मोपदेश

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

हम भी वही प्रशंसा, धन्यवाद और उपहार अर्पित करते हैं जो सभी सजीव प्राणी अपनी जीभों और जीवन के माध्यम से अपने रचयिता, उस अनिवार्यतः विद्यमान परमेश्वर को अर्पित करते हैं, जिसने कहा है: ईश्वर की दया से निराश मत हो।[1]

और हमारे पैगम्बर मुहम्मद पर अनंत आशीर्वाद और शांति हो, जो ईश्वर के चुने हुए हैं (जिन पर आशीर्वाद और शांति हो), जिन्होंने कहा: "मैं पूर्ण नैतिकता तक पहुँच गया हूँ।"[2]

अर्थात्, “सर्वशक्तिमान परमेश्वर द्वारा मानवजाति के पास मुझे भेजे जाने का एक महत्वपूर्ण कारण अच्छा आचरण और नैतिकता पूर्ण करना, और मानवजाति को अनैतिकता और बुराई से मुक्ति दिलाना था।”

____

1. कुरान, 39:53.
2. 'अजलुनी, कशफ अल-खफा, आई, 211।

ईश्वर की स्तुति करने और उसके रसूल के लिए उसकी दुआ मांगने के बाद, मैं यह कहता हूँ: ऐ मेरे अरब भाईयों जो यहाँ उमय्यद मस्जिद में सुन रहे हैं! मैं इस मिम्बर पर, जो मेरे पद से बहुत ऊपर है, इसलिए नहीं चढ़ा हूँ कि मैं तुम्हें मार्गदर्शन दूँ, क्योंकि तुम्हें शिक्षा देना मेरे अधिकार से बाहर है। मैं इस सभा के सामने एक बच्चे की तरह हूँ, जिसमें करीब सौ धार्मिक विद्वान हैं, जो सुबह स्कूल जाता है और अपना पाठ सीखता है, फिर शाम को वापस आकर अपने पिता को दोहराता है। उसका पिता देखता है कि बच्चे ने जो सीखा है वह सही है या नहीं, और बच्चा या तो उससे स्वीकृति या मार्गदर्शन की प्रतीक्षा करता है। हाँ, हम तुम्हारे सामने बच्चों की तरह हैं, और हम तुम्हारे छात्र हैं। तुम हमारे गुरु हो, और अन्य मुस्लिम राष्ट्रों के गुरु हो। इसलिए मैं अपने गुरुओं, तुम्हें, जो पाठ मैंने सीखा है उसका कुछ हिस्सा दोहराऊँगा। यह इस प्रकार है: इन देशों में वर्तमान समय की परिस्थितियों में, मैंने मानव जाति के सामाजिक जीवन के स्कूल में एक सबक सीखा है और मैंने महसूस किया है कि विदेशियों, यूरोपीय लोगों को प्रगति के रास्ते पर भविष्य की ओर उड़ान भरने की अनुमति दी गई है, जबकि इसने हमें मध्य युग में भौतिक विकास के मामले में रोके रखा है और रोके रखा है, वे छह भयंकर बीमारियाँ हैं। बीमारियाँ ये हैं: पहली: सामाजिक जीवन में निराशा और आशाहीनता की ओर बढ़ना।

दूसरा: सामाजिक और राजनीतिक जीवन में सत्यनिष्ठा की मृत्यु।

तीसरा: शत्रुता का प्रेम।

चौथा: उन प्रकाशमान बन्धनों को न जानना जो विश्वासियों को एक दूसरे से बांधते हैं।

पांचवीं बात: निरंकुशता, जो फैलती है, व्यापक होती जाती है जैसे कि वह विभिन्न संक्रामक रोग हों।

छठा: अपने प्रयासों को केवल व्यक्तिगत लाभ तक सीमित रखना।
मैं छह 'शब्दों' के माध्यम से उस सबक को समझाऊंगा जो मैंने कुरान की फार्मेसी से सीखा है, जो दवा की तरह है। यह सबक हमारे सामाजिक जीवन को उन छह भयानक बीमारियों से ठीक करने की दवा है।

पहला शब्द

पहला शब्द है 'आशा'; यानी ईश्वर की दया की प्रबल आशा को पोषित करना। मैंने जो सबक खुद सीखा है, उसके परिणामस्वरूप मैं कहता हूँ: ऐ मुसलमानों की जमात! मैं तुम्हें यह खुशखबरी देता हूँ: अरब की खुशी की सच्ची सुबह के पहले संकेत अभी-अभी दिखाई दे रहे हैं। यह खुशी सभी मुसलमानों, खास तौर पर ओटोमन्स की सांसारिक खुशी को जगाने और खास तौर पर इस्लाम की प्रगति के ज़रिए होगी। खुशी के सूरज का उदय करीब आ गया है। निराशा की नाक धूल में मिलाने के लिए, मैं अपनी दृढ़ धारणा के अनुसार कहता हूँ

दुनिया सुनेगी: भविष्य इस्लाम का होगा और

सिर्फ़ इस्लाम का। और इसका शासक कुरान और ईमान की सच्चाईयाँ होंगी। इसलिए, हमें ईश्वरीय निर्णय और अपने वर्तमान भाग्य के आगे झुकना चाहिए, क्योंकि हमारा भविष्य एक है।

उज्ज्वल भविष्य, जबकि

____

3. ओल्ड सईद ने घटना की पूर्वसूचना के माध्यम से पैंतालीस साल पहले 1371/1951 में घटित हुई घटनाओं की खबर दी थी, अर्थात इस्लामी दुनिया और सबसे महत्वपूर्ण अरबी राज्य विदेशी शक्तियों और उनकी निरंकुशता की अधीनता से मुक्त हो जाएंगे और इस्लामी राज्य बनेंगे। उन्होंने दो विश्व युद्धों और तीस से चालीस साल की निरंकुश निरंकुशता के बारे में नहीं सोचा था। उन्होंने 1371/1951 में वास्तव में जो हुआ उसकी खुशखबरी इस तरह दी जैसे कि यह 1327/1909 में घटित होगी। उन्होंने देरी के कारणों पर ध्यान नहीं दिया।

यूरोपियनों का अतीत संदिग्ध है। अब मैं डेढ़ प्रारंभिक तर्कों का उल्लेख करूँगा। मैं उन तर्कों के आधार से शुरू करता हूँ: इस्लाम और इसकी सच्चाइयों में भौतिक रूप से और नैतिक और अभौतिक दोनों मामलों में प्रगति करने की पूर्ण क्षमता है।

नैतिक और अभौतिक मामलों में प्रगति, जो पहला पहलू है

तुम्हें पता होना चाहिए कि इतिहास, जो वास्तविक घटनाओं को दर्ज करता है, सत्य का सबसे विश्वसनीय गवाह है। देखो! इतिहास हमें दिखा रहा है। रूस को हराने वाले जापानी कमांडर-इन-चीफ की इस्लाम की वैधता और न्याय के बारे में गवाही यह है: "इतिहास से पता चलता है कि मुसलमानों ने इस्लाम की सच्चाईयों की शक्ति के अनुसार सभ्यता में वृद्धि की और
प्रगति की; यानी, जिस हद तक उन्होंने उस शक्ति के अनुसार काम किया। इतिहास यह भी दिखाता है कि इस्लाम की सच्चाईयों पर कायम रहने में उनकी कमज़ोरी की हद तक वे बर्बरता और पतन, और विनाश और घोर भ्रम के बीच हार में गिर गए।" जहाँ तक दूसरे धर्मों का सवाल है, तो यह बिलकुल इसके विपरीत है। यानी, इतिहास दिखाता है कि वे अपने धर्मों और कट्टरता पर कायम रहने में अपनी कमज़ोरी की हद तक सभ्यता में वृद्धि और प्रगति की, और उन पर कायम रहने में अपनी मज़बूती की हद तक पतन और क्रांति के अधीन थे। आज तक, समय इसी तरह बीतता रहा है।

इसके अलावा, पैगंबर (PBUH) के मुबारक समय से लेकर आज तक, इतिहास में एक भी घटना हमें किसी मुसलमान को नहीं दिखाती है जिसने तर्क और निर्णायक सबूत के परिणामस्वरूप इस्लाम को प्राथमिकता देते हुए किसी अन्य धर्म को अपनाया हो, चाहे वह पुराना हो या नया।

अशिक्षित लोग बिना किसी सबूत के अंधानुकरण करके किसी दूसरे धर्म को अपना लेते हैं, इसका इस मामले से कोई लेना-देना नहीं है। और धर्म के बिना रहना एक और सवाल है। हालाँकि, इतिहास हमें दिखाता है कि दूसरे धर्मों के अनुयायी, यहाँ तक कि अंग्रेज़ और क्रांति-पूर्व रूसी, जिन्होंने धर्म में सबसे ज़्यादा कट्टरता दिखाई, धीरे-धीरे तर्क और ठोस सबूतों के बल पर, कभी-कभी समूहों में, इस्लाम के करीब पहुँच रहे हैं और उसमें प्रवेश कर रहे हैं।4

यदि हम अपने कार्यों के माध्यम से इस्लाम की नैतिकता की पूर्णता और विश्वास की सच्चाई को प्रदर्शित करें, तो निस्संदेह अन्य धर्मों के अनुयायी पूरे समुदायों के साथ इस्लाम में प्रवेश करेंगे; यहां तक कि कुछ पूरे क्षेत्र और राज्य भी इस्लाम में शरण लेंगे।

इसके अलावा, विशेष रूप से आधुनिक विज्ञान के कारण मनुष्य जागृत और उत्साहित हुआ है; उसने मानवता के वास्तविक स्वरूप को समझ लिया है।
बिना किसी संदेह के, मनुष्य धर्म के बिना, लक्ष्यहीन होकर नहीं रह सकता। वह नहीं रह सकता। सबसे अधार्मिक व्यक्ति भी धर्म की शरण लेने के लिए बाध्य है। असंख्य विपत्तियों और बाहरी तथा आंतरिक शत्रुओं के सामने शक्तिहीन मनुष्य के लिए एकमात्र सहारा धर्म ही है।

उसे पीड़ा पहुँचाने वाली यह बीमारी एकमात्र ऐसी जगह है जहाँ से वह संकट के समय मदद और सहायता माँग सकता है।

____

4. इस दावे के सबूत और इसके शक्तिशाली गवाह निम्नलिखित तथ्य हैं; कि इस दावे के किए जाने के पैंतालीस साल बाद, दो भयानक विश्व युद्धों और एक चरम और निरंकुश तानाशाही के उभरने के बावजूद, स्वीडन, नॉर्वे और फिनलैंड जैसे छोटे उत्तरी राज्यों ने साम्यवाद और अधर्म के लिए एक बाधा के रूप में कुरान को स्वीकार किया और अपने स्कूलों में पढ़ाना शुरू कर दिया है। कई प्रमुख अंग्रेजी वक्ता भी अंग्रेजों को कुरान स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करने के पक्ष में देखे जाते हैं। और अमेरिका, जो अब पृथ्वी पर सबसे शक्तिशाली राज्य है, अपनी पूरी ताकत से धर्म की सच्चाई का समर्थन करता हुआ देखा जाता है, और उसने फैसला किया है कि एशिया और अफ्रीका इस्लाम के माध्यम से समृद्धि, शांति और मेल-मिलाप पाएंगे, और यह नए उभरते मुस्लिम राज्यों को संरक्षण और प्रोत्साहन देता है और उनके साथ गठबंधन करने की कोशिश करता है।

वह अपनी असंख्य आवश्यकताओं से ग्रस्त है, तथा अपनी अनंत इच्छाओं को, जो उसकी घोर अभाव और दरिद्रता के बावजूद अनंत काल तक फैली हुई हैं, संसार के रचयिता को पहचानने, विश्वास करने, तथा परलोक में विश्वास करने और उसे स्वीकार करने में ही है। इसके अलावा जागृत मानवजाति के लिए कोई सहायता नहीं है।

यदि सच्चे धर्म का रत्न हृदय रूपी खोल में विद्यमान नहीं है, तो भौतिक, नैतिक और आध्यात्मिक
मानवता पर अकल्पनीय परिमाण की विपत्तियाँ टूट पड़ेंगी और मनुष्य सबसे अधिक दुखी, सबसे दयनीय प्राणी बन जाएगा।

संक्षेप में: इस शताब्दी में मनुष्य युद्ध, विज्ञान और भयावह घटनाओं की चेतावनियों से जागृत हो चुका है, और उसने मानवता की वास्तविक प्रकृति और अपने व्यापक स्वभाव को समझ लिया है।
मनुष्य ने यह समझना शुरू कर दिया है कि अपनी अद्भुत व्यापक क्षमताओं और स्वभाव के साथ, वह केवल इस संक्षिप्त और कष्टकारी सांसारिक जीवन के लिए नहीं बनाया गया था, बल्कि वह अनंत काल के लिए एक उम्मीदवार है, क्योंकि उसके भीतर ऐसी इच्छाएँ हैं जो उस दूर तक फैली हुई हैं। हर कोई यह महसूस करने लगा है कि यह संकीर्ण और क्षणभंगुर दुनिया पर्याप्त नहीं है और उनकी असीम आशाओं और इच्छाओं को पूरा नहीं कर सकती है।

यदि कल्पना से, जो मानवता की शक्तियों और सेवकों में से एक है, कहा जाए कि, "तुम संसार पर शासन करोगे और दस लाख वर्षों तक जीवित रहोगे, किन्तु अंत में तुम अस्तित्वहीन हो जाओगे और तुम्हारे लिए जीवन में वापस आने की कोई सम्भावना नहीं रहेगी," तो निश्चय ही, जिसने अपनी सच्ची मानवता नहीं खोई है और जो जागृत हो चुका है, उसकी कल्पना, आनन्दित और प्रसन्न होने के स्थान पर, शाश्वत सुख न होने पर लालसापूर्वक, आहें भरते हुए और खेद व्यक्त करते हुए रोएगी।

इस प्रकार, इस बिंदु में यह तथ्य शामिल है कि हर किसी के दिल में खोज करने की प्रवृत्ति उभरी है

सच्चे धर्म के लिए पूरी लगन से प्रयास करें। मृत्युदंड की सजा के सामने, किसी भी चीज़ से पहले मनुष्य सत्य की खोज कर रहा है, जो केवल सच्चे धर्म में निहित है, ताकि वह खुद को बचा सके। दुनिया की वर्तमान स्थिति इस तथ्य की गवाही देती है।

पैंतालीस साल बाद और अधर्म के उदय के बाद, धरती पर क्षेत्रों और राज्यों ने, एक इंसान की तरह, मानव जाति की इस तीव्र आवश्यकता को समझना शुरू कर दिया है। इसके अलावा, उनके आरंभ और अंत में, कुरान की आयतें मनुष्य को उसकी बुद्धि का संदर्भ देते हुए कहती हैं: "अपनी बुद्धि का उपयोग करो! सोचो!

अपने मन और हृदय से परामर्श करो! उनसे परामर्श करो ताकि तुम इस तथ्य को जान सको!”
ऐसी आयतों की शुरुआत और अंत पर गौर करें; वे कहते हैं: "तुम क्यों नहीं देखते? तुम क्यों चेतावनी नहीं लेते? देखो ताकि तुम सच्चाई जान सको।" "जानें!" का इस्तेमाल करने के तरीके पर ध्यान दें। कई आयतों में ऐसे वाक्य हैं जिनका अर्थ है: "लोग क्यों नहीं जानते, वे क्यों जटिल अज्ञानता में पड़ जाते हैं? वे क्यों नहीं देखते? क्या वे अंधे हो गए हैं ताकि वे समझ सकें कि वे क्या कर रहे हैं?

वे सत्य को नहीं देख सकते? मनुष्य अपने जीवन और संसार की घटनाओं पर मनन और विचार क्यों नहीं करते, ताकि वे सीधा मार्ग पा सकें? वे मन से क्यों नहीं सोचते, विचार-विमर्श और तर्क करते हैं, और इस तरह गुमराह हो जाते हैं? हे मनुष्यों! शिक्षा लो! पिछले युगों से चेतावनी लो और भविष्य की नैतिक और आध्यात्मिक आपदाओं से बचने का प्रयास करो!" ये आयतें मनुष्य को उसकी बुद्धि का संदर्भ देती हैं; वे उसे अपने तर्क से परामर्श करने का आदेश देते हैं।

ऐ मेरे भाईयो इस उमय्यद मस्जिद में और साथ ही इस्लाम की दुनिया की विशाल मस्जिद में! तुम भी चेतावनी लो। पिछले पैंतालीस सालों की भयानक घटनाओं से चेतावनी लो।
हे बुद्धिमानों, विचारशीलों और अपने को प्रबुद्ध मानने वालों, अपने होश में आओ!

निष्कर्ष: हम मुसलमान, जो कुरान के विद्यार्थी हैं, प्रमाण का अनुसरण करते हैं; हम विश्वास की सच्चाई को तर्क, विचार और अपने दिलों के माध्यम से प्राप्त करते हैं। हम अन्य धर्मों के कुछ अनुयायियों की तरह अंध आज्ञाकारिता और पादरी की नकल के पक्ष में प्रमाण को नहीं छोड़ते। इसलिए, भविष्य में जब तर्क, विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रबल होगी, तो निश्चित रूप से वह समय होगा जब कुरान प्रभुत्व प्राप्त करेगा, जो तर्कसंगत प्रमाणों पर निर्भर करता है और अपने कथनों की पुष्टि के लिए तर्क को आमंत्रित करता है।

इसके अलावा, इस्लाम के सूरज को ढकने वाले, उसके उदय में बाधा डालने वाले और उसे मानवता को प्रकाशित करने से रोकने वाले पर्दे हटने लगे हैं। जो चीजें उसे रोक रही थीं, वे पीछे हटने लगी हैं। भोर के संकेत पैंतालीस साल पहले दिखाई दिए थे।5 फिर सच्चा भोर 1371/1951 में हुआ, या टूट जाएगा। भले ही यह झूठी भोर हो, तीस या चालीस साल के समय में सच्चा भोर होगा।

आठ गंभीर बाधाओं ने इस्लाम की सच्चाइयों को अतीत पर पूरी तरह हावी होने से रोक दिया।
पहली, दूसरी और तीसरी बाधाएँ: यूरोपियनों की अज्ञानता, उस समय की उनकी बर्बरता और उनके धर्म में उनकी कट्टरता। ये तीनों बाधाएँ ज्ञान और सभ्यता के गुणों से दूर हो गई हैं और वे बिखरने लगी हैं।

चौथी और पांचवीं बाधाएँ: पादरी और धार्मिक नेताओं का वर्चस्व और मनमानी शक्ति, और यह तथ्य कि यूरोपीय लोग उनकी आज्ञा का पालन करते थे और आँख मूंदकर उनका अनुसरण करते थे। स्वतंत्रता के विचार और सत्य की खोज की इच्छा के मानव जाति में उभरने के साथ ही ये दोनों बाधाएँ भी गायब होने लगी हैं।

---

5. यानी 1906 में. [ट्र.]

छठी और सातवीं बाधाएँ: हमारे साथ जो निरंकुशता थी और शरिया के विरोध से जो हमारी पतनशीलता पैदा हुई, वे बाधाएँ थीं। यह तथ्य कि एक व्यक्ति में निहित अलग निरंकुश सत्ता अब कम हो रही है, यह दर्शाता है कि समाज में बड़े समूहों और समितियों की भयावह निरंकुशता भी तीस से चालीस साल के समय में कम हो जाएगी। और इस्लामी उत्साह में महान वृद्धि, साथ ही यह तथ्य कि अनैतिकता के भयानक परिणाम स्पष्ट हो रहे हैं, यह दर्शाता है कि ये दोनों बाधाएँ कम होने वाली हैं, वास्तव में, उन्होंने ऐसा करना शुरू कर दिया है। ईश्वर की इच्छा से, वे भविष्य में पूरी तरह से गायब हो जाएँगी।

आठवीं बाधा: चूँकि आधुनिक विज्ञान के कुछ मामलों को इस्लाम के सत्य के बाहरी अर्थों के विपरीत और विरोधी माना जाता था, इसलिए इसने अतीत में कुछ हद तक उनके प्रचलित होने में बाधा उत्पन्न की। वैज्ञानिकों और दार्शनिकों ने इस्लाम का विरोध किया क्योंकि वे इस्लाम के सत्य के बारे में नहीं जानते थे।

सत्य और, उदाहरण के लिए, आत्मा से बने दो स्वर्गदूतों की कल्पना की, जिन्हें थावर और हट कहा जाता है, जिन्हें पृथ्वी के गोले की देखरेख करने के लिए एक दिव्य आदेश के माध्यम से आरोपित किया गया है, एक महान भौतिक बैल और मछली के रूप में।

ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं। सत्य जानने के बाद, सबसे अधिक दृढ़ निश्चयी दार्शनिक भी उसके सामने झुकने को मजबूर हो जाता है। कुरान की चमत्कारिकता नामक ग्रंथ में,6

रिसाले-ए-नूर उन सभी आयतों के नीचे छिपे कुरान के चमत्कारों की झलक दिखाता है जिन पर विज्ञान हमला करता है, और यह पवित्र कुरान के उन वाक्यों और वाक्यांशों में स्पष्ट रूप से उन उच्च सत्यों को प्रस्तुत करता है, जिन तक विज्ञान का हाथ नहीं पहुंच सकता, जिन्हें वैज्ञानिक संदेह के बिंदु मानते हैं।

---

6. पच्चीसवाँ शब्द. [ट्र.]

आलोचना; यह सबसे जिद्दी दार्शनिक को भी झुकने के लिए मजबूर करती है। यह स्पष्ट और स्वतःसिद्ध है, जो कोई भी देखना चाहे, देख सकता है। -तो उन्हें देखना चाहिए और देखना चाहिए कि यह बाधा कैसे नष्ट हो रही है, जैसा कि इन शब्दों ने पैंतालीस साल पहले भविष्यवाणी की थी।

कुछ दूरदर्शी मुस्लिम विद्वानों ने इस विषय पर लिखा है। इस आठवीं गंभीर बाधा के दूर होने के संकेत दिखाई दे रहे हैं।

निश्चित रूप से, यदि अभी नहीं तो तीस-चालीस वर्षों में, विज्ञान, सत्य ज्ञान और सभ्यता के गुणों की तीन शक्तियों को पूर्ण रूप से सुसज्जित करने और उन आठ बाधाओं को दूर भगाने के लिए, सत्य, समता और मानवता के प्रेम की खोज की इच्छा को उन आठ शत्रु दस्तों के आठ मोर्चों पर भेजा जाएगा। उन्होंने उन्हें पीछे खदेड़ना शुरू कर दिया है। ईश्वर की इच्छा से, आधी सदी में वे उन्हें पूरी तरह से तितर-बितर कर देंगे।

यह सर्वविदित है कि सबसे निर्विवाद गुण वह है जिसकी गवाही उसके शत्रु भी देते हैं और पुष्टि करते हैं। इसलिए निम्नलिखित सैकड़ों में से दो उदाहरण हैं: पहला: 19वीं शताब्दी के प्रसिद्ध यूरोपीय विद्वान और दार्शनिक कार्लाइल ने दार्शनिकों और ईसाई विद्वानों के समक्ष सबसे ऊंची आवाज में निम्नलिखित
बात कहने में संकोच नहीं किया, जिसे उन्होंने अपने कार्यों में भी लिखा, कि इस्लाम एक प्रखर ज्वाला की तरह पैदा हुआ और अपने समय के धर्मों को ऐसे भस्म कर दिया मानो वे मृत लकड़ी हों। उन्होंने कहा कि ऐसा करना इस्लाम का अधिकार था, क्योंकि यह एक वास्तविकता थी, जबकि अन्य धर्मों में वास्तविकता का अभाव था। उन्होंने यह भी कहा कि सबसे पहले ध्यान देने योग्य शब्द मुहम्मद (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) के हैं, क्योंकि सच्चा शब्द उनका था। उन्होंने यह भी कहा कि यदि इस्लाम की सत्यता पर संदेह किया जाता है तो सबसे अधिक स्पष्ट मामलों पर भी संदेह किया जाना चाहिए,

क्योंकि सबसे अधिक स्पष्ट और आवश्यक सत्य इस्लाम है।7
दूसरा उदाहरण: पिछली सदी के एक प्रसिद्ध यूरोपीय जो विद्वान और दार्शनिक भी थे, प्रिंस बिस्मार्क ने कहा: "मैंने सभी प्रकट पुस्तकों का अध्ययन किया है,
लेकिन चूंकि वे भ्रष्ट हैं, इसलिए मैं मानव जाति की खुशी के लिए
जो सच्चा ज्ञान खोज रहा था, उसे पाने में असमर्थ रहा हूँ। तब मैंने देखा कि मुहम्मद का कुरान बाकी सभी पुस्तकों से कहीं बेहतर है। मैंने इसके सभी शब्दों में ज्ञान पाया। ऐसा कोई दूसरा काम नहीं है जो मनुष्य की खुशी के लिए इस तरह काम करे। ऐसा काम मनुष्य का शब्द नहीं हो सकता।

जो लोग कहते हैं कि यह मुहम्मद का काम है, वे ज्ञान की अनिवार्यताओं को नकार रहे हैं।

कुरान स्वयंसिद्ध रूप से ईश्वर का वचन है।"
इसलिए, इस तथ्य के आधार पर कि यूरोप और अमेरिका के चतुर क्षेत्रों ने कार्लाइल और बिस्मार्क जैसे प्रतिभाशाली और सटीक विद्वानों की फसलें पैदा की हैं, मैं पूरे विश्वास के साथ कहता हूं: यूरोप और अमेरिका इस्लाम से गर्भवती हैं; एक दिन वे एक इस्लामी राज्य को जन्म देंगे। ठीक उसी तरह जैसे ओटोमैन यूरोप से गर्भवती थीं और उन्होंने एक यूरोपीय राज्य को जन्म दिया।

ऐ मेरे भाईयों जो यहाँ उमय्यद मस्जिद में हैं और जो आधी सदी बाद इस्लाम की दुनिया की मस्जिद में हैं! क्या परिचयात्मक टिप्पणियाँ, यानी यहाँ तक की गई टिप्पणियाँ इस निष्कर्ष की ओर इशारा नहीं करतीं कि यह इस्लाम ही है जो भविष्य पर सच्चा और आध्यात्मिक शासक होगा, और केवल इस्लाम ही मानवता को खुशी की ओर ले जाएगा

---

7. थॉमस कार्लाइल, 1795-1880. उनकी रचना देखें, ऑन हीरोज, हीरो-वरशिप एंड द हीरोइक इन हिस्ट्री, लंदन, 1841, जो कार्लाइल द्वारा 1840 में लंदन में दिए गए छह सार्वजनिक व्याख्यानों की प्रतिलिपि है, जिनमें से दूसरे का शीर्षक था: द हीरो ऐज पैगम्बर। महोमेट: इस्लाम।

इस दुनिया में और अगली दुनिया में; और यह कि सच्चा ईसाई धर्म, अंधविश्वास और भ्रष्ट विश्वास को हटाकर, इस्लाम में परिवर्तित हो जाएगा; कुरान का पालन करते हुए, यह इस्लाम के साथ एक हो जाएगा?

दूसरा पहलू

यानी इस्लाम की भौतिक प्रगति के शक्तिशाली कारण बताते हैं कि इस्लाम भविष्य में भौतिक रूप से भी प्रमुख होगा। पहले पहलू ने नैतिक और आध्यात्मिक मामलों में इसकी प्रगति को प्रदर्शित किया और यह दूसरा पहलू भविष्य में इसकी भौतिक प्रगति और वर्चस्व के लिए मजबूत सबूत पेश करता है।
क्योंकि इस्लामी जगत के सामूहिक व्यक्तित्व के हृदय में पांच अत्यंत शक्तिशाली, अटूट 'शक्तियां' स्थापित हैं, जो आपस में मिश्रित और एकीकृत हो गई हैं।8
पहली ताकत: यह इस्लाम की वास्तविकता है, जो सभी पूर्णता का स्वामी है, तीन सौ सत्तर मिलियन आत्माओं को एक आत्मा बना सकता है, सुसज्जित किया गया है

---

8. हम कुरान की शिक्षा और निर्देश तथा उनके संकेत से समझते हैं कि भविष्यद्वक्ताओं के चमत्कारों का उल्लेख करके कुरान मानव जाति को सूचित कर रहा है कि उन चमत्कारों के समान घटनाएँ भविष्य में प्रगति के माध्यम से अस्तित्व में आएंगी, तथा उन्हें प्राप्त करने का आग्रह करते हुए कह रहा है: "काम पर आओ! इन चमत्कारों के उदाहरण दिखाओ! पैगंबर सुलैमान (UWP) की तरह, दो मील की यात्रा तय करो।

एक दिन में कई महीने! पैगंबर जीसस (UWP) की तरह, सबसे भयावह बीमारियों का इलाज खोजने के लिए काम करें! पैगंबर मूसा (UWP) की तरह, पत्थर से जीवन का पानी निकालें और मानव जाति को प्यास से मुक्ति दिलाएँ! पैगंबर अब्राहम (UWP) की तरह, ऐसी सामग्री और कपड़े ढूँढ़ें जिससे आग आपको जला न सके! कुछ पैगंबरों की तरह, दूर की आवाज़ें सुनें और पूर्व और पश्चिम में दूर की छवियाँ देखें! पैगंबर डेविड (UWP) की तरह, लोहे को आटे की तरह नरम करें और मानव जाति की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए इसे मोम की तरह बनाएँ! आप घड़ी और जहाज़ से, पैगंबर जोसेफ़ (UWP) और पैगंबर नूह (UWP) के चमत्कारों से कितना लाभ उठाते हैं। दूसरे पैगंबरों ने आपको जो चमत्कार सिखाए हैं, उनसे उसी तरह लाभ उठाएँ और उनका अनुकरण करें।"

उपरोक्त के अनुरूप, कुरान मानव जाति को हर मामले में निर्देश देता है, उन्हें भौतिक, नैतिक और आध्यात्मिक प्रगति के लिए प्रेरित करता है, तथा यह साबित करता है कि यह सार्वभौमिक शिक्षक और गुरु है।

यह एक वास्तविक सभ्यता और सकारात्मक, सच्चे विज्ञान से युक्त है, और ऐसा है कि इसे किसी भी शक्ति द्वारा नष्ट नहीं किया जा सकता।

दूसरी ताकत: एक तीव्र आवश्यकता, जो सभ्यता और उद्योग की वास्तविक स्वामी है, और

विकास के स्रोत और साधन, साथ ही पूर्ण, कमरतोड़ गरीबी, ऐसी ताकतें हैं जिन्हें न तो चुप कराया जा सकता है और न ही कुचला जा सकता है।

तीसरी शक्ति: यह शक्ति, जो मनुष्य को श्रेष्ठ वस्तुओं के लिए प्रतिस्पर्धा के रूप में श्रेष्ठ लक्ष्य सिखाती है, तथा उन्हें उस मार्ग पर प्रयत्नशील बनाती है, जो निरंकुशता को चकनाचूर करती है, श्रेष्ठ भावनाओं को उत्तेजित करती है, ईर्ष्या, द्वेष, प्रतिद्वंद्विता को नष्ट करती है, तथा सच्ची जागृति, प्रतिस्पर्धा की उत्सुकता, नवीकरण की प्रवृत्ति तथा सभ्यता के लिए प्रवृत्ति से युक्त है, वह स्वतंत्रता से युक्त है जो शरीयत के अनुसार है। अर्थात्, यह मानवता के योग्य सर्वोच्च उपलब्धियों की इच्छा से सुसज्जित है।

चौथी शक्ति: यह विश्वास से उत्पन्न निर्भयता है, जो करुणा से युक्त है।
अर्थात् न तो स्वयं को नीचा दिखाना, न अत्याचारियों और तानाशाहों के अधीन रहना, न ही दुर्भाग्यशाली लोगों पर अत्याचार करना और उन पर अहंकार करना; ये सब उस स्वतंत्रता की नींव हैं जो शरीयत के अनुरूप है।

पांचवी ताकत: यह इस्लाम की गरिमा है, जो ईश्वर के वचन की घोषणा करती है और उसे कायम रखती है। इस युग में ईश्वर के वचन की घोषणा भौतिक प्रगति पर निर्भर है; इसे केवल सच्ची सभ्यता प्राप्त करके ही घोषित किया जा सकता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि भविष्य में इस्लाम के सामूहिक व्यक्तित्व की दुनिया इस्लाम की गरिमा द्वारा ईमान के माध्यम से जारी किए गए स्पष्ट आदेश का अक्षरशः पालन करेगी।

अतीत में इस्लाम की प्रगति,

शत्रु की कट्टरता और हठधर्मिता का मुकाबला करने तथा उनके आक्रमण के विरुद्ध रक्षा करने के लिए शस्त्रों और तलवारों का उपयोग किया जाएगा। जबकि भविष्य में शस्त्रों के स्थान पर सच्ची सभ्यता, भौतिक प्रगति, सत्य और न्याय की अमूर्त, नैतिक तलवारें शत्रुओं को परास्त करेंगी और तितर-बितर कर देंगी।

आपको समझना चाहिए कि मेरा मतलब उन अच्छी चीजों से है जो सभ्यता के गुण हैं और मानव जाति के लिए इसके लाभ हैं। न कि इसके अधर्म और बुराइयों से जिन्हें मूर्खों ने इसके गुण मान लिया है और उनका अनुकरण करते हुए हमारी संपत्ति को नष्ट कर दिया है। धर्म को रिश्वत के रूप में देकर, उन्होंने दुनिया भी नहीं जीती। सभ्यता के अधर्म ने इसके लाभों को दबा दिया और इसकी बुराइयों को इसके गुणों से अधिक महत्व दिया, जिससे मानव जाति को दो विश्व युद्धों के रूप में दो विनाशकारी आघात लगे और उस पापी सभ्यता को उलटने से मनुष्य इतना घृणा करने लगा कि उसने धरती के चेहरे को खून से रंग दिया।

ईश्वर की इच्छा से, भविष्य में इस्लाम की शक्ति के माध्यम से सभ्यता के गुण प्रबल होंगे, पृथ्वी का चेहरा गंदगी से साफ हो जाएगा, और सार्वभौमिक शांति सुरक्षित होगी।

वास्तव में, यह तथ्य कि यूरोपीय सभ्यता सद्गुण और मार्गदर्शन पर नहीं, बल्कि वासना और जुनून, प्रतिद्वंद्विता और उत्पीड़न पर आधारित है, और यह कि आज तक सभ्यता की बुराइयाँ इसके सद्गुणों पर हावी रही हैं, और यह कि क्रांतिकारी समाजों ने कीड़े खाए हुए पेड़ की तरह इसमें घुसपैठ की है, ये सभी एशियाई सभ्यता की सर्वोच्चता के लिए शक्तिशाली संकेत और साधन हैं। थोड़े समय में यह प्रबल हो जाएगी।

ऐसा कैसे है कि जबकि इस्लाम के मानने वालों और मानने वालों की भौतिक और नैतिक उन्नति के लिए इतने शक्तिशाली और अडिग तरीके और साधन मौजूद हैं, और यद्यपि भविष्य की खुशी का रास्ता रेल की तरह खोल दिया गया है, फिर भी आप निराश हो जाते हैं और निराशा में डूब जाते हैं?

क्या यह भविष्य का चेहरा बदल देगा और इस्लामी दुनिया का मनोबल तोड़ देगा? निराशा और हताशा में आप यह मान लेते हैं कि "यह दुनिया यूरोपीय लोगों और बाकी सभी के लिए प्रगति की दुनिया है", लेकिन "यह केवल इस्लाम के दुर्भाग्यपूर्ण लोगों के लिए पतन की दुनिया है!" ऐसा कहकर आप एक गलत धारणा बना रहे हैं।

गंभीर गलती.

चूँकि प्रगति और पूर्णता की इच्छा ब्रह्माण्ड और मनुष्य के मूल स्वभाव में सम्मिलित है, अतः निश्चय ही यदि मानवजाति को उसकी गलतियों और गलत कामों के कारण शीघ्र ही प्रलय का सामना न करना पड़े, तो भविष्य में, ईश्वर की इच्छा से, सत्य और न्याय, इस्लाम की दुनिया में सांसारिक सुख का मार्ग दिखाएंगे, जिसमें मानवजाति की पिछली गलतियों का प्रायश्चित होगा।

इस पर विचार करें: समय एक सीधी रेखा में नहीं चलता है ताकि इसकी शुरुआत और अंत एक दूसरे से अलग हो जाएं; यह एक चक्र में घूमता है, जैसे पृथ्वी की गेंद घूमती है। कभी-कभी यह वसंत और गर्मियों के मौसम को प्रगति के रूप में दिखाता है, और कभी-कभी तूफान और सर्दियों के मौसम को गिरावट के रूप में दिखाता है। जिस तरह हर सर्दी के बाद वसंत और हर रात की सुबह होती है, उसी तरह इंसानियत के पास भी सुबह और वसंत होगा, अगर अल्लाह चाहेगा। आप ईश्वरीय दया से इस्लाम की सच्चाई के सूरज के माध्यम से सार्वभौमिक शांति के भीतर सच्ची सभ्यता देखने की उम्मीद कर सकते हैं।

पाठ की शुरुआत में मैंने कहा था कि मैं अपने दावे के समर्थन में डेढ़ तर्क प्रस्तुत करूंगा। अब, एक तर्क, संक्षिप्त रूप में, समाप्त हो गया है और शेष आधा तर्क इस प्रकार है:

जैसा कि विज्ञान की गहन जांच और असंख्य प्रयोगों द्वारा स्थापित किया गया है, ब्रह्मांड के क्रम में सर्व-महिमावान निर्माता का मौलिक और बिल्कुल सर्वोपरि उद्देश्य और सच्चा उद्देश्य अच्छाई,

सुंदरता, उत्कृष्टता और पूर्णता है। सभी के लिए

भौतिक विज्ञान अपने व्यापक नियमों के अनुसार जिन क्षेत्रों का अध्ययन करते हैं, उनमें ऐसी व्यवस्था और पूर्णता प्रदर्शित करते हैं कि बुद्धि को इससे अधिक परिपूर्ण कुछ भी नहीं मिल सकता।

उदाहरण के लिए, चिकित्सा में शरीर रचना विज्ञान, खगोल विज्ञान में सौर प्रणाली का विज्ञान, तथा वनस्पति विज्ञान और जीव विज्ञान जैसे विज्ञान, सभी अपने-अपने विशेष क्षेत्रों में क्रम से सर्वशक्तिमान निर्माता की शक्ति और ज्ञान के चमत्कारों को प्रदर्शित करते हैं, तथा इस आयत की सच्चाई को दर्शाते हैं कि वह जो कुछ भी रचता है, उसे सर्वश्रेष्ठ बनाता है। [9]

इसके अलावा, आगमनात्मक तर्क और सामान्य अनुभव यह प्रदर्शित करते हैं कि बुराई, कुरूपता, दोष, बुराई और निरर्थकता ब्रह्मांड के निर्माण में गौण हैं। वे उद्देश्य नहीं हैं; वे आश्रित और गौण हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि कुरूपता ब्रह्मांड में कुरूपता के लिए नहीं आई है, बल्कि सुंदरता के एक सत्य को अनेक सत्यों में बदलने के लिए माप की इकाई के रूप में आई है। बुराई और शैतान को भी मनुष्य को परेशान करने के लिए रखा गया है ताकि प्रतिस्पर्धा के माध्यम से उसकी असीमित प्रगति का साधन बन सकें। ब्रह्मांड में इन जैसी छोटी बुराइयों और कुरूपताओं का निर्माण सार्वभौमिक सुंदरता और अच्छाई के उदाहरणों के साधन बनने के लिए किया गया है। इस प्रकार, आगमनात्मक तर्क के अनुसार, सृजन का वास्तविक उद्देश्य और परिणाम यह साबित करते हैं कि अच्छाई, सुंदरता और पूर्णता ब्रह्मांड में मौलिक हैं और वे ही वास्तविक उद्देश्य हैं। चूँकि मनुष्य ने अपनी दुष्टतापूर्ण नास्तिकता से पृथ्वी को इस हद तक गंदा और अव्यवस्थित कर दिया है और वे अपना फल प्राप्त किए बिना और ब्रह्मांड में मौजूद सच्चे उद्देश्य को प्रतिबिंबित किए बिना इस दुनिया से चले गए हैं, इसलिए वे निश्चित रूप से अस्तित्वहीनता में नहीं बचेंगे। बल्कि उन्हें नर्क की काल कोठरी में भेज दिया जाएगा।

---

9. कुरान, 32:7.

साथ ही, आगमनात्मक तर्क और विज्ञान की जांच से यह स्थापित हो चुका है कि मनुष्य सभी प्राणियों में सबसे श्रेष्ठ और सबसे महत्वपूर्ण है। क्योंकि वह अपने तर्क से ही जीवन के चरणों का पता लगाता है।

ब्रह्मांड में विद्यमान प्रत्यक्ष कारणों और प्रभावों तथा कारणों के संबंधों के बीच, जो एक के बाद एक क्रमिक रूप से चलते रहते हैं। और, अपनी स्वयं की तुच्छ कला के साथ दिव्य कला और व्यवस्थित और बुद्धिमान प्रभुसत्तापूर्ण सृजन की नकल करने के लिए, और अपने आंशिक ज्ञान और अपनी स्वयं की कलाओं के माध्यम से दिव्य कार्यों और दिव्य कला को समझने के लिए, उसे एक पैमाने और माप के रूप में इच्छा की क्षमता दी गई है। इस प्रकार, यह तथ्य कि मनुष्य अपनी इच्छा के प्रयोग के माध्यम से काम करने वाली सामग्रियों के माध्यम से सर्व-महिमावान निर्माता के सार्वभौमिक, सर्वव्यापी कार्यों और गुणों को जानता है, यह साबित करता है कि वह ब्रह्मांड में सबसे सम्मानित और श्रेष्ठ प्राणी है।

इसके अलावा, मनुष्य और ब्रह्मांड के बारे में इस्लाम की सच्चाईयों की गवाही के अनुसार, सबसे महान और श्रेष्ठ, सबसे उत्कृष्ट और सर्वोच्च, इस्लाम के लोग हैं, जो सत्य और वास्तविकता के लोग हैं। और, प्रेरक तर्क और इतिहास की गवाही के अनुसार, सत्य के लोगों में, सम्मानित मानव जाति के बीच सबसे श्रेष्ठ, सबसे उत्कृष्ट और श्रेष्ठ पैगंबर मुहम्मद (PBUH) थे। यह उनके हज़ारों चमत्कारों, उनके उच्च नैतिकता और इस्लाम और कुरान की सच्चाईयों से प्रमाणित होता है।

चूँकि इस आधे तर्क के तीन सत्य ऐसी खबरें देते हैं, तो क्या यह संभव है कि मनुष्य इतने सारे विज्ञानों की गवाही का खंडन करे और अपनी दुष्टता के साथ इस तर्क को नकार दे, और ईश्वर की इच्छा और सनातन ज्ञान के सामने, जो पूरे ब्रह्मांड को अपने में समाहित करता है, अपनी अधर्मी बर्बरता, स्वेच्छाचारी ईश्वरविहीनता और भयानक विनाश में लगा रहे? क्या यह संभव है कि वे इस्लाम के खिलाफ इस तरह से काम करना जारी रखें?

दमिश्क धर्मोपदेश / पहला वचन - पृष्ठ 42

मैं अपनी सम्पूर्ण शक्ति से, और यदि मुझमें शक्ति हो तो, असंख्य जीभों से उस सर्वज्ञ और महिमावान, सर्वसुन्दर रचयिता की शपथ लेता हूँ, जिसने इस पूर्ण व्यवस्था के साथ संसार को और इस ब्रह्माण्ड को, कणों से लेकर ग्रहों तक, एक मक्खी के पंख से लेकर स्वर्ग के दीपों तक को, नियमितता की असीम बुद्धि के साथ रचा है, कि यह किसी भी तरह से सम्भव नहीं है कि मानवजाति, जो अन्य सभी प्रकार के प्राणियों के विपरीत है और अन्य प्रजातियों, जो उसके छोटे भाई हैं, का विरोध करती है, अपने सार्वभौमिक बुरे कार्यों के माध्यम से ब्रह्माण्ड की व्यवस्था के विरोध में खड़ी हो और उन कड़वे फलों को खाए और पचाए, जो हजारों वर्षों से मनुष्यों में अच्छाई पर बुराई की प्रधानता का कारण रहे हैं।

यह संभावना केवल असंभव कल्पना करके ही हो सकती है, कि, यद्यपि मनुष्य को ब्रह्मांड पर 'सर्वोच्च भरोसा' दिया गया है, उसे पृथ्वी का दिव्य प्रतिनिधि का दर्जा प्राप्त है, तथा वह ब्रह्मांड में अन्य प्राणियों का एक श्रेष्ठ बड़ा भाई है, फिर भी वह सबसे नीच, सबसे नीच, सबसे दयनीय, सबसे हानिकारक तथा सबसे तुच्छ है, तथा परिणामस्वरूप उसने चुपके से ब्रह्मांड में प्रवेश किया तथा उसमें अराजकता फैलाई। यह असंभवता किसी भी तरह से स्वीकार नहीं की जा सकती।

इस तथ्य के लिए मेरा यह आधा तर्क इस निष्कर्ष पर ले जाता है कि जिस प्रकार परलोक में स्वर्ग और नरक का अस्तित्व एक आवश्यक तथ्य है, उसी प्रकार भविष्य में भी अच्छाई और सत्य का धर्म पूर्ण रूप से प्रबल होगा, ताकि, अन्य सभी प्राणियों की तरह, अच्छाई और सद्गुण मानवजाति पर पूर्ण रूप से प्रबल हो; और मानवजाति ब्रह्माण्ड में अपने अन्य भाइयों के समान हो; और यह कहा जा सकता है कि पूर्व-शाश्वत ज्ञान का रहस्य मानवजाति में भी स्थापित है।

संक्षेप में: जैसा कि ऊपर वर्णित निश्चित तथ्य दर्शाते हैं, सृष्टिकर्ता की दृष्टि में ब्रह्माण्ड का चयन परिणाम और सबसे महत्वपूर्ण प्राणी मनुष्य है। तथा

दमिश्क धर्मोपदेश / दूसरा वचन - पृष्ठ 43

जैसे मनुष्य का अब तक का गलत आचरण नरक के अस्तित्व को आवश्यक बनाता है, वैसे ही उसका

व्यापक जन्मजात योग्यताएं और संभावनाएं तथा ब्रह्मांड से संबंधित उनके विश्वास की सच्चाई

जाहिर है कि जन्नत की जरूरत है। इसलिए, चूंकि वह अपराधों और दो विश्व युद्धों को बर्दाश्त नहीं कर सकता, जिसने ब्रह्मांड को रुलाया है, और वह उन कड़वी बुराइयों को पचा नहीं सकता जो उसने निगली हैं; और अपने आचरण के कारण, जिससे वह बीमार है और जिसके द्वारा उसने पूरी धरती को गंदा कर दिया है; और चूंकि उसने मानवता को सबसे नीच स्तर पर गिरा दिया है और एक हजार साल की प्रगति को उलट देने का अपराध बर्दाश्त नहीं कर सकता; निश्चित रूप से और बिना किसी संदेह के, अगर कोई भयानक आपदा उसके सिर पर जल्दी ही नहीं टूटती है, तो इस्लाम की सच्चाईयाँ मनुष्य को उस नीच और पतित स्तर से मुक्ति दिलाने का साधन बनेंगी, जिस पर वह गिर गया है, धरती के चेहरे को साफ करने और सार्वभौमिक शांति को सुरक्षित करने का साधन बनेगी। हम दयालु और दयावान की दया से इसकी प्रार्थना करते हैं, और हम आशा के साथ इसकी प्रतीक्षा करते हैं।

दूसरा शब्द

जीवन के दौरान मेरे अनुभवों के परिणामस्वरूप मेरे विचार में दूसरा शब्द जन्मा है।

यह इस प्रकार है: निराशा

एक बहुत बड़ी बीमारी है और यह इस्लाम की दुनिया के दिल में घर कर गई है। यह निराशा ही है जिसने हमें इस तरह मार डाला है कि पश्चिम में एक या दो मिलियन की एक छोटी सी राज्य ने पूर्व में बीस मिलियन मुसलमानों को अपना नौकर और उनके देश को अपना उपनिवेश बना लिया है। और यह निराशा ही है जिसने हमारे उच्च नैतिक मूल्यों को मार डाला है, और

हमें सार्वजनिक भलाई को त्यागने के लिए मजबूर करने के कारण, हमारी दृष्टि को व्यक्तिगत लाभ तक सीमित कर दिया है।

निराशा ने ही हमारे मनोबल को नष्ट किया है। यद्यपि थोड़ी सी शक्ति के साथ हम विश्वास से उत्पन्न नैतिक शक्ति के माध्यम से पूर्व से पश्चिम तक विजयी रहे, लेकिन निराशा के कारण ही यह शक्ति नष्ट हो गई, अत्याचारी विदेशियों ने पिछले चार सौ वर्षों से तीस करोड़ मुसलमानों को अपना बंदी बना रखा है।

और इस निराशा के कारण मुसलमान दूसरों की उदासीनता और निराशा को भी अपने आलस्य का बहाना मान लेते हैं और कहते हैं: “इससे मुझे क्या लेना-देना?” यह कहते हुए कि, “मेरे जैसे सभी लोग तुच्छ हैं,” वे ईमान की हिम्मत को त्याग देते हैं और अपने इस्लामी कर्तव्यों को पूरा करने में विफल हो जाते हैं।

चूंकि निराशा की बीमारी ने हम पर इतना अत्याचार किया है और हमें मार रही है, इसलिए हम इसे इस श्लोक के साथ पूरी तरह से चकनाचूर कर देंगे, ईश्वर की दया से निराश न हों।

10

ईश्वर की इच्छा से, हम इसे हदीस की सच्चाई के साथ नष्ट कर देंगे, "भले ही कोई चीज़ पूरी तरह से प्राप्त न हो, इसे पूरी तरह से छोड़ना नहीं चाहिए।"

निराशा समुदायों और राष्ट्रों की सबसे गंभीर बीमारी है, एक कैंसर है। यह उपलब्धि में बाधा है और पवित्र हदीस की सच्चाई के विपरीत है, "मैं अपने उस बंदे के साथ हूँ जो मेरे बारे में अच्छा सोचता है।" यह कायरों, नीच और नपुंसक लोगों का गुण और बहाना है। यह इस्लामी साहस के बारे में नहीं बताता। यह विशेष रूप से अरबों जैसे लोगों का गुण नहीं हो सकता, जिन्हें मानव जाति के बीच एक अच्छे चरित्र का सौभाग्य प्राप्त है जो गर्व का कारण है। इस्लामी दुनिया के राष्ट्रों ने

---

10. कुरान, 39:53.

अरबों के धैर्य से सबक लें। ईश्वर की इच्छा से, एक बार फिर अरब निराशा छोड़ देंगे और तुर्कों के साथ खड़े होंगे, जो इस्लाम की वीर सेना हैं, और दुनिया के हर हिस्से में कुरान का झंडा फहराएंगे।

तीसरा शब्द

यह तीसरा शब्द मैंने अपने जीवन के दौरान किए गए अध्ययनों और शोधों तथा सामाजिक जीवन के उतार-चढ़ावों के अपने अनुभव से सीखा है; इसका सारांश और सार इस प्रकार है: सत्यता इस्लाम का आधार और बुनियाद है, तथा अच्छे चरित्र वाले लोगों के बीच संबंध और उच्च भावनाओं का आधार है। चूँकि यह हमारे समाज के जीवन की बुनियाद है, इसलिए हमें सत्यता और ईमानदारी को जीवन में उतारना चाहिए और उनके द्वारा अपनी नैतिक और आध्यात्मिक बीमारियों का इलाज करना चाहिए।

हाँ, सच्चाई और ईमानदारी इस्लामी समाज के जीवन में महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं। पाखंड एक तरह का वास्तविक झूठ है। चापलूसी और चालाकी कायरतापूर्ण झूठ है। कपट और दोगलापन हानिकारक झूठ है। और जहाँ तक झूठ बोलने का सवाल है, तो यह सर्वशक्तिमान निर्माता की शक्ति को बदनाम करना है।

अविश्वास अपने सभी रूपों में झूठ और मिथ्या है। विश्वास सच्चाई और ईमानदारी है। इसके परिणामस्वरूप, सत्य और असत्य के बीच एक असीम दूरी है; उन्हें एक दूसरे से उतना ही दूर होना चाहिए जितना पूर्व पश्चिम से है। आग और प्रकाश की तरह, उन्हें एक दूसरे के साथ मिश्रित नहीं होना चाहिए। हालाँकि, क्रूर राजनीति और अत्याचारी प्रचार ने उन्हें मिश्रित और भ्रमित कर दिया है

और मनुष्य की उपलब्धियों को भी अस्तव्यस्त कर दिया है।11

सत्य और झूठ एक दूसरे से उतने ही दूर हैं जितने कि विश्वास और अविश्वास। परमानंद के युग में सत्य के माध्यम से मुहम्मद के सर्वोच्च पद पर पहुँचने के साथ, तथा सत्य की कुंजी से विश्वास की सच्चाइयों और ब्रह्मांड की सच्चाइयों के खजाने के खुलने के साथ, सत्य मानव समाज के बाजार में सबसे मूल्यवान वस्तु बन गई, और सबसे अधिक मांग वाली वस्तु बन गई।

झूठ बोलने के कारण ही मुसैलिमा जैसे झूठे लोग सबसे नीचे गिर गए। चूँकि उस महान क्रांति ने दिखा दिया कि उस समय झूठ और मिथ्याचार ही मुख्य थे

---

11. हे मेरे भाईयों! ओल्ड सईद की इस शिक्षा से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वह राजनीति और इस्लाम के सामाजिक मामलों से बहुत अधिक चिंतित थे। लेकिन सावधान रहें, ऐसा न सोचें कि उन्होंने धर्म को राजनीति का साधन या साधन बनाने का रास्ता अपनाया था। भगवान न करे! वह अपनी पूरी ताकत से राजनीति को धर्म का साधन बना रहे थे। वह कहा करते थे: "मैं राजनीति के एक हजार मामलों की तुलना में धर्म के एक सत्य को अधिक पसंद करता हूँ। वास्तव में, उन्होंने चालीस-पचास साल पहले यह महसूस किया था कि कुछ दोहरे चेहरे वाले नास्तिक राजनीति को अधर्म का साधन बनाने की कोशिश कर रहे थे, और उनके उन उद्देश्यों और विचारों के जवाब में, उन्होंने राजनीति को इस्लाम और उसकी सच्चाइयों का सेवक और साधन बनाने की कोशिश की।

हालांकि, बीस साल बाद उन्होंने देखा कि, उन गुप्त दोहरे व्यवहार वाले नास्तिकों के प्रयासों के जवाब में, जो वे पश्चिमीकरण के बहाने राजनीति को अधर्म का साधन बना रहे थे, कई धार्मिक राजनेता धर्म को इस्लामी राजनीति का साधन बनाने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन इस्लाम का सूरज धरती पर रोशनी का साधन बनकर नहीं रह सकता। और इस्लाम को साधन बनाना उसका मूल्य कम करना है और यह एक बड़ा अपराध है। ओल्ड सईद ने एक धर्मनिष्ठ विद्वान को भी देखा, जो उस तरह की पक्षपातपूर्ण राजनीति के परिणामस्वरूप, अपने राजनीतिक झुकाव से सहमत एक कपटी की उत्साहपूर्वक प्रशंसा कर रहा था, जबकि उनका विरोध करने वाले एक ईमानदार शिक्षक की आलोचना कर रहा था और उसे पथभ्रष्ट घोषित कर रहा था। ओल्ड सईद ने उससे कहा: "अगर कोई शैतान तुम्हारे राजनीतिक विचारों का समर्थन करता है, तो तुम इसे दया के रूप में समझोगे, और अगर कोई फ़रिश्ता उनका विरोध करता है, तो तुम उसे शाप दोगे।" इसके परिणामस्वरूप, ओल्ड सईद ने घोषणा की: "मैं शैतान और राजनीति से ईश्वर की शरण लेता हूँ," और पैंतीस वर्षों से राजनीति छोड़ दी है।12

हस्ताक्षरित: सईद नूरसी
12. चूंकि नये सईद ने राजनीति को पूरी तरह त्याग दिया था और उसका बिल्कुल भी पालन नहीं किया था, इसलिए दमिश्क धर्मोपदेश का तुर्की अनुवाद, जो पुराने सईद का एक पाठ है और राजनीति को छूता है, मुद्रित करके उपलब्ध करा दिया गया है।13

ईशनिंदा और अंधविश्वास के आगे वे ब्रह्मांड के बाजार में सबसे खराब और सबसे गंदी वस्तुओं में से एक बन गए, और ऐसा नहीं था कि हर कोई उन्हें खरीदना चाहता था, वास्तव में, हर कोई उनसे घृणा करता था। निश्चित रूप से सहाबा, जो उस महान क्रांति की पहली पंक्ति में थे और जिनके स्वभाव में गर्व की वजह बनने वाली चीजें खरीदना और सबसे मूल्यवान वस्तुओं और सबसे अधिक मांग वाले ग्राहकों के लिए ग्राहक बनना था, कभी भी जानबूझकर झूठ की वकालत नहीं करते। वे झूठ बोलकर खुद को गंदा नहीं करते। वे खुद को झूठे मुसैलिमा जैसा नहीं बनाते।

दरअसल, चूँकि वे अपनी पूरी ताकत और जन्मजात स्वभाव के कारण सच्चाई और ईमानदारी के ग्राहक थे, जिसने वे सीढ़ियाँ बनाईं जिनके ज़रिए मुहम्मद (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) सबसे ऊँचे पद पर पहुँचे, और वे सबसे ज़्यादा माँगे जाने वाले माल और सबसे मूल्यवान वस्तु और वास्तविकताओं की कुंजी थे, और चूँकि जहाँ तक संभव था उन्होंने सच्चाई से दूर न हटने की कोशिश की, यह हदीस के विज्ञान और शरीयत के विद्वानों के बीच एक स्थापित सिद्धांत बन गया कि "सहयोगी हमेशा सच बोलते थे। उनकी कथाओं की जाँच उसी तरह से करने की ज़रूरत नहीं है जैसे दूसरी कथाओं की होती है। उन्होंने पैगंबर (PBUH) से जो हदीसें बताईं वे सभी सही हैं।" हदीस और शरीयत के विद्वानों की आम सहमति के लिए एक निर्णायक तर्क यह तथ्य है।

---

13. इसके अलावा, हालाँकि नए सईद के जीवन के सत्ताईस साल और उनके लेखन और पत्रों के सौ तीस खंडों की तीन अदालतों (अब एक हज़ार अदालतों) और सरकारी अधिकारियों द्वारा बारीकी से जाँच की गई है; और हालाँकि उन्हें उन दुष्ट-धर्मत्यागियों और धोखेबाज़ों का विरोध करने के लिए मजबूर किया गया था जो उनके खिलाफ़ काम कर रहे थे; और हालाँकि उनके वध का गुप्त आदेश भी दिया गया था; लेकिन यह तथ्य कि वे इस बात का ज़रा भी संकेत नहीं पा सके कि उन्होंने राजनीतिक उद्देश्यों के लिए धर्म का शोषण किया था, यह निर्णायक रूप से साबित करता है कि उन्होंने ऐसा नहीं किया था। हम रिसाले-ए-नूर के छात्र इस असाधारण स्थिति पर आश्चर्यचकित हैं और इसे रिसाले-ए-नूर के क्षेत्र में मौजूद सच्ची ईमानदारी का संकेत मानते हैं।

हस्ताक्षर: रिसाले-ए नूर के छात्र।

इस प्रकार, परमानंद युग में महान क्रांति के समय सत्य और झूठ एक दूसरे से उतने ही दूर थे जितने विश्वास और अविश्वास, फिर भी समय बीतने के साथ वे धीरे-धीरे एक दूसरे के करीब आ गए हैं। राजनीतिक प्रचार ने कभी-कभी झूठ को अधिक प्रचलन दिया है, और बुराई और झूठ ने कुछ हद तक मंच पर कब्जा कर लिया है। यह इस तथ्य के कारण है कि कोई भी व्यक्ति साथियों के स्तर तक नहीं पहुंच सका। चूंकि इस पर सत्ताईसवें वचन के परिशिष्ट में चर्चा की गई है, जो साथियों के बारे में है, इसलिए हम आपको उसी की ओर संकेत करते हैं और यहां इस विषय को संक्षिप्त करते हैं।

ऐ मेरे भाई जो इस उमय्यद मस्जिद में हैं! और ऐ मेरे भाई जो चालीस से पचास साल बाद इस्लाम की दुनिया की विशाल मस्जिद में चार सौ मिलियन आस्तिक बन गए हैं! मोक्ष केवल सच्चाई और ईमानदारी से ही पाया जा सकता है। "सबसे अचूक सहायता"[14] ईमानदारी है.

दूसरे शब्दों में कहें तो, मोक्ष की ओर जाने वाली सबसे मजबूत जंजीर ईमानदारी है।
हालांकि, कभी-कभी अतीत में झूठ बोलने वालों ने इसे रद्द कर दिया था, अगर इससे लाभ प्राप्त होता। कुछ विद्वानों ने आवश्यकता पड़ने पर या लाभ के लिए 'अस्थायी' फतवे जारी किए। लेकिन इस युग में, ऐसे फतवे नहीं दिए जा सकते। क्योंकि इसका इतना दुरुपयोग किया गया है कि सौ नुकसानों में से केवल एक ही लाभ हो सकता है। इसलिए निर्णय लाभ के आधार पर नहीं हो सकता।

उदाहरण के लिए, यात्रा के दौरान धार्मिक प्रार्थनाओं को छोटा करने का कारण कठिनाई है। लेकिन यह कारण नहीं हो सकता। क्योंकि इसकी कोई निर्धारित सीमा नहीं है और इसका दुरुपयोग हो सकता है। कारण केवल यात्रा ही हो सकती है। इसी तरह, लाभ झूठ बोलने का कारण नहीं हो सकता। क्योंकि इसकी कोई निर्दिष्ट सीमा नहीं है और यह एक दलदल है जो दुरुपयोग को जन्म देता है। फतवे के लिए निर्णय इस पर आधारित नहीं हो सकता। जिसमें

---

14. कुरान, 2:256.

मामले में, "या तो सत्य या मौन।" अर्थात्, दो रास्ते हैं, तीन नहीं; अर्थात्, न तो सत्य, न झूठ, न मौन।

चूँकि मानव जाति के स्पष्ट और भयानक झूठ और जानबूझकर गलत बयानी के माध्यम से सार्वजनिक व्यवस्था और सुरक्षा को उलट दिया गया है, और इसके लाभों के दुरुपयोग के माध्यम से, मानव जाति को स्पष्ट रूप से तीसरा रास्ता बंद करने का आदेश दिया गया है और मजबूर किया गया है। अन्यथा, विश्व युद्ध, घृणित क्रांतियाँ, और पतन और विनाश जो मानवता ने पिछली आधी सदी में झेला है, मनुष्यों के सिर पर कुछ भारी आपदा ला देगा।

बेशक, आप जो भी कहते हैं वह सच होना चाहिए, लेकिन हर बात को सच कहना सही नहीं है। अगर कभी ऐसा हो तो नुकसानदायक है, तो चुप रहो। लेकिन झूठ बोलने का कोई फतवा नहीं है। आप जो भी बोलें, वह सच होना चाहिए, लेकिन आपको हर बात सच कहने का अधिकार नहीं है। क्योंकि अगर यह ईमानदारी से नहीं होगा, तो इसका हानिकारक प्रभाव पड़ेगा और सच गलत पर खर्च हो जाएगा।

चौथा शब्द

सामाजिक जीवन के अपने अनुभव और अपने जीवन भर के अध्ययन से मैंने जो सीखा है, उससे मैं निश्चित हूँ: प्रेम के योग्य सबसे अधिक चीज़ प्रेम है, और शत्रुता के योग्य सबसे अधिक चीज़ शत्रुता है। अर्थात्, प्रेम और प्रेम करना, जो मनुष्य के सामाजिक जीवन को सुरक्षित बनाते हैं और खुशी की ओर ले जाते हैं, प्रेम और प्रेम पाने के सबसे अधिक योग्य हैं। शत्रुता और दुश्मनी बदसूरत और हानिकारक हैं, उन्होंने मनुष्य के सामाजिक जीवन को उलट दिया है, और किसी भी चीज़ से अधिक वे इसके योग्य हैं

घृणा और शत्रुता और उससे दूर रहना। चूँकि यह सत्य रिसाले-ए-नूर के बाईसवें पत्र में स्पष्ट रूप से समझाया गया है, इसलिए यहाँ हम इसे केवल संक्षेप में ही बताएँगे। यह इस प्रकार है: शत्रुता और दुश्मनी का समय समाप्त हो गया है। दो विश्व युद्धों ने दिखा दिया है कि शत्रुता कितनी बुरी, विनाशकारी और कितनी भयानक बुराई है। यह स्पष्ट हो गया है कि इससे कोई लाभ नहीं है। ऐसी स्थिति में, बशर्ते कि वे आक्रामक न हों, हमारे दुश्मनों की बुराइयों को अपनी शत्रुता को आकर्षित न करने दें। उनके लिए नरक और ईश्वरीय दंड ही पर्याप्त है।

कभी-कभी मनुष्य का अहंकार और आत्म-पूजा उसे अनजाने में ही ईमान वालों के प्रति अन्यायपूर्ण शत्रुतापूर्ण व्यवहार करने के लिए प्रेरित करती है; वह खुद को सही मानता है। लेकिन यह शत्रुता और दुश्मनी ईमान वालों के प्रति प्रेम के शक्तिशाली कारणों, जैसे ईमान, इस्लाम और साथी मानवता को कम आंकना है; यह उनके मूल्य को कम करना है। यह वैसी ही पागलपन है जैसे शत्रुता के तुच्छ कारणों को कारणों के ऊपर प्राथमिकता देना

प्रेम के जो पर्वत के समान महान हैं।
चूँकि प्रेम और शत्रुता एक दूसरे के विपरीत हैं, जैसे प्रकाश और अंधकार, वे वास्तव में एक साथ नहीं हो सकते। जो भी हृदय में प्रबल है उसका विपरीत एक ही समय में वास्तव में मौजूद नहीं हो सकता। उदाहरण के लिए, यदि प्रेम वास्तव में मौजूद है, तो शत्रुता दया में बदल जाएगी और

करुणा। यह ईमानवालों के प्रति स्थिति है। या अगर दिल में वाकई दुश्मनी है, तो प्यार दिखावटी स्वीकृति का रूप ले लेता है, हस्तक्षेप न करना और जाहिर तौर पर दोस्ताना होना।
यह गुमराह लोगों के प्रति उदासीन रवैया हो सकता है।
वास्तव में, ईमान, इस्लाम, मानवता और भाईचारे की तरह प्रेम के कारण मजबूत और चमकदार जंजीरें और अमूर्त किले हैं। ईमान वालों के प्रति शत्रुता के कारणों में से एक व्यक्तिगत मामले हैं, जो कि

छोटे पत्थर। ऐसी स्थिति में, किसी मुसलमान के प्रति सच्ची दुश्मनी पालना एक बहुत बड़ी भूल है; यह प्रेम के कारणों का तिरस्कार करने जैसा है, जो एक पहाड़ के समान विशाल हैं।
संक्षेप में: प्रेम, भाईचारा और स्नेह इस्लाम के मूल तत्व हैं और यही इसके बंधन हैं। दुश्मनी करने वाले लोग एक बिगड़े हुए बच्चे की तरह होते हैं जो रोना चाहता है। वह बहाने की तलाश करता है और मक्खी के पंख जैसी तुच्छ चीज बहाना बन जाती है। वे एक अन्यायी, निराशावादी व्यक्ति की तरह होते हैं जो जब तक अविश्वास करना संभव है, तब तक कभी भी अनुकूल नहीं सोचता। वह एक बुरे काम के कारण दस अच्छे कामों को नज़रअंदाज़ कर देता है। निष्पक्षता और अनुकूल सोच, जो इस्लामी चरित्र की पहचान है, इसे अस्वीकार करती है।

पांचवां शब्द

शरिया द्वारा निर्धारित आपसी सलाह-मशविरे से मैंने जो सबक सीखा है, वह यह है कि इस युग में एक व्यक्ति का एक पाप एक नहीं रहता, बल्कि कभी-कभी बढ़कर सौ पापों में बदल जाता है। और कभी-कभी एक अच्छा काम एक नहीं रहता, बल्कि हज़ारों अच्छे कामों की श्रेणी में पहुँच जाता है। इसका कारण यह है कि शरिया के अनुसार स्वतंत्रता और शरिया द्वारा निर्धारित सलाह-मशविरे ने हमारी सच्ची राष्ट्रीयता की संप्रभुता को प्रदर्शित किया है। हमारी सच्ची राष्ट्रीयता का आधार और आत्मा इस्लाम है। जहाँ तक उन्होंने उस राष्ट्रीयता के नाम पर
ओटोमन खिलाफत और तुर्की सेना का झंडा उठाया है, अरब और तुर्क के दो सच्चे भाई इस्लाम की राष्ट्रीयता के कवच और गढ़ और उस पवित्र गढ़ के प्रहरी की तरह हैं।

इस प्रकार, इस पवित्र राष्ट्रवाद के बंधन के माध्यम से, इस्लाम के सभी लोग एक कबीले की तरह बन जाते हैं। कबीले के सदस्यों की तरह, इस्लाम के लोग और समूह इस्लामी भाईचारे के माध्यम से एक दूसरे से बंधे और जुड़े हुए हैं। वे नैतिक रूप से और यदि आवश्यक हो तो भौतिक रूप से एक दूसरे की सहायता करते हैं। ऐसा लगता है जैसे इस्लाम के सभी समूह एक दूसरे से एक चमकदार श्रृंखला से बंधे हुए हैं।

अगर एक जनजाति का कोई सदस्य कोई अपराध करता है, तो उसके सभी सदस्य दूसरे, दुश्मन जनजाति की नज़र में दोषी होते हैं। ऐसा लगता है जैसे जनजाति के हर सदस्य ने अपराध किया हो ताकि दुश्मन जनजाति उन सभी की दुश्मन बन जाए। वह एक अपराध हज़ारों अपराधों के बराबर हो जाता है।
जबकि अगर जनजाति का कोई सदस्य कोई अच्छा काम करता है जो जनजाति के दिल को प्रभावित करने वाला गर्व का कारण है, तो उसके सभी सदस्य उस पर गर्व महसूस करते हैं। ऐसा लगता है जैसे जनजाति का हर व्यक्ति उस अच्छे काम को करने पर गर्व महसूस करता है।

इसी कारण से इस समय, और विशेषकर चालीस-पचास वर्षों के बाद, बुराई और बुरे कर्म अपराधी के पास नहीं रहेंगे; वे लाखों मुसलमानों के अधिकारों का हनन करेंगे।
इसके अनेक उदाहरण चालीस-पचास वर्षों में देखने को मिलेंगे।
ऐ भाइयों जो यहाँ उमय्यद मस्जिद में मेरे ये शब्द सुन रहे हो! और ऐ चालीस-पचास साल बाद इस्लाम की दुनिया की मस्जिद में रहने वाले मुसलमान भाइयों! यह कहकर माफ़ी मत मांगो: "हम कोई नुकसान नहीं करते, लेकिन न ही हममें कुछ फ़ायदा करने की ताकत है;

इसलिए हम माफ़ किए जाते हैं।" ऐसी माफ़ी स्वीकार्य नहीं है। आपकी सुस्ती और यह कहना कि: "इससे मुझे क्या लेना-देना?", और आपका कोई प्रयास न दिखाना और इस्लामी एकता और सच्चे इस्लामी भाईचारे के ज़रिए काम करने की भावना में न आना, इन सबने बहुत नुकसान पहुँचाया है और यह आपके साथ अन्याय है।

दमिश्क धर्मोपदेश / पाँचवाँ वचन - पृष्ठ 53

जिस प्रकार बुरे कर्म हजारों की संख्या में हो जाते हैं, उसी प्रकार इस समय अच्छे कर्म, अर्थात् वे अच्छे कर्म जो इस्लाम की पवित्रता को प्रभावित करते हैं, उन्हें करने वाले तक ही सीमित नहीं रहते।
वास्तव में, ऐसे अच्छे कर्म लाखों विश्वासियों के लिए लाभदायक हो सकते हैं; वे नैतिक, आध्यात्मिक और भौतिक जीवन के बंधन को मजबूत कर सकते हैं। इसलिए, यह समय खुद को आलस्य के बिस्तर पर यह कहते हुए डालने का नहीं है: "इससे मुझे क्या लेना-देना?"

ऐ मेरे भाई जो इस मस्जिद में हैं और चालीस-पचास साल बाद इस्लाम की दुनिया की महान मस्जिद में रहने वाले मेरे भाई! यह मत समझो कि मैं तुम्हें उपदेश देने के लिए इस शिक्षण स्थल पर आया हूँ। मैंने तुमसे अपना अधिकार माँगने के लिए ऐसा किया है। कहने का मतलब यह है कि इस दुनिया और आख़िरत में छोटे समूहों के हित और सुख आप जैसे कुशल शिक्षकों से बंधे हैं, अरब और तुर्क, जो एक विशाल और सम्मानित समूह हैं। हम, मुस्लिम समूह जो तुम्हारे दुखी छोटे भाई हैं, तुम्हारी आलस्य और ढिलाई के कारण नुकसान उठाते हैं।

विशेषकर अरब, जो सम्मानित हैं, संख्या में हैं, और या तो जागृत हो चुके हैं या होंगे!
सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात, मैं आपको इन शब्दों से संबोधित करता हूँ। क्योंकि आप हमारे शिक्षक और नेता हैं, और इस्लाम के सभी लोगों के शिक्षक और नेता हैं, और आप इस्लाम के योद्धा हैं। यह बाद में हुआ कि
शक्तिशाली तुर्की राष्ट्र ने उस पवित्र कर्तव्य में आपकी सहायता की।
इसलिए आलस्य के कारण तुम्हारा पाप महान है। तुम्हारे पुण्य कर्म भी महान और श्रेष्ठ हैं।
विशेष रूप से हम ईश्वरीय दया से बड़ी आशा के साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं कि विभिन्न अरब समूह चालीस से पचास वर्षों में संयुक्त राज्य अमेरिका की तरह उत्कृष्ट परिस्थितियों में प्रवेश करेंगे, और आप पूर्व काल की तरह आधी पृथ्वी पर, बल्कि उसके अधिकांश भाग पर, जो इस समय बंदी है, इस्लामी शासन स्थापित करने में सफल होंगे।

दमिश्क धर्मोपदेश / पाँचवाँ वचन - पृष्ठ 54

यदि कोई भयंकर विपत्ति शीघ्र ही नहीं आती है, तो आने वाली पीढ़ी उसे देखेगी, ईश्वर की इच्छा से।
सावधान रहो मेरे भाईयों! यह मत सोचो कि मैं इन शब्दों से तुम्हें राजनीति में व्यस्त रहने के लिए कह रहा हूँ। खुदा न करे! इस्लाम की सच्चाई सभी राजनीति से ऊपर है। सारी राजनीति उसकी सेवा कर सकती है, लेकिन कोई भी राजनीति उसकी सेवा नहीं कर सकती।
राजनीति इस्लाम को अपने लिए एक उपकरण बना सकती है।
अपनी गलत समझ के कारण मैं इस समय इस्लामी समाज की कल्पना एक कारखाने के रूप में करता हूँ जिसमें बहुत सी मशीनें हैं। अगर मशीनों का कोई भी घटक पीछे रह जाए या किसी दूसरे पर अतिक्रमण कर जाए, तो मशीनें काम करना बंद कर देती हैं। इसलिए इस्लामी एकता का सही समय शुरू हो रहा है। इसके लिए ज़रूरी है कि एक-दूसरे की व्यक्तिगत कमियों पर ध्यान न दिया जाए।

मैं आपसे खेद और दुख के साथ कह रहा हूं कि कुछ विदेशियों ने हमसे हमारी सबसे मूल्यवान संपत्ति और देश छीन लिया है और बदले में हमें बहुत बुरी कीमत दी है।
इसी प्रकार उन्होंने हमसे हमारे उच्च नैतिक मूल्यों और हमारे उत्तम चरित्र का वह हिस्सा छीन लिया है जो सामाजिक जीवन से जुड़ा है और उसे ही उन्होंने अपनी प्रगति का साधन बना लिया है। और यह उनके भ्रष्ट नैतिक मूल्य और भ्रष्ट चरित्र ही हैं जो उन्होंने हमें इसकी कीमत के रूप में दिए हैं।
उदाहरण के लिए, उन्होंने हमसे जो बढ़िया राष्ट्रीय भावना छीन ली है, उसके कारण उनमें से एक कहता है: "अगर मैं मर जाऊं, तो अपने राष्ट्र को जीने दूंगा, क्योंकि मेरे राष्ट्र में मुझे हमेशा की ज़िंदगी मिलेगी।" उन्होंने ये शब्द हमसे छीन लिए हैं और यही उनकी प्रगति का सबसे मज़बूत आधार है। ये शब्द सत्य के धर्म और आस्था के सत्य से निकलते हैं। ये हमारी संपत्ति हैं, आस्था रखने वालों की संपत्ति हैं।

हालाँकि, विदेशियों से हमारे अन्दर घुस आए अश्लील और बुरे चरित्र के कारण, एक स्वार्थी

आदमी से

दमिश्क धर्मोपदेश / पाँचवाँ वचन - पृष्ठ 55

हमारे बीच में से कोई कहता है: "अगर मैं प्यास से मर जाऊँ, तो दुनिया में कहीं भी बारिश न हो। अगर मुझे खुशी का अनुभव न हो, तो दुनिया को अपनी मर्जी से बर्बाद होने दो।" ये हास्यास्पद शब्द धर्म के अभाव और परलोक को न पहचानने से उत्पन्न होते हैं। ये हमारे बीच बाहर से घुस आए हैं और हमें जहर दे रहे हैं।

साथ ही, उन विदेशियों ने हमसे जो राष्ट्रवाद का विचार प्राप्त किया, उसके कारण एक व्यक्ति उतना ही मूल्यवान हो जाता है जितना कि एक राष्ट्र। क्योंकि एक व्यक्ति का मूल्य उसके प्रयास के सापेक्ष होता है। यदि किसी व्यक्ति का प्रयास ही उसका राष्ट्र है, तो वह व्यक्ति अपने आप में एक लघु राष्ट्र का निर्माण करता है।
हममें से कुछ लोगों की असावधानी और विदेशियों की हानिकारक विशेषताओं के कारण, जो हमने अर्जित कर ली हैं, और हमारी मजबूत और पवित्र इस्लामी राष्ट्रीयता के बावजूद, हर किसी के कहने: "मैं! मैं!" और राष्ट्र के लाभों के बजाय व्यक्तिगत लाभों पर विचार करने के कारण, एक हजार आदमी एक आदमी की तरह हो गए हैं।

यदि मनुष्य का प्रयास अपने तक ही सीमित है, तो वह मनुष्य नहीं है, क्योंकि मनुष्य स्वभावतः सभ्य है। मनुष्य को अपने साथी मनुष्यों के बारे में विचार करने के लिए बाध्य होना पड़ता है। उसका व्यक्तिगत जीवन सामाजिक जीवन के माध्यम से चलता है। उदाहरण के लिए, एक रोटी खाने के लिए उसे कितने हाथों की आवश्यकता होती है, और इसके बदले में वह वास्तव में कितने हाथों को चूमता है? और वह जो कपड़े पहनता है, उसके माध्यम से वह कितनी फैक्ट्रियों से जुड़ा हुआ है? आप तुलना करें! चूँकि वह पशु की तरह केवल त्वचा के सहारे जीवित नहीं रह सकता है, और स्वभावतः अपने साथी मनुष्यों से जुड़ा हुआ है, और उन्हें एक अमूर्त मूल्य चुकाने के लिए बाध्य है, इसलिए अपने स्वभाव से, वह सभ्यता को बनाए रखता है। जो व्यक्ति अपने व्यक्तिगत लाभ तक ही अपना दृष्टिकोण सीमित रखता है, वह अपनी मानवता को त्याग देता है, और एक अन्यायी पशु बन जाता है जिसमें कोई मासूमियत नहीं होती। यदि परिणाम के रूप में कुछ नहीं होता है और उसके पास एक प्रामाणिक बहाना है, तो वह अपवाद है!

दमिश्क धर्मोपदेश / छठा वचन - पृष्ठ 56

छठा शब्द

इस्लामी समाज में मुसलमानों की खुशहाली की कुंजी शरिया द्वारा निर्देशित आपसी सलाह-मशविरा है। आयत, स्वयं15

जिसका नियम है कि विभिन्न धर्मों के बीच परामर्श
करना एक बुनियादी सिद्धांत है। जिस तरह सदियों और युगों से मानव जाति ने इतिहास के माध्यम से विचारों के संयोजन के माध्यम से परामर्श किया है, उसी तरह मनुष्य की प्रगति और विज्ञान का आधार बना है, उसी तरह सबसे बड़े महाद्वीप एशिया के पिछड़ेपन का एक कारण उस सच्चे परामर्श का अभ्यास न करना था।

एशिया महाद्वीप और उसके भविष्य की कुंजी और प्रकटीकरण आपसी परामर्श है। यानी जिस तरह व्यक्तियों को एक दूसरे से परामर्श करना चाहिए, उसी तरह राष्ट्रों और महाद्वीपों को भी परामर्श करना चाहिए। क्योंकि यह शरिया के अनुसार स्वतंत्रता है, जो शरिया द्वारा बताए गए परामर्श से पैदा होती है, और विश्वास की उदारता और करुणा ही तीन सौ, बल्कि, चार सौ, मिलियन मजबूत इस्लाम के पैरों में बंधे विभिन्न प्रकार के अत्याचारों की बेड़ियों और जंजीरों को ढीला और हटा देगी। यह वह वैध स्वतंत्रता है जो शरिया के रीति-रिवाजों और पालन से सुसज्जित होकर, भ्रष्ट पश्चिमी सभ्यता की बुराइयों को दूर भगाएगी। शरिया से पैदा होने वाली स्वतंत्रता, जो विश्वास से उत्पन्न होती है, दो सिद्धांतों को निर्धारित करती है: विश्वास के लिए उत्पीड़न और निरंकुशता के माध्यम से दूसरों को अपमानित नहीं करना चाहिए और दूसरों को नीचा नहीं दिखाना चाहिए।

उन्हें,

____

15. कुरान, 42:38.

और दूसरा, अत्याचारियों के सामने खुद को अपमानित न करना। जो व्यक्ति ईश्वर का सच्चा सेवक है, वह दूसरों का गुलाम नहीं हो सकता। ईश्वर के अलावा किसी और को अपने ऊपर प्रभु न बनाओ। यानी जो व्यक्ति ईश्वर को नहीं पहचानता, वह हर चीज और हर किसी पर अपनी प्रभुता का सामर्थ्य रखता है और अपने सिर पर चिंताएं लादता है। बेशक, शरीयत से पैदा हुई आज़ादी सर्वशक्तिमान ईश्वर की कृपा है, जो उनके दयालु और दयावान नामों के माध्यम से प्रकट होती है; यह ईमान की एक विशेषता है।

सत्यवादिता अमर रहे! निराशा का नाश हो! प्रेम को कायम रहने दो! आपसी परामर्श को शक्ति मिलने दो!
जो लोग अपनी मर्जी और इच्छाओं का पालन करते हैं, उन्हें दोष, निंदा और घृणा का पात्र बनना चाहिए! और जो लोग सही मार्गदर्शन का पालन करते हैं, उन पर शांति और कल्याण हो! आमीन।
अगर यह पूछा जाए कि आप आपसी परामर्श को इतना महत्व क्यों देते हैं? और मानव जाति, विशेष रूप से एशिया और विशेष रूप से इस्लाम का जीवन और प्रगति आपसी परामर्श के माध्यम से कैसे प्राप्त की जा सकती है?

हम जवाब देंगे: जैसा कि रिसाले-ए-नूर के इक्कीसवें फ्लैश में बताया गया है, ईमानदारी पर ग्रंथ, चूंकि सिर्फ सलाह-मशविरा से ईमानदारी और एकजुटता पैदा होती है, इसलिए तीन 'अलिफ'16 एक सौ ग्यारह हो जाते हैं। इस प्रकार, तीन लोग जिनके बीच सच्ची एकजुटता है, वे राष्ट्र को सौ लोगों के बराबर लाभ पहुंचा सकते हैं। कई ऐतिहासिक घटनाएं हमें बताती हैं कि सच्ची ईमानदारी, एकजुटता और सलाह-मशविरे के परिणामस्वरूप, दस लोग एक हजार का काम कर सकते हैं।

मनुष्य की आवश्यकताएं अनंत हैं, उसके शत्रु असंख्य हैं, उसकी शक्ति और पूंजी नगण्य है, तथा शत्रुओं की संख्या भी नगण्य है।

____

16. अलिफ़: अरबी वर्णमाला का पहला अक्षर, जिसे एक ही ऊर्ध्वाधर स्ट्रोक `एलिफ़` से लिखा जाता है

धर्म के अभाव में राक्षस बन चुके विनाशकारी, हानिकारक मनुष्यों की संख्या बढ़ती जा रही है। इन अंतहीन शत्रुओं और असंख्य आवश्यकताओं के सामने मनुष्य केवल आस्था से प्राप्त सहायता और सहयोग के माध्यम से ही अपना व्यक्तिगत जीवन जारी रख सकता है, और केवल शरीयत द्वारा निर्धारित आपसी परामर्श के माध्यम से ही अपना सामाजिक जीवन बनाए रख सकता है, जो फिर से आस्था की सच्चाईयों से ही निकलता है। केवल इसी तरह वह अपने शत्रुओं को रोक सकता है और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए रास्ता खोल सकता है।

प्रथम परिशिष्ट

दमिश्क धर्मोपदेश के अरबी पाठ के परिशिष्ट का सारांश

दमिश्क धर्मोपदेश के अरबी परिशिष्ट में, ईश्वर में विश्वास से पैदा हुई अजेय नैतिक वीरता को वास्तव में सूक्ष्म तुलना के माध्यम से वर्णित किया गया था। यहाँ हम एक सारांश प्रस्तुत करेंगे

इसके बारे में जानें और इसे समझाएं।

द्वितीय संवैधानिक काल (1908-1918) की शुरुआत के करीब, मैं पूर्वी प्रांतों की ओर से सुल्तान रेसद के रुमेलिया दौरे में शामिल हुआ। ट्रेन की हमारी बोगी में दो दोस्तों के साथ चर्चा शुरू हुई जो नए धर्मनिरपेक्ष स्कूलों में पढ़ाते थे और विज्ञान में पारंगत थे।

उन्होंने मुझसे पूछा: "कौन सा अधिक आवश्यक है और मजबूत होना चाहिए, धार्मिक उत्साह या राष्ट्रीय उत्साह?" जिसके लिए मैंने उत्तर दिया: हमारे साथ मुसलमानों में धर्म और राष्ट्रीयता एक हैं, हालांकि एक सैद्धांतिक, स्पष्ट
और आकस्मिक अंतर है।

---

1. जून, 1911. [ट्र.]

उनके बीच अंतर। वास्तव में, धर्म राष्ट्र का जीवन और आत्मा है। जब उन्हें एक दूसरे से अलग और पृथक रूप में देखा जाता है, तो धार्मिक उत्साह आम लोगों और उच्च वर्गों दोनों को शामिल करता है, जबकि राष्ट्रीय उत्साह सौ में से एक व्यक्ति द्वारा महसूस किया जाता है, यानी वह व्यक्ति जो राष्ट्र के लिए अपने व्यक्तिगत लाभों का त्याग करने के लिए तैयार है। चूंकि यह मामला है, धार्मिक उत्साह

सभी लोगों के अधिकारों के संबंध में राष्ट्रीय भावना को आधार होना चाहिए, जबकि राष्ट्रीय उत्साह को इसकी सेवा करनी चाहिए और इसका गढ़ बनना चाहिए।

यह विशेष रूप से इसलिए है क्योंकि हम पूर्व के लोग पश्चिम के लोगों की तरह नहीं हैं: हमारे दिल धर्म की भावना से संचालित होते हैं। यह तथ्य कि यह पूर्व में ही था कि पूर्व-शाश्वत दिव्य निर्धारण ने अधिकांश पैगम्बरों को भेजा था, यह दर्शाता है कि केवल धर्म की भावना ही पूर्व को जागृत करेगी और इसे प्रगति के लिए प्रेरित करेगी। इसके लिए एक
ठोस तर्क पैगंबर मुहम्मद (PBUH) और उनके बाद आने वाले लोगों का युग है।

हे मेरे मित्रों, जो मेरे साथ इस चलती-फिरती रेलगाड़ी में पढ़ रहे हैं! तुमने मुझसे पूछा था कि किसको अधिक महत्व देना चाहिए, धार्मिक उत्साह को या राष्ट्रीय उत्साह को। और अब, तुम सब जिन्होंने सांसारिक शिक्षा प्राप्त की है और समय की रेलगाड़ी में मेरे साथ भविष्य की ओर यात्रा कर रहे हो! मैं तुमसे भी यही कहता हूँ: धार्मिक उत्साह और इस्लामी राष्ट्रवाद तुर्कों और अरबों में पूरी तरह से घुल-मिल गए हैं, और अब उन्हें अलग नहीं किया जा सकता। इस्लामी उत्साह एक चमकदार जंजीर है जो सबसे मजबूत और सुरक्षित है और इस दुनिया में पैदा नहीं हुई है। यह एक ऐसा सहारा है जो दृढ़ और निश्चित है,
और जो कभी नहीं टूटेगा। यह एक अजेय है

ऐसा किला जिसे ध्वस्त नहीं किया जा सकता।

जब मैंने यह बात उन दो प्रबुद्ध स्कूल शिक्षकों से कही, तो उन्होंने मुझसे कहा: "इसके लिए क्या सबूत है? इस तरह के महान दावे के लिए उतना ही बड़ा सबूत और शक्तिशाली सबूत चाहिए। सबूत क्या है?"

अचानक ट्रेन एक सुरंग से निकली। हमने खिड़की से सिर बाहर निकाला और देखा। हमने देखा कि एक बच्चा जो अभी छह साल का भी नहीं हुआ था, रेलवे लाइन के ठीक बगल में खड़ा था, जहाँ से ट्रेन गुजरने वाली थी। मैंने अपने दो शिक्षक मित्रों से कहा: देखो, यह बच्चा अपने व्यवहार से ही हमारे सवाल का जवाब दे रहा है। चलो, इस मासूम बच्चे को हमारे यात्रा स्कूल में मेरी जगह शिक्षक बनाओ। देखो, उसका व्यवहार निम्नलिखित सत्य को बयान कर रहा है:
आप देख सकते हैं कि बच्चा उस जगह से केवल एक मीटर की दूरी पर खड़ा है, जहाँ से यह भयानक राक्षस उस क्षण गुजरेगा, जब यह अपने बिल, सुरंग से बाहर निकलकर अपने भयानक हमले के साथ दहाड़ता हुआ निकलेगा।

हालाँकि वह दहाड़ रहा है और अपने जबरदस्त हमले से धमकी दे रहा है: "मेरे रास्ते में कोई भी आए तो सावधान हो जाओ!", मासूम बच्चा उसके ठीक बगल में खड़ा है। पूरे साहस, वीरता और आत्मा की स्वतंत्रता के साथ वह उसकी धमकियों को बिल्कुल भी महत्व नहीं देता। वह राक्षस के हमले के प्रति घृणा रखता है, और अपनी बचकानी वीरता के साथ कहता है: "अरे, रेलगाड़ी, तुम अपनी गड़गड़ाहट से मुझे नहीं डरा सकती!"

ऐसा लगता है जैसे वह अपने संकल्प और धैर्य के माध्यम से कह रहा है: "अरे, रेलगाड़ी, तुम एक व्यवस्था की कैदी हो! तुम्हारी लगाम और लगाम तुम्हें चलाने वाले के हाथ में है। मुझ पर हमला करना तुम्हारी शक्ति से बाहर है। तुम मुझे पकड़कर अपनी निरंकुशता के अधीन नहीं रख सकते। चले जाओ! अपने रास्ते पर चलो! अपने ड्राइवर के आदेश पर पटरी पर आगे बढ़ो!"

हे इस रेलगाड़ी में सवार मित्रों और पचास साल बाद विज्ञान की पढ़ाई कर रहे भाइयों! समय के साथ चलते हुए मान लीजिए कि ईरान के रुस्तम और ग्रीस के हरक्यूलिस अपनी प्रसिद्ध वीरता के साथ मासूम बच्चे की जगह पर होते। चूँकि उनके समय में रेलगाड़ियाँ नहीं थीं, इसलिए निश्चित रूप से यह विश्वास नहीं था कि रेलगाड़ियाँ नियमित रूप से चलती हैं, जैसा कि उनके समय में था।

एक प्रणाली। जब रेलगाड़ी अचानक अपने छेद, सुरंग से बाहर निकलती है, गड़गड़ाहट और आग उगलती है, उसकी आँखों में बिजली चमकती है, तो रुस्तम और हरक्यूलिस उसके खतरनाक हमले को देखते हुए एक तरफ भागते हैं!
वे दोनों नायक कितने भयभीत हो जाते हैं और भाग जाते हैं! अपनी सारी हिम्मत के बावजूद वे एक हजार मीटर से भी ज्यादा भाग जाते हैं।

तो देखिए, राक्षस के खतरे के सामने उनकी आज़ादी और साहस कैसे खत्म हो जाता है। वे भागने के अलावा कुछ नहीं कर सकते। उन्हें एहसास नहीं होता कि यह एक आज्ञाकारी घोड़ा है, क्योंकि वे इसके चालक और व्यवस्थित व्यवस्था पर विश्वास नहीं करते। वे इसे एक तरह का शेर समझते हैं जिसके पीछे गाड़ियों के आकार के बीस डरावने और हिंसक शेर लगे होते हैं।

हे मेरे भाइयों और मेरे दोस्तों, जो पचास साल बाद ये शब्द सुन रहे हैं! पाँच साल के बच्चे को जो चीज़ उन दो वीरों से ज़्यादा आज़ादी और हिम्मत देती है, और जो निडरता और आत्मविश्वास उनसे कहीं ज़्यादा है, वो है आस्था, भरोसा और विश्वास। रेलवे की व्यवस्था और व्यवस्था पर भरोसा, जो उस मासूम बच्चे के दिल में सच्चाई का बीज है। ये भरोसा कि ट्रेन की लगाम ड्राइवर के हाथ में है, कि उसकी चाल नियंत्रित है, कि कोई उसे अपने हिसाब से चला रहा है।

हालांकि जो बात दोनों नायकों को भयभीत करती है तथा उनके विवेक को भ्रम का कैदी बनाती है, वह है उनका अज्ञानतापूर्ण अविश्वास; यह तथ्य है कि वे ड्राइवर को नहीं जानते हैं तथा व्यवस्था और व्यवस्था में विश्वास नहीं करते हैं।

तुलना में मासूम बच्चे के विश्वास से जो वीरता पैदा हुई, वह इस्लामी लोगों में से कई जनजातियों - विशेष रूप से तुर्की और तुर्कीकृत जनजातियों - की वीरता के समान है, जिन्होंने अपने दिलों में निहित विश्वास और आस्था के कारण, एक हजार वर्षों तक सौ से अधिक राष्ट्रों और राष्ट्रों के सामने इस्लाम और उसकी संपूर्णता का झंडा बुलंद किया।

एशिया, अफ्रीका और आधे यूरोप के राज्य; जो हँसते हुए मौत का सामना करने गए और कहा: "अगर मैं मर गया, तो मैं शहीद हो जाऊंगा; अगर मैं हत्या करता हूं, तो मैं इस्लाम का समर्थक बनूंगा।"
सबसे पहले तुर्क और अरब, और सभी मुस्लिम लोगों ने, कभी भी डरे बिना, इस दुनिया में शत्रुतापूर्ण घटनाओं के अंतहीन सिलसिले और उस भयावह रेलगाड़ी के खतरों का सामना किया जो मनुष्य के व्यापक स्वभाव के लिए हानिकारक है, सूक्ष्म जीवों से लेकर धूमकेतुओं तक। विश्वास से उत्पन्न होने वाले ईश्वरीय निर्धारण और आदेश के प्रति समर्पण के माध्यम से, उन्होंने सबक लिया, और भय के स्थान पर ज्ञान और एक प्रकार की सांसारिक खुशी प्राप्त की

और भय। यह तथ्य कि, मासूम बच्चे की तरह, उन्होंने यह असाधारण वीरता दिखाई, यह दर्शाता है कि इस दुनिया में और परलोक में भविष्य का पूर्ण शासक इस्लाम राष्ट्र होगा।

इन दो तुलनाओं में उन दो अजीब नायकों के सच में अजीब डर, चिंता और बेचैनी का कारण उनका अविश्वास, उनकी अज्ञानता और उनका गुमराह होना था; एक सच्चाई जिसे रिसाले-ए-नूर सैकड़ों सबूतों के साथ साबित करता है। यह इस प्रकार है: अविश्वास और गुमराही गुमराह लोगों को एक ऐसा ब्रह्मांड दिखाती है जो पूरी तरह से भयानक दुश्मनों की श्रृंखला से बना है। सौर मंडल से लेकर तपेदिक के जीवाणुओं तक के हजारों अलग-अलग दुश्मन अंधे बल,
लक्ष्यहीन संयोग और बहरे स्वभाव के हाथों से दुर्भाग्यपूर्ण मानवता पर हमला कर रहे हैं।

मनुष्य के व्यापक स्वभाव, उसकी अंतहीन आवश्यकताओं और अनंत इच्छाओं के सामने, निरंतर भय, दर्द और चिंता, अविश्वास और गुमराही को नरक के रूप में प्रस्तुत करके; यह उन लोगों को जो इस संसार में रहते हुए भी इसका अनुसरण करते हैं, एक प्रकार के नरक में डाल देता है।

धर्म और दर्शन के बाहर सभी विज्ञान और मानव प्रगति

विश्वास का कोई मूल्य नहीं है, जैसे रुस्तम और हरक्यूलिस की वीरता। यह केवल इंद्रियों को सुन्न करने के लिए इंजेक्शन लगाने का काम करता है ताकि नशे और व्यभिचार के माध्यम से उन गंभीर भय को अस्थायी रूप से भुलाया जा सके।

इस प्रकार, एक ओर ईमान और अविश्वास परलोक में स्वर्ग और नरक जैसे फल और परिणाम देते हैं, और दूसरी ओर इस दुनिया में ईमान एक प्रकार का स्वर्ग सुनिश्चित करता है, और मृत्यु को कर्तव्य से मुक्ति में बदल देता है, जबकि अविश्वास इस दुनिया को एक प्रकार का नरक बना देता है, सच्ची मानवीय खुशी को नष्ट कर देता है और मृत्यु को अनंत शून्यता में बदल देता है। रिसाले-ए-नूर ने निश्चित अंतर्दृष्टि और प्रत्यक्ष ज्ञान पर भरोसा करते हुए सैकड़ों प्रमाणों के साथ इस सत्य को प्रदर्शित किया है। इसलिए, हम आपको उन्हीं का हवाला देते हैं और यहाँ चर्चा को संक्षिप्त करते हैं।

यदि आप इस तुलना में निहित सत्य को देखना चाहते हैं, तो अपना सिर ऊपर उठाएं और ब्रह्मांड की ओर देखें।
देखिए और समझिए कि रेलगाड़ी जैसे कितने वाहन हैं: गुब्बारे, कार, हवाई जहाज, भूमि और समुद्र के जहाज... सितारों के गोले, आकाशीय पिंड, घटनाओं और क्रमिक घटनाओं की श्रृंखलाएं जिन्हें पूर्व-शाश्वत शक्ति भूमि और समुद्र तथा अंतरिक्ष में क्रम, नियमितता, बुद्धिमत्ता और उद्देश्य के साथ बनाती है।

जिस किसी के पास बुद्धि और दृष्टि है, वह प्रकट दुनिया और भौतिक ब्रह्मांड में घटनाओं की इन शृंखलाओं में से अधिकांश को देख सकता है और उनके अस्तित्व की पुष्टि कर सकता है। इसी तरह, वे पुष्टि कर सकते हैं कि आत्मा और अमूर्त दुनिया में पूर्व-शाश्वत शक्ति द्वारा बनाई गई और भी अधिक अद्भुत क्रमिक घटनाएँ हैं।

इस प्रकार, ब्रह्मांड में घटनाओं की ये सभी भौतिक और अभौतिक श्रृंखलाएं अविश्वासी लोगों पर हमला करती हैं, उन्हें डराती हैं और गुमराह करती हैं; वे उनकी नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति को नष्ट कर देती हैं।
जबकि, आस्था रखने वाले लोगों को धमकाने और डराने की बजाय,

वे उन्हें खुशी और सांत्वना देते हैं, तथा उन्हें आशा और शक्ति देते हैं।
ऐसा इसलिए है क्योंकि ईमानवाले अपने ईमान के ज़रिए समझते हैं कि एक सर्वज्ञ निर्माता उन असंख्य घटनाओं की शृंखलाओं, भौतिक और अभौतिक रेलगाड़ियों और यात्रा करने वाले ब्रह्मांडों में से प्रत्येक को एक पूर्ण व्यवस्था, नियमितता, बुद्धि और उद्देश्य के भीतर अपने कार्यों को पूरा करने के लिए प्रेरित कर रहा है; वह उन्हें काम करने के लिए प्रेरित कर रहा है। वे अपने कर्तव्यों में एक भी बिंदु तक भ्रमित नहीं हैं, न ही वे एक दूसरे के खिलाफ़ उल्लंघन कर सकते हैं।

विश्वासी अपने विश्वास के माध्यम से देखते हैं कि ये घटनाएँ उनकी कला की पूर्णता और ब्रह्मांड में उनकी सुंदरता की अभिव्यक्तियाँ प्रदर्शित कर रही हैं। इस प्रकार विश्वास उन्हें सभी नैतिक शक्ति प्रदान करता है और शाश्वत खुशी का नमूना प्रस्तुत करता है।

फिर, कोई भी विज्ञान, कोई भी मानवीय प्रगति, गुमराह लोगों के अविश्वास से उत्पन्न होने वाली भयंकर पीड़ा और भय का सामना करने के लिए नैतिक शक्ति सुनिश्चित नहीं कर सकती, न ही उन्हें कोई सांत्वना दे सकती है। वे उनके साहस को नष्ट कर देते हैं, लेकिन अस्थायी रूप से उन पर उपेक्षा का पर्दा डाल देते हैं, जिससे वे धोखा खा जाते हैं।

ईमान वाले लोग अपने ईमान के कारण इन घटनाओं को भय और टूटी हुई नैतिक शक्ति के साथ नहीं बल्कि असाधारण शक्ति और धैर्य के साथ और ईमान में निहित सच्चाई के साथ देखते हैं, जैसे कि तुलना में मासूम बच्चा। वे एक सर्वज्ञ निर्माता की योजना और इच्छा को उसकी बुद्धि के दायरे में देखते हैं और भ्रम और भय से बच जाते हैं।

वे समझते हैं और कहते हैं: “यदि सर्वज्ञ निर्माता की आज्ञा और अनुमति न होती, तो ये यात्रा करने वाले ब्रह्मांड गति में नहीं रह सकते थे, वे कुछ भी नहीं कर सकते थे।” पूर्ण विश्वास के साथ, वे खुशी प्रकट करते हैं

इस दुनिया के जीवन में, प्रत्येक को उसकी डिग्री के अनुसार।
जब किसी व्यक्ति के हृदय और अंतःकरण में ईमान और सच्चे धर्म से पैदा सत्य का बीज मौजूद न हो, और वह उसका सहारा न हो, उसी तरह जैसे रुस्तम और हरक्यूलिस का साहस और वीरता तुलना में ढह गई, ऐसे व्यक्ति का साहस और मनोबल भी नष्ट हो जाएगा और उसका विवेक भी नष्ट हो जाएगा। वह ब्रह्मांड की सभी घटनाओं का कैदी बन जाएगा। वह हर चीज के सामने कांपता हुआ भिखारी बन जाएगा।

चूँकि रिसाले-ए-नूर ने ईमान के बारे में इस सच्चाई को तथा गुमराही से इस दुनिया में आने वाली भयंकर दुर्दशा को सैकड़ों निर्णायक प्रमाणों के साथ प्रदर्शित किया है, इसलिए हम यहाँ इस लम्बी और व्यापक सच्चाई को संक्षेप में प्रस्तुत करेंगे।

इस सदी में मनुष्य ने यह समझ लिया है कि उसकी सबसे बड़ी ज़रूरत नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति, सांत्वना और धैर्य है। इसलिए, उसके लिए इस समय इस्लाम और ईमान की सच्चाइयों को छोड़ देना, जो उसके लिए ज़रूरी नैतिक शक्ति, सांत्वना और खुशी का सहारा और सुरक्षा हैं, और इस्लामी राष्ट्रवाद से लाभ उठाने के बजाय, पश्चिमीकरण के बहाने गुमराही, भटकाव और झूठी राजनीति और कूटनीति पर भरोसा करना, जो सभी नैतिक शक्ति, सांत्वना और धैर्य को पूरी तरह से नष्ट और नष्ट कर देती हैं, मानवता के लिए किसी भी तरह के लाभ और मुनाफे से दूर हैं। वे मानवता के लाभ से कितनी दूर हैं, इसका एहसास सबसे पहले इस्लामी दुनिया और पूरी मानवता को होगा। वे इस सच्चाई से अवगत होंगे और, अगर इस दुनिया के लिए समय समाप्त नहीं हुआ है, तो वे कुरान की सच्चाइयों पर कायम रहेंगे।

प्रथम परिशिष्ट
दूसरा हिस्सा

जैसा कि ऊपर तुलना में बताया गया है, द्वितीय संवैधानिक काल की शुरुआत में, कई धार्मिक विचारधारा वाले प्रतिनिधियों ने ओल्ड सईद से कहा: "आप राजनीति को हर संभव तरीके से धर्म और शरीयत का साधन बनाते हैं और इसे धर्म की सेवा करने के लिए मजबूर करते हैं। आप केवल शरीयत के कारण स्वतंत्रता
का समर्थन करते हैं। और आप संविधानवाद का समर्थन करते हैं, जहाँ तक वह शरीयत के अनुरूप है। इसका मतलब है कि शरीयत के बिना किसी को स्वतंत्रता और संविधानवाद नहीं मिल सकता। यही कारण है कि उन्होंने आपको उन लोगों में शामिल किया है।

जिन्होंने 31 मार्च की घटना के दौरान कहा था, 'हम शरिया चाहते हैं।'
ओल्ड सईद ने उनसे कहा: "हाँ, इस्लाम की सच्चाईयों के ज़रिए ही इस्लाम समृद्ध और फलेगा-फूलेगा। इस्लामी समाज सिर्फ़ इस्लाम के शरिया के ज़रिए ही काम कर सकता है और उसकी सांसारिक खुशियाँ हासिल हो सकती हैं। अन्यथा न्याय गायब हो जाएगा, सार्वजनिक सुरक्षा खत्म हो जाएगी,

अनैतिकता और नीच गुण प्रबल होते हैं, और सब कुछ झूठे और चाटुकारों द्वारा चलाया जाता है। इस सत्य के हजारों में से एक छोटे से प्रमाण के रूप में, मैं आपके ध्यान के लिए निम्नलिखित कहानी प्रस्तुत करता हूँ: एक बार रेगिस्तान में, एक व्यक्ति एक खानाबदोश के यहाँ मेहमान था जो
वास्तविकता के लोगों में से एक था। उसने देखा कि रेगिस्तान में रहने वाले लोग अपने सामान की रखवाली करने की परवाह नहीं करते। उसके मेज़बान ने कमरे के कोने में कुछ पैसे भी खुलेआम छोड़े थे। मेहमान ने उससे पूछा: "क्या तुम्हें चोरों का डर नहीं है, जो तुम अपना सामान ऐसे ही कोने में फेंक रहे हो?"

उसके मेज़बान ने उत्तर दिया: “हमारे यहाँ कोई चोर नहीं है।”
अतिथि ने कहा: "हम अपना पैसा तिजोरियों में रखते हैं और उसे बंद कर देते हैं, लेकिन फिर भी वह अक्सर चोरी हो जाता है।"
उनके मेज़बान ने उनसे कहा: "हम ईश्वरीय आदेश और शरीयत के न्याय के कारण चोरों के हाथ काट देते हैं।"

इस पर अतिथि ने आश्चर्य से कहा: “तब तो आपमें से अधिकांश लोगों के पास हाथ नहीं होगा!”
उनके मेज़बान ने उनसे कहा: “मैं पचास साल का हूँ, और फिर भी मैंने अपने पूरे जीवन में केवल एक ही व्यक्ति को हाथ कटा हुआ देखा है।”

अतिथि को शर्मिंदगी महसूस हुई और उसने कहा: “हालाँकि हमारे देश में हम हर रोज़ चोरी के लिए पचास लोगों को जेल में डालते हैं, लेकिन यह आपके यहाँ के न्याय के मुकाबले सौवां हिस्सा भी प्रभावी नहीं है।”
मेज़बान ने कहा: "आप एक महत्वपूर्ण सत्य से अनभिज्ञ रहे हैं और एक अजीब और शक्तिशाली तथ्य को नज़रअंदाज़ किया है, जिसके परिणामस्वरूप सच्चा न्याय आपसे दूर हो गया है। सामान्य भलाई के स्थान पर, एक स्पष्ट न्याय के तहत, घृणा और दुष्ट और पक्षपातपूर्ण धाराएँ हस्तक्षेप करती हैं, जो निर्णयों के प्रभाव को नष्ट कर देती हैं। सच्चाई इस प्रकार है:

हमारे यहाँ चोर जब किसी दूसरे की सम्पत्ति छीनने के लिए हाथ बढ़ाता है तो उसे शरीयत की सज़ा याद आती है। उसे ईश्वरीय सिंहासन से उतरा हुआ आदेश याद आता है।
विश्वास की भावना और हृदय के कान के माध्यम से, वह मानो यह श्लोक सुनता है: चोर के लिए, चाहे वह पुरुष हो या महिला,
उसके हाथ काट दो,1
जो "चोर के हाथ की सज़ा" की मांग करता है, और उसका विश्वास और उच्च भावनाएँ कार्रवाई में जुट जाती हैं। उसकी आत्मा और उसके विवेक की गहराई से मन की एक ऐसी स्थिति पैदा होती है जो मानो चोरी करने की प्रवृत्ति पर हमला करती है। प्रवृत्ति, जो सहज आत्मा और वासना से उत्पन्न होती है, दबा दी जाती है और पीछे हट जाती है; धीरे-धीरे यह पूरी तरह से बुझ जाती है। क्योंकि न केवल मन और कल्पना, बल्कि आंतरिक क्षमताएँ, बुद्धि, हृदय और विवेक भी एक साथ उस इच्छा और भावना पर हमला करते हैं। शरीयत की सज़ा को याद करके चोर का विवेक उसे रोकता है और उसे रोकता है, उस इच्छा का सामना करता है और उसे चुप करा देता है।

जी हाँ, विश्वास हृदय और मन में एक स्थायी 'निषेधक' स्थापित कर देता है; जब पापपूर्ण इच्छाएँ आत्मा से निकलती हैं, तो यह उन्हें दूर कर देता है, तथा घोषित करता है: "यह निषिद्ध है!"
मनुष्य के कार्य उसके हृदय और भावनाओं के झुकाव से उत्पन्न होते हैं। वे आत्मा की संवेदनशीलता और उसकी आवश्यकताओं से आते हैं। विश्वास के प्रकाश के माध्यम से आत्मा को कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाता है।
अगर कोई काम अच्छा है, तो वह उसे करता है; अगर वह बुरा है, तो वह खुद को रोकने की कोशिश करता है। अंध भावनाएं उसे गलत रास्ते पर नहीं ले जाएंगी और उसे हरा नहीं पाएंगी।
संक्षेप में: जब दण्ड ईश्वरीय आदेश और न्याय के नाम पर दिया जाता है।

प्रभुतापूर्ण न्याय, आत्मा, बुद्धि और विवेक, और

---

1. कुरान, 5:38.

मनुष्य की जन्मजात सूक्ष्म क्षमताएँ प्रभावित और प्रभावित होती हैं। यही कारण है कि

पचास साल में एक बार की सज़ा, हर रोज़ बहुत से लोगों को जेल में डालने से ज़्यादा कारगर है। तुम्हारी सज़ाएँ सिर्फ़ तुम्हारी कल्पनाओं को प्रभावित करती हैं, क्योंकि जब तुममें से कोई चोरी करने का फ़ैसला करता है, तो देश और क़ौम और उसके फ़ायदों की खातिर सज़ा भुगतना उसे काल्पनिक लगता है; या वह सोचता है कि अगर दूसरे लोग जान जाएँगे तो उसकी निंदा करेंगे; या उसे लगता है कि अगर यह सब बुरा हुआ तो सरकार उसे जेल भेज देगी। तो सिर्फ़ उसकी कल्पना शक्ति को थोड़ी तकलीफ़ होती है। और उसकी सहज आत्मा और भावनाओं से निकलने वाली शक्तिशाली इच्छा - ख़ासकर अगर वह ज़रूरतमंद भी हो - उस पर हावी हो जाती है। तब सज़ा उसे बुरे काम करने से रोकने में बेअसर हो जाती है। वैसे भी, चूँकि वे ईश्वरीय आदेश नहीं हैं, इसलिए सज़ाएँ न्याय नहीं हैं। वे व्यर्थ और निरर्थक हैं जैसे बिना वुज़ू किए और क़िबला की ओर मुँह किए बिना नमाज़ पढ़ना। यानी सच्चा न्याय और प्रभावी सज़ाएँ वे हैं जो ईश्वरीय आदेश के अनुसार हों और उसके नाम पर निष्पादित की जाएँ।

अन्य का प्रभाव बहुत कम हो सकता है।

अन्य सार्वभौमिक और सर्वव्यापी ईश्वरीय आदेशों की तुलना चोरी के इस छोटे से प्रश्न से की जा सकती है, ताकि यह समझा जा सके कि इस संसार में मनुष्य की खुशी और कल्याण न्याय के द्वारा ही संभव है। जहाँ तक न्याय का प्रश्न है, तो वह कुरान द्वारा दिखाए गए मार्ग पर सीधे अमल करके ही प्राप्त किया जा सकता है।

(यह कहानी के सारांश का अंत है)

* * *

मेरे दिल में यह बात बैठा दी गई कि अगर मानव जाति जल्दी से अपने होश में नहीं आती और न्याय के नाम पर अदालतें नहीं खोलती

ईश्वरीय न्याय और इस्लाम की सच्चाई के अनुसार, भौतिक और अभौतिक दोनों प्रकार की विपत्तियां लोगों के सिर पर टूट पड़ेंगी और वे अराजकता और अराजकता के आगे आत्मसमर्पण कर देंगे।

ओल्ड सईद ने उपरोक्त कहानी उस समय के कुछ धार्मिक प्रतिनिधियों को सुनाई थी, और इसे पैंतालीस साल पहले दमिश्क धर्मोपदेश के परिशिष्ट में शामिल किया गया था।

अब, चूंकि यह कहानी और पिछली तुलना उस समय के बजाय वर्तमान समय के लिए प्रासंगिक शिक्षा है, इसलिए हम इसे उन प्रतिनिधियों के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं जो ईमानदारी से धर्म का समर्थन करते हैं, ताकि वे इस पर ध्यान दें।

एस सहायता एन भालू

---

2. चूँकि हम अरबी नहीं जानते, इसलिए हमने उस्ताद से अनुरोध किया कि वे हमें अपने अरबी ग्रंथ के बारे में सिखाएँ, जो दमिश्क उपदेश (हुतबे-ए-शामिये) के नाम से प्रकाशित हुआ था। उन्होंने कई दिनों तक ऐसा किया और हमने जो कुछ कहा, उसे लिख लिया। वे जो कुछ सिखाते थे, उसे दोहराते थे ताकि वे हमारे दिमाग में बैठ जाएँ। हमें कहानी और अंत में तुलना प्रश्न को समझाने में उपयोगी लगी। और हमने उन्हें क्यों पेश किया है, इसका कारण भी।

सबसे पहले विश्वविद्यालयों के सदस्यों और धर्म का समर्थन करने वाले प्रतिनिधियों के ध्यान के लिए क्योंकि जब उस्ताद [बेदीउज्जमां सईद नूरसी] ने इस विषय को समझाना शुरू किया, तो उन्होंने कहा: "मैं आपको रेलवे ट्रेन में आधुनिक स्कूलों के दो शिक्षकों की जगह पर रखता हूं, और वर्तमान समय के ईमानदार धार्मिक प्रतिनिधियों को पैंतालीस साल पहले के प्रतिनिधियों की जगह पर रखता हूं जिन्होंने शरीयत के बारे में सवाल पूछा था।" अगर वे चाहें तो हम उन्हें दमिश्क उपदेश के बारे में अपने सभी नोट्स दिखा सकते हैं, और अगर ज़रूरत हो तो हम उन्हें प्रकाशित कर सकते हैं।

हम चाहते थे कि उस्ताद हमें इस्लामी दुनिया की राजनीति के बारे में सिखाएँ। लेकिन चूँकि उन्होंने पैंतीस साल पहले ही राजनीति छोड़ दी थी, इसलिए उन्होंने हमें ओल्ड सईद के दमिश्क उपदेश का यह अनुवाद समझाया, जो इस्लामी राजनीति को छूता है। यह ओल्ड सईद के कारण एक सबक है।

हस्ताक्षरित: उनके छात्र, ताहिरी, ज़ुबेर, बेराम, सीलन, सुंगुर, अब्दुल्ला, ज़िया, सादिक, हुस्नु, हमज़ा

प्रथम परिशिष्ट
तीसरा भाग

[परिशिष्ट के इस भाग में बेदिउज़्ज़मान सईद नूरसी द्वारा बयालीस वर्ष पहले लिखे गए समाचार-पत्र लेख शामिल हैं।]

शानदार शरीयत अमर रहे!

वोलकन नं: 73 21

सेफ़र 1327/ 1 मार्च 1325/ 14 मार्च 1909

विधानसभा के प्रतिनिधिगण!

मैं एक वाक्य लिखने जा रहा हूँ, जो बहुत लंबा होने के बावजूद भी बहुत संक्षिप्त है। इस पर ध्यान दें, क्योंकि इसकी लंबाई में संक्षिप्तता है। यह है: यदि आप न्याय, आपसी परामर्श और कानून की शक्ति के प्रतिबंध के लिए शानदार शरीयत की उपाधि लागू करते हैं जो संविधान
और संविधानवाद है, और इसे अपने फैसलों के लिए अधिकार बनाते हैं और इसके सिद्धांतों को लागू करते हैं, तो आप क्या खो देंगे? क्योंकि यह इस शानदार, प्रभावी उपाधि का सच्चा और सही मालिक है और इसमें निम्नलिखित कई लाभ शामिल हैं: यह है

पूर्ण न्याय का स्रोत; हमें एक सुनिश्चित समर्थन प्रदान करता है; संविधानवाद को एक मजबूत आधार पर स्थापित करता है; संदिग्ध और चिंतित लोगों को उनके भ्रम के रसातल से बचाता है; इस दुनिया में हमारे भविष्य और अगले में हमारे जीवन की गारंटी देता है; 'दैवीय अधिकार', यानी जनता के अधिकारों को गलत शोषण से बचाता है; हमारे राष्ट्रीय जीवन की रक्षा करता है; सभी मनों को आकर्षित करता है और पश्चिमी लोगों को हमारी स्थिरता, परिपक्वता और अस्तित्व का प्रदर्शन करता है; आपको इस दुनिया और अगले में जवाबदेह होने से बचाता है;
उद्देश्य और परिणाम की एकमतता स्थापित करता है; जनमत, आम सहमति की भावना को जन्म देता है; सभ्यता की भ्रष्ट बुराइयों को दुनिया में प्रवेश करने से रोकता है।

स्वतंत्रता और हमारी सभ्यता की सीमाओं को सुरक्षित रखता है; हमें यूरोप के सामने भीख मांगने से बचाता है; चमत्कार के रहस्य के माध्यम से, थोड़े समय में हमें प्रगति की उस लंबी दूरी को पार कराता है जिसमें हम पीछे रह गए हैं; थोड़े समय में अरब, तुर्क, फारसी और सेमाइट को एकजुट करके हमारे लिए बहुत महत्व प्राप्त करता है; सरकार के सामूहिक व्यक्तित्व को मुस्लिम दिखाता है; संविधान और अनुच्छेद ग्यारह की भावना को संरक्षित करके, आपको झूठी गवाही देने से बचाता है; झूठ को झूठ का रूप देता है

हमारे बारे में यूरोप की पुरानी गलत धारणाओं को समाप्त करता है; यह पुष्टि करता है कि मुहम्मद (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) पैगंबरों की मुहर है और शरीयत शाश्वत है; हमारे खिलाफ एक बाधा बनाता है

अधर्म, सभ्यता का विनाशक है; अपने उज्ज्वल चेहरे के साथ, यह संघर्ष और विचारों की उलझन के अंधकार को समाप्त करता है; सभी धार्मिक विद्वानों और उपदेशकों को एकजुट करता है और उन्हें राष्ट्र की खुशी में सहायता करने के लिए प्रेरित करता है, और सरकार और उसकी गतिविधियों को वैध संवैधानिकता की सेवा करने के लिए प्रेरित करता है; क्योंकि इसका पूर्ण न्याय दयालु है, सामंजस्य स्थापित करता है और एक बड़े बंधन में बांधता है।

---

1. संविधान का अनुच्छेद 11: "प्रत्येक ओटोमन अपने धर्म का पालन करने के लिए स्वतंत्र है, केवल इस शर्त पर कि सार्वजनिक व्यवस्था या अच्छे नैतिकता का कोई उल्लंघन नहीं किया जाता है।" [ट्र.]

गैर-मुस्लिम अल्पसंख्यकों को अधिकार प्रदान करता है; सबसे कायर व्यक्ति में भी सबसे बहादुर व्यक्ति के समान प्रगति, आत्म-बलिदान और देशभक्ति की सच्ची भावनाएँ भरता है, तथा सबसे सामान्य व्यक्ति में भी सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति के समान ही प्रेरणा देता है; हमें बुराई, अपव्यय और अनावश्यक आवश्यकताओं से बचाता है, जो सभी सभ्यता को नष्ट करते हैं; इस दुनिया को विकसित करने के साथ-साथ परलोक को बचाने के द्वारा प्रयास करने की प्रेरणा देता है; अच्छे आचरण और उच्च भावनाओं के सिद्धांतों, सभ्यता के जीवन की शिक्षा देता है; आपमें से प्रत्येक प्रतिनिधि को, जो आपसे अपने अधिकारों की माँग कर रहे हैं, पचास हज़ार लोगों में से बरी करता है; आपको उम्मा की सहमति का एक छोटा, वैध नमूना दिखाता है; शुद्ध इरादे के कारण आपके सभी कार्यों को पूजा में बदल देता है; और आपको तीन अरब मुसलमानों के आध्यात्मिक जीवन के विरुद्ध आपराधिक षड्यंत्र से बचाता है; -जबकि इसमें इतने लाभ शामिल हैं, तो आप क्या खो देंगे यदि आप संविधानवाद पर शरीयत का शीर्षक लागू करते हैं?

शानदार शरीयत अमर रहे!

एस सहायता एन भालू

मुहम्मद का शरीयत अमर रहे!
(उन पर आशीर्वाद और शांति हो)

वोल्कन नं. 77 25

सफ़र 1327/5 मार्च 1325/18 मार्च 1909

चूँकि शानदार शरिया पूर्व-शाश्वत ईश्वरीय वाणी से आगे बढ़ता है, इसलिए यह अनंत काल तक जारी रहेगा। दुष्ट-आदेश देने वाली आत्मा के घृणित अत्याचार से हमारा उद्धार इस्लाम पर भरोसा करके, उस 'सबसे मजबूत रस्सी' को मजबूती से पकड़कर होता है। हम विश्वास से मदद मांगकर सच्ची स्वतंत्रता से पूरी तरह लाभान्वित हो सकते हैं। क्योंकि जो वास्तव में दुनिया के निर्माता का गुलाम और सेवक है, वह उसके प्राणियों की पूजा करने के लिए नीचे नहीं गिरेगा। हर कोई अपनी दुनिया में एक कमांडर है और इसलिए उस पर 'महान जिहाद' का आरोप है, जिसमें मुहम्मद (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) की नैतिकता को अपनाना और उनके व्यवहारों को जीवन में उतारना शामिल है।

इस देश के शासकों! यदि आप सफलता चाहते हैं, तो ईश्वरीय नियमों का पालन करें! अन्यथा आप असफल हो जाएंगे। यह तथ्य कि सभी ज्ञात पैगम्बर इस्लाम और ओटोमन की भूमि पर प्रकट हुए, ईश्वरीय निर्धारण का संकेत है कि इस देश के लोगों की प्रगति के इंजन की भाप धर्म है। एशिया, अफ्रीका और रुमेलिया के इन खेतों के फूल इस्लाम के प्रकाश से उगेंगे और फलेंगे-फूलेंगे।

इस दुनिया की खातिर धर्म की बलि नहीं दी जा सकती। एक समय में शरिया के मामले अब खत्म हो चुकी निरंकुशता को बचाए रखने के लिए रिश्वत के तौर पर दिए जाते थे।

क्या धर्म के मामलों को त्यागने और बलिदान करने से नुकसान के अलावा कुछ और हुआ? इस देश का हृदय रोग धर्म में कमजोरी है; इसे मजबूत करके यह अपना स्वास्थ्य पुनः प्राप्त करेगा।
हमारे समाज का तरीका प्यार के बदले प्यार और दुश्मनी के बदले दुश्मनी है। यानी मुसलमानों के बीच प्यार को बढ़ावा देना और दुश्मनी के सैनिकों को खदेड़ना।
हमारा तरीका भी मुहम्मद (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) की नैतिकता को अपनाना और उनके आचरण को पुनर्जीवित करना है। हमारा मार्गदर्शक शानदार शरीयत है, हमारी तलवार इसके निर्णायक प्रमाण हैं, और हमारा उद्देश्य ईश्वर के वचन को कायम रखना है। सभी आस्तिक हमारे समाज के अर्थपूर्ण सदस्य हैं, जबकि औपचारिक सदस्यता का अर्थ है अपने संसार में पैगंबर के आचरण को जीवन में लाने के लिए दृढ़ प्रयास करना। सबसे पहले, शरीयत के नाम पर, हम धार्मिक विद्वानों, शेखों और धार्मिक स्कूलों के छात्रों से, जो आम जनता के मार्गदर्शक हैं, एकजुट होने का आह्वान करते हैं।

एस सहायता एन भालू

दमिश्क धर्मोपदेश / प्रथम परिशिष्ट / तीसरा भाग - पृष्ठ 77

एक चेतावनी

दो झूठी तुलनाओं से पत्रकारों, सार्वजनिक वक्ताओं ने इस देश को दलदल में धकेल दिया है।
पहला तरीका है प्रांतों की तुलना इस्तांबुल से करना। लेकिन अगर दर्शनशास्त्र उन बच्चों को पढ़ाया जाए जो अभी पढ़ नहीं सकते, तो जो पढ़ाया जाएगा वह सतही होगा...
दूसरा: उन्होंने इस्तांबुल की तुलना यूरोप से की है। लेकिन अगर कोई पुरुष महिलाओं के लिए उपयुक्त परिधान पहनता है, तो वह हास्यास्पद हो जाता है और उपहास का पात्र बन जाता है।

एस सहायता एन भालू

दमिश्क धर्मोपदेश / प्रथम परिशिष्ट / तीसरा भाग - पृष्ठ 78

वास्तविकता

वोल्कन नं: 70

18 सफ़र 1327/26 फरवरी 1324/11 मार्च 1909

हम उस समय से ही इत्तिहाद-ए मुहम्मदी (मुस्लिम संघ) (जिस पर आशीर्वाद और शांति हो) के सदस्य हैं, जब से मनुष्य ने अनंत काल में ट्रस्ट का कार्यभार संभाला था।2 हमारी एकता का कारण ईश्वरीय एकता है; हमारी शपथ और प्रतिज्ञा विश्वास है; हम एकजुट हैं क्योंकि हम ईश्वरीय एकता की पुष्टि करते हैं। सभी विश्वासियों पर ईश्वर के वचन को कायम रखने का दायित्व है, और इस समय ऐसा करने का सबसे प्रभावी साधन भौतिक प्रगति है। क्योंकि यूरोपियन हमें विज्ञान और उद्योग के हथियारों से अपने अत्याचार के तहत कुचल रहे हैं। इसलिए हम विज्ञान और उद्योग के हथियारों से अज्ञानता, गरीबी और परस्पर विरोधी विचारों के खिलाफ जिहाद छेड़ेंगे, जो ईश्वर के वचन को कायम रखने के सबसे बुरे दुश्मन हैं।

जहाँ तक बाहरी जिहाद का सवाल है, हम इसे शानदार शरीयत के निर्णायक सबूतों के हवाले से देखेंगे। क्योंकि सभ्य लोगों पर विजय पाने के लिए अनुनय-विनय की ज़रूरत होती है, न कि बल प्रयोग से, जैसे कि वे जंगली लोग हों जिन्हें कुछ भी समझ नहीं। हम प्रेम के भक्त हैं, हमारे पास दुश्मनी के लिए समय नहीं है।
गणतंत्रवाद3 में न्याय, पारस्परिक परामर्श और सत्ता को कानून तक सीमित रखना शामिल है।
शानदार शरिया की स्थापना तेरह शताब्दियों पहले हुई थी, इसलिए कानून के मामले में यूरोप के सामने भीख मांगना एक बड़ा अपराध है।

---

2. "कालू बाला।" देखें, कुरान, 7:172. [ट्र.]
3. उस समय यह 'संविधानवाद' था, अब यह 'गणतंत्रवाद' है।

इस्लाम धर्म। यह प्रार्थना करते समय उत्तर की ओर मुख करके बैठने जैसा है। शक्ति कानून में होनी चाहिए, अन्यथा मनमाना शासन फैल जाएगा। "अल्लाह ही सबसे शक्तिशाली, सबसे दृढ़ है" कहावत विवेक पर शासन करनी चाहिए। यह सामान्य शिक्षा और व्यापक सभ्यता के माध्यम से या इस्लाम धर्म के नाम पर संभव है। अन्यथा निरंकुशता हमेशा प्रबल रहेगी।

एकता ईश्वरीय मार्गदर्शन से प्राप्त की जा सकती है, व्यक्तिगत सनक और इच्छाओं से नहीं।
लोग आज़ाद हैं, लेकिन वे अभी भी भगवान के गुलाम हैं। अब सब कुछ आज़ाद है; शरीयत आज़ाद है, संविधानवाद आज़ाद है। हम शरीयत के मामलों को रिश्वत के तौर पर नहीं देंगे। दूसरों की गलतियों को अपनी गलतियों का आधार और बहाना नहीं बनाना चाहिए।

निराशा सभी उपलब्धियों में बाधा है। कहावत: "इससे मेरा क्या लेना-देना, दूसरों को सोचने दो" निरंकुशता की निशानी है। मुझे नहीं पता कि इन वाक्यों को आपस में जोड़ने के लिए क्या करना चाहिए क्योंकि मैं तुर्की भाषा नहीं जानता, और इसे पाठकों पर छोड़ता हूँ।

एस सहायता एन भालू

सत्य की आवाज़

वोल्कन नं: 86
5 रेबियुलेवेल 1327/ 14 मार्च 1325/ 27 मार्च 1909

मुहम्मद (सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम) का मार्ग सभी संदेहों और छल-कपट से मुक्त है, और इसलिए वह उन चीज़ों को छिपाने की अनुमति नहीं देता जो संदेह और छल-कपट का संकेत देती हैं। वैसे भी, इतना बड़ा, व्यापक, सर्वव्यापी सत्य किसी भी तरह से छिपाया नहीं जा सकता था, खासकर इस समय के लोगों से। घड़े में सागर कैसे छिपाया जा सकता है?

मैं दोहराता हूँ: इत्तिहाद-ए-मुहम्मदी (मुहम्मद संघ) की एकता का साधन, जो वास्तव में इस्लामी एकता है, ईश्वरीय एकता है। इसकी शपथ और प्रतिज्ञा विश्वास है। इसकी संस्थाएँ और परिषदें मस्जिदें, धार्मिक विद्यालय और सूफी सभा-स्थल हैं। इसकी सदस्यता में सभी विश्वासी शामिल हैं।

इसके नियम पैगंबर (PBUH) के आचरण हैं। इसके कानून शरीयत के आदेश और निषेध हैं। यह संघ संख्या से नहीं बल्कि उपासना से बना है।

डरना और डर पैदा करना दोनों ही पाखंड हैं, लेकिन धर्म के अनिवार्य कार्यों को करने में कोई पाखंड नहीं है। वर्तमान समय में सबसे महत्वपूर्ण अनिवार्य कार्य इस्लामी एकता है।

जबकि एकता [या मुहम्मदी संघ] का उद्देश्य और लक्ष्य उस लंबी, अनेक शाखाओं वाली, दूरगामी चमकदार श्रृंखला को जीवित करना है जो इस्लाम के केंद्रों और उनके पूजा स्थलों को एक साथ बांधती है, इससे बंधे लोगों को जागृत करना और इसके माध्यम से

उनकी अंतरात्मा की इच्छाएं और प्रेरणाएं उन्हें प्रगति के मार्ग पर ले जाती हैं।
इस संघ का मार्ग प्रेम है; इसकी शत्रुता केवल अज्ञानता, गरीबी और कलह के लिए है। गैर-मुसलमानों को यह विश्वास होना चाहिए कि यह संघ केवल इन्हीं तीन तथ्यों पर आक्रमण करता है। गैर-मुसलमानों के प्रति हमारे कार्य केवल अनुनय-विनय तक सीमित हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि वे सभ्य हैं। और हम मानते हैं कि वे निष्पक्ष हैं-

इसलिए हमें यह प्रदर्शित करना चाहिए कि इस्लाम प्यारा और श्रेष्ठ है। लापरवाह और लापरवाह लोगों को यह पता होना चाहिए कि वे अधार्मिक होकर यूरोपीय लोगों के साथ खुद को खुश नहीं कर सकते, क्योंकि वे केवल यह दिखाते हैं कि वे सिद्धांतहीन हैं। और कोई भी सिद्धांतहीनता और अराजकता को पसंद नहीं करता। जो लोग उचित जांच के बाद इस संघ में शामिल होते हैं, वे ऐसे लोगों की अंधी नकल करके इसे नहीं छोड़ेंगे। हम मुहम्मदन संघ के विचारों, तरीके और वास्तविकता को जनता के सामने पेश करते हैं, जो इस्लामी एकता है। अगर किसी को कोई आपत्ति है, तो वह उसे आवाज़ दे; हम उसका जवाब देने के लिए तैयार हैं।

दुनिया के सारे शेर इसी जंजीर से बंधे हैं;
क्या लोमड़ी इसे छल से चबा सकती है?

एस सहायता एन भालू

मैंने अपने उद्देश्यों के कार्यक्रम का एक हिस्सा छोड़ दिया था, जिसे मैंने प्रकाशित किया था4

आधुनिक शिक्षा का एक चैनल, जो बाहर से आता है, उसमें धार्मिक स्कूलों के कुछ सदस्य होने चाहिए, ताकि इसे द्वेष और घृणा से शुद्ध किया जा सके। दूसरे चैनल से आने के कारण यह प्रदूषित और धुंधला है। इसने कुछ दिमागों पर नकारात्मक प्रभाव डाला है, जो आलस्य के दलदल से उत्पन्न अत्याचार से पीड़ित हैं और निरंकुशता के जहर से सांस लेते हैं; इसलिए इसे शरीयत के फिल्टर से गुजरना होगा। धार्मिक विद्वानों के प्रयासों से इसे बदला जा सकता है।

शांति उन पर हो जो सही मार्ग पर चलते हैं।

एस सहायता एन भालू

---

4. देखें, वोल्कन, संख्या: 83, 84. [ट्र.]

किसी भी भय को दूर करने के लिए

वोल्कन नं: 90
9 रेबियुलेवेल 1327/ 18 मार्च 1325/ 31 मार्च 1909

मैं इत्तिहाद-ए-मुहम्मदी (मुहम्मडन यूनियन) के बारे में व्यक्त की गई नौ निराधार आशंकाओं का उत्तर दूंगा।

प्रथम भय: वर्तमान जैसे संवेदनशील समय में धर्म का प्रश्न उठाना अनुचित है।

उत्तर: हम धर्म से प्रेम करते हैं, और हम धर्म के लिए इस संसार से प्रेम करते हैं। "धर्म के बिना इस संसार में कुछ भी अच्छा नहीं है।"

दूसरा: चूंकि संवैधानिकता में संप्रभुता राष्ट्र की होती है, इसलिए राष्ट्र के अस्तित्व को प्रदर्शित करना होता है, और हमारा राष्ट्र केवल इस्लाम है। अरब, तुर्क, कुर्द, अल्बानियाई, सर्कसियन और लाज़ का सबसे मजबूत बंधन और उनकी सबसे मजबूत राष्ट्रीयता, इस्लाम के अलावा और कुछ नहीं है। एक हज़ार तीन सौ साल पहले खत्म हो चुके अज्ञान के युग की पक्षपातपूर्णता और कबीलाईवाद के पुनरुत्थान के माध्यम से भड़काई गई लापरवाही और संघर्ष के कारण राज्यों की एक श्रृंखला की नींव रखी जा रही है। हमने यह देखा है।

दूसरा जी गोल रहित एफ कान: विशेष रूप से इस नाम का उपयोग करके आप गैर-सदस्यों को अलार्म और चिंता महसूस करते हैं?

उत्तर: मैंने इसे पहले भी समझाया है, लेकिन क्योंकि

इसे पढ़ा नहीं गया है या इसे गलत समझा गया है, मैं इसे दोहराने के लिए बाध्य हूं। यह इस तरह है: जब हम इत्तिहाद-ए मुहम्मदी (मुहम्मद संघ) कहते हैं, जो इस्लामी एकता है, तो इसका मतलब सभी विश्वासियों के बीच एकता है, चाहे वह संभावित हो या वास्तविक। यह इस्तांबुल और अनातोलिया के समाज को संदर्भित नहीं करता है। पानी की एक बूंद भी पानी है। इस शब्द को विशिष्ट नहीं माना जा सकता है। इसकी सही परिभाषा इस प्रकार है: इसकी नींव पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक फैली हुई है; इसका केंद्र मक्का और मदीना के पवित्र स्थान हैं; इसकी एकता का बिंदु ईश्वरीय एकता है; इसकी शपथ और प्रतिज्ञा विश्वास है; इसके नियमों की संहिता, पैगंबर (PBUH) के अभ्यास; इसके कानूनों की संहिता, शरीयत के आदेश और निषेध; समाज का
शाश्वत प्रेस अंग सभी इस्लामी पुस्तकें हैं, और इसका स्थायी अंग सबसे पहले कुरान और सभी कुरानिक टिप्पणियां हैं (और इस समय, रिसाले-ए-नूर, जो कुरानिक टिप्पणी है), साथ ही सभी उदार धार्मिक पत्र और पत्रिकाएं जिनका उद्देश्य ईश्वर के वचन को कायम रखना है; इसकी सदस्यता सभी विश्वासियों से बनी है; और इसका नेता विश्व की महिमा (PBUH) है।

अब हम जो चाहते हैं वह है विश्वासियों की जागृति और ध्यान, क्योंकि जनता के ध्यान का प्रभाव निर्विवाद है। संघ और उसके उद्देश्य का उद्देश्य ईश्वर के वचन को कायम रखना है, और इसका तरीका अपनी आत्मा से 'बड़ा जिहाद' छेड़ना और दूसरों का मार्गदर्शन करना है। इस धन्य समाज के 99 प्रतिशत प्रयास राजनीतिक नहीं हैं। वे बल्कि अच्छे नैतिकता और संयम की ओर उन्मुख हैं, जो राजनीति और अन्य वैध उद्देश्यों के विपरीत हैं। बहुत कम समाजों ने इसे अपने कार्य के रूप में अपनाया है, हालाँकि इसका मूल्य और महत्व बहुत अधिक है। इसके सौ सदस्यों में से केवल एक ही ऐसा है

राजनेताओं को मार्गदर्शन प्रदान करने के माध्यम से राजनीति से जुड़ेंगे। उनकी तलवारें निर्णायक सबूत हैं। और जिस तरह उनका मार्ग प्रेम है, उसी तरह वे विश्वासियों के बीच भाईचारे के बीज में शामिल प्रेम को तूबा के पेड़ की तरह बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

पांचवां प्रश्न : क्या ऐसी सम्भावना नहीं है कि यूरोपियन लोग इससे परेशान हो जाएंगे?

उत्तर: जो लोग इसे एक संभावना मानते हैं, वे खुद परेशान हैं। क्योंकि यूरोपीय लोग अपने व्याख्यानों में इस्लाम की प्रशंसा करते हैं और अपनी कट्टरता के केन्द्र में इसकी श्रेष्ठता का वर्णन करते हैं, जिससे इसका खंडन होता है। इसके अलावा, वे हमारे दुश्मन नहीं हैं; वास्तव में हमें इस पतन की ओर ले जाने वाला कारण शरीयत का विरोध है, जो अज्ञानता का परिणाम है, जो हमें ईश्वर के वचन को बनाए रखने से रोकता है; और गरीबी और उसके अनैतिकता और बुरे आचरण के परिणाम; और संघर्ष और उसके झगड़े और घृणा के उत्पाद; हमारे संघ के हमले इन तीन दुश्मनों पर लक्षित हैं।

मध्य युग में, इस्लाम को यूरोपीय लोगों की बर्बरता के सामने कट्टर और शत्रुतापूर्ण होने के लिए मजबूर होना पड़ा, लेकिन फिर भी इसने अपना न्याय और संयम बनाए रखा। इसने कभी भी जांच और इस तरह की अन्य चीजें नहीं कीं। आधुनिक सभ्यता के इस समय में, यूरोपीय लोग सभ्य और शक्तिशाली हैं, और इसलिए हानिकारक शत्रुता और कट्टरता गायब हो गई है। धर्म के संबंध में, सभ्य लोगों को बल के माध्यम से नहीं, बल्कि अनुनय के माध्यम से जीता जाना चाहिए, और कार्यों और आचरण में इसके आदेशों का पालन करके यह दिखाना चाहिए कि इस्लाम ऊंचा और प्यारा है। बल और शत्रुता केवल बर्बर लोगों की बर्बरता का मुकाबला करने के लिए है।

5. यह बिस्मार्क, कार्लाइल और अन्य लोगों द्वारा दिए गए व्याख्यानों का संकेत है।

कुछ लोग कहते हैं कि इस्लामी एकता, जिसका उद्देश्य पैगंबर (PBUH) के कार्यों को लागू करना है, स्वतंत्रता को सीमित करता है और सभ्यता की आवश्यकताओं के विपरीत है।

उत्तर: सच्चा आस्तिक वास्तव में स्वतंत्र है। जो दुनिया के निर्माता का दास और सेवक है, वह अपने आप को उसके प्राणियों के सामने नीचा दिखाने के लिए नहीं झुकेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि विश्वास जितना मजबूत होगा, स्वतंत्रता उतनी ही बढ़ेगी।

लेकिन, पूर्ण स्वतंत्रता, पूर्ण बर्बरता है; वास्तव में, यह पशुता है। मानवता के दृष्टिकोण से भी, स्वतंत्रता को सीमित किया जाना चाहिए।

दूसरा: कुछ आलसी और लम्पट व्यक्ति स्वतंत्र नहीं होना चाहते, बल्कि अपनी दुष्ट आत्मा के नीच दास बनना चाहते हैं।

संक्षेप में: शरिया की सीमाओं के बाहर की आज़ादी या तो निरंकुशता है, या आत्मा की गुलामी, या पशुता, या बर्बरता। जो लोग ऐसी आज़ादी चाहते हैं, उन्हें यह पता होना चाहिए कि वे कभी भी किसी विवेकशील यूरोपीय को बुराई और अधर्म के ज़रिए उनसे प्यार करने के लिए मजबूर नहीं कर सकते, न ही वे उनके जैसे बन सकते हैं। क्योंकि कोई भी व्यक्ति अनैतिक और सिद्धांतहीन लोगों से प्यार नहीं करता। और अगर कोई पुरुष किसी महिला की पोशाक पहनता है, तो वह सिर्फ़ हास्यास्पद बन जाता है।

सातवां ग़ौरतलब भय: मुहम्मदन संघ दूसरे दल से अलग हो गया है।
धार्मिक समूहों के बीच मतभेद पैदा होते हैं और इससे प्रतिद्वंद्विता और आपसी द्वेष की भावना पैदा होती है।
उत्तर: सबसे पहले, परलोक के मामलों में ईर्ष्या, विवाद और संघर्ष नहीं हो सकता है, इसलिए यदि इनमें से कोई भी समाज दूसरे के खिलाफ प्रतिस्पर्धा या संघर्ष करने का प्रयास करता है तो यह ऐसा होगा जैसे वह पाखंड कर रहा है और पूजा में छल कर रहा है।

दूसरा: हम धर्म के प्रति प्रेम से स्थापित सभी समाजों को बधाई देते हैं और हम दो शर्तों पर उनके साथ एकजुट होते हैं:

पहली शर्त: वे शरीयत और सार्वजनिक व्यवस्था के अनुरूप स्वतंत्रता को सुरक्षित रखें।

दूसरी शर्त: वे प्रेम से कार्य करें, तथा अपने लाभ के लिए अन्य समूहों को बदनाम न करें।
यदि कोई गलती कर रहा है, तो उन्हें इसे धार्मिक अधिकारियों को बताना चाहिए, जो सामूहिक रूप से उम्मा के मुफ्ती का गठन करते हैं।

तीसरा: कोई भी समाज जिसका उद्देश्य ईश्वर के वचन को कायम रखना है, किसी भी तरह से दुश्मनी का साधन नहीं बन सकता और अपने उद्देश्यों की पूर्ति नहीं कर सकता। अगर वह चाहे भी तो सफल नहीं हो सकता, क्योंकि ऐसा करना कपट है। सत्य को ऊंचा किया जाता है, और किसी भी चीज के लिए उसका बलिदान नहीं किया जा सकता। क्या प्लीएडेस को ब्रश से साफ किया जा सकता है या अंगूर के गुच्छे की तरह खाया जा सकता है? जो कोई भी वास्तविकता के सूरज को बुझाने के लिए उस पर फूंक मारता है, वह केवल अपने पागलपन का विज्ञापन करता है।

धर्म का समर्थन करने वाले समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ! हम कहते हैं कि धार्मिक समूहों और समाजों का एक ही लक्ष्य होना चाहिए। लेकिन उनके लिए अपने तरीकों और तरीकों में एकजुट होना न तो संभव है, न ही इसकी अनुमति है। क्योंकि इससे अंधाधुंध नकल का रास्ता खुल जाता है और लोग कहने लगते हैं: "इससे मुझे क्या लेना-देना? दूसरों को सोचने दो।"

आठवां भय: यहां संघ में शामिल होने वाले अधिकांश लोग, वास्तव में और आत्मा दोनों में, इस्लामी एकता के समर्थक, साधारण लोग हैं, और कुछ एक हैं

अज्ञात मात्रा; यह संघर्ष और मतभेद का संकेत देता है।
उत्तर: यह शत्रुता की अनुमति न दिए जाने के परिणामस्वरूप है। साथ ही, चूँकि इसका उद्देश्य एकता और ईश्वर के वचन को कायम रखना है, इसलिए इसकी सभी गतिविधियाँ और प्रयास पूजा हैं। पूजा की मस्जिद में राजा और भिखारी समान हैं। सच्ची समानता इसका सिद्धांत है; कोई विशेषाधिकार नहीं है।

सबसे अच्छा वह है जो ईश्वर से सबसे अधिक डरता है। और जो ईश्वर से सबसे अधिक डरता है वह सबसे अधिक विनम्र है। परिणामस्वरूप, अर्थ में शामिल होने के साथ-साथ सच्चा

संघ,6 वह इस संघ में शामिल होकर सम्मानित महसूस करेगा, जो इसका एक भौतिक नमूना है। एक बूंद भी सागर को नहीं बढ़ाती। और जिस तरह एक गंभीर पाप किसी व्यक्ति को ईमान से दूर नहीं कर सकता, उसी तरह पश्चाताप का द्वार पश्चिम में सूरज उगने तक खुला रहता है। और जिस तरह अशुद्ध पानी का एक झंडा समुद्र को अशुद्ध नहीं करता, उसी तरह अज्ञात मूल के बहुत से लोग - अब जब वे खुद को शुद्ध कर चुके हैं - जो इस इस्लामी एकता के नमूने में इस दृढ़ इरादे से शामिल हुए हैं कि वे जहाँ तक हो सके, पैगंबर (PBUH) के कार्यों को पुनर्जीवित करेंगे, उनके आदेशों का पालन करेंगे और उनके द्वारा निषिद्ध कार्यों से परहेज करेंगे और सार्वजनिक व्यवस्था को बाधित नहीं करेंगे, वे इस उच्च वास्तविकता को कलंकित नहीं करेंगे। क्योंकि भले ही वे स्वयं कलंकित हों, उनका ईमान पवित्र है।

बंधन भी ईमान का है। जो इस पवित्र नाम को ऐसे बहाने से कलंकित करता है, वह इस्लाम की कीमत और श्रेष्ठता से अनभिज्ञ है और खुद को मूर्ख घोषित करता है। हम अपने समाज, जो इस्लामी एकता का एक नमूना है, के खिलाफ सांसारिक समाजों से तुलना करके और उसे कलंकित करने के प्रयासों का पुरजोर विरोध करते हैं। अगर कोई जानकारी मांगकर आपत्ति जताता है, तो हम उसका जवाब देने के लिए तैयार हैं। मैदान खुला है...!

मैं जिस संगठन का सदस्य हूँ, उसका नाम इस्लामिक यूनिटी है, जिसका मैंने यहाँ विस्तार से वर्णन किया है। यह कोई काल्पनिक संगठन नहीं है, जिसका आलोचकों ने गलत वर्णन किया है। इस धार्मिक संगठन के सदस्य उत्तर, दक्षिण, पूर्व या पश्चिम में एक साथ हैं।

प्रश्न: आप कभी-कभी खुद को बेदिउज्जमां (युग का आश्चर्य) के रूप में हस्ताक्षरित करते हैं। क्या इससे आत्म-प्रशंसा का आभास नहीं होता?

उत्तर: यह प्रशंसा के लिए नहीं है; मैं इस शीर्षक के साथ अपनी गलतियों, बहानों और क्षमायाचना की घोषणा करता हूं।
क्योंकि 'बेदी'

____

6. अर्थात इस्लामी एकता। [ट्र.]

अजीब मतलब है। और मेरे रूप की तरह, मेरा आचरण, मेरा संबोधन का तरीका, और मेरी पोशाक सभी अजीब और अलग हैं। इस तरीके और शीर्षक की भाषा के माध्यम से मैं अनुरोध करता हूं कि प्रथागत अभ्यास पर आधारित वर्तमान तर्क और शैलियों को मेरी शैली और तर्क के लिए मापदंड और मानदंड नहीं बनाया जाना चाहिए। इसके अलावा मेरे लक्ष्य अजीब और असामान्य हैं। मैंने पंक्तियों को चित्रित किया है: मैं हर अजीब व्यक्ति का लक्ष्य बन गया हूं; क्योंकि मैं अजीब लोगों की नज़र में अजीब हूँ!

इसका एक उदाहरण यह है: मैं एक वर्ष से इस्तांबुल में हूं और मैंने सौ वर्षों की क्रांतियां देखी हैं।

शांति उन लोगों पर हो जो सही मार्गदर्शन का पालन करते हैं!
हम सभी ईमान वालों की ओर से कहते हैं: मुहम्मद (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) का शरीयत अमर रहे!

बी एदिउज्जमां

एस सहायता एन भालू

दरवेश वहदेती को पत्र

वोल्कन नं: 105

24 रबी अल-अव्वल 1327/2 अप्रैल 1325/15 अप्रैल 1909

मेरे भाई, संपादक!

लेखकों को शिष्ट होना चाहिए और उनका व्यवहार इस्लाम के तौर-तरीकों के अनुसार होना चाहिए। धर्म की भावना को विवेक के अनुसार प्रेस नियम बनाने चाहिए, क्योंकि इस इस्लामी क्रांति ने दिखा दिया है कि सभी विवेकों पर इस्लामी जोश और रोशनी का प्रकाश हावी है। साथ ही, यह भी समझा गया है कि इस्लामी एकता में इस्लाम के सभी लोग शामिल हैं; इसके बाहर कोई नहीं है।

एस सहायता एन भालू

हमारे वीर सैनिकों को संबोधन

वोल्कन नं: 107

26 रबी अल-अव्वल 1327/4 अप्रैल 1325/17 अप्रैल 1909

[यह लेख और अगला लेख, अप्रैल 1909 में 31 मार्च की घटना के रूप में जानी जाने वाली घटनाओं के दौरान सेना को दिए गए संबोधन के कुछ अंश हैं, जिसने आठ विद्रोही रेजिमेंटों को अपने अधिकारियों की आज्ञा का पालन करने और बैरकों में लौटने के लिए प्रेरित किया, जिससे आपदा का नुकसान बहुत कम हो गया।]

इस्लाम के महान सिपाहियों! पराक्रमी वीर जिन्होंने इस उत्पीड़ित राष्ट्र और पवित्र इस्लाम को दो बार भयंकर रसातल से बचाया है! आपकी सुंदरता और पूर्णता व्यवस्था और अनुशासन में निहित है। आपने सबसे बड़ी उलझन के समय में इसका बखूबी प्रदर्शन किया। हाँ, आपका जीवन और शक्ति आज्ञाकारिता में निहित है। अपने सबसे छोटे अधिकारी के सामने भी इस पवित्र गुण का प्रदर्शन करें। तीस मिलियन ओटोमन और तीन सौ मिलियन मुसलमानों का सम्मान आपकी आज्ञाकारिता से जुड़ा है। ईश्वरीय एकता का झंडा आपके साहस के हाथ में है, जबकि आपके उन धन्य हाथों की ताकत आज्ञाकारिता है। आपके अधिकारी आपके दयालु पिता हैं। कुरान, और हदीस, और ज्ञान और अनुभव दोनों कहते हैं कि कमान संभालने वालों की आज्ञाकारिता अनिवार्य है।

आप जानते हैं कि तीस करोड़ लोग सौ साल में दो ऐसी क्रांतियाँ नहीं ला सकते। आपकी आज्ञाकारिता से जो सच्ची ताकत मिली, उसने पूरी इस्लामी क़ौम को आपका आभारी बना दिया। इस सम्मान की पुष्टि की जा सकती है

अब अपने अधिकारियों की आज्ञाकारिता के माध्यम से। इस्लाम का सम्मान भी उस आज्ञाकारिता पर निर्भर है।

मैं जानता हूँ कि आप अपने अधिकारियों को - जो आपके दयालु पिताओं की तरह हैं - जिम्मेदारी से बचाने के लिए इसमें शामिल नहीं हुए। लेकिन अब मामला खत्म हो चुका है, इसलिए आपको उनके दयालु आलिंगन में खुद को झोंक देना चाहिए। पवित्र शरिया आपको ऐसा करने का आदेश देता है। क्योंकि आपके अधिकारियों को आप पर अधिकार सौंपा गया है; देश और राष्ट्र के लाभ के लिए, और विशेष रूप से सेना में अनुशासन बनाए रखने के लिए, अधिकार सौंपे गए लोगों की आज्ञाकारिता अनिवार्य है।

मुहम्मद (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) की शरीयत भी आपकी आज्ञाकारिता के माध्यम से संरक्षित की जाएगी।

एस सहायता एन भालू

सेना को संबोधन
वोल्कन नं: 110

29 रबी अल-अव्वल 1327/7 अप्रैल 1325/20 अप्रैल 1909

ऐ इस्लाम के सिपाहियों! मैं तुम्हें दुनिया के हुक्म (उस पर सलामती और शांति हो) की याद दिलाता हूँ कि शरिया के दायरे में कमान संभालने वालों की आज्ञा का पालन करना अनिवार्य है। तुम्हारे कमांडर और मालिक तुम्हारे अधिकारी हैं। सेना एक विशाल और व्यवस्थित कारखाने की तरह है। अगर मशीनरी का एक भी दांत व्यवस्था और अनुशासन से अलग हो जाए, तो पूरी फैक्ट्री अस्त-व्यस्त हो जाती है।

आपकी सेना का सुव्यवस्थित और शक्तिशाली कारखाना तीस मिलियन ओटोमन और तीन सौ मिलियन मुसलमानों का समर्थन और सहायता का स्रोत है।

दो भयानक तानाशाहियों का रक्तहीन और तत्काल संहार करना अद्भुत था; आपने शानदार शरीयत के दो चमत्कार दिखाए, जो कमज़ोर ईमान वालों को इस्लामी जोश की ताकत और शरीयत की पवित्रता के दो सबूत देते हैं। अगर इन दो क्रांतियों की कीमत हज़ारों शहादतें होतीं, तो भी हम इसे सस्ता मानते। लेकिन अगर आपकी आज्ञाकारिता का हज़ारवां हिस्सा भी बलिदान किया जाता है, तो यह हमारे लिए बहुत महंगा पड़ेगा। क्योंकि आपकी आज्ञाकारिता में कोई भी कमी मृत्यु का कारण बनती है, जैसे कि जीवन-शक्ति या शरीर की गर्मी में कमी।

इतिहास ने हमेशा इस बात की गवाही दी है कि जब सैनिक राजनीति में हस्तक्षेप करते हैं तो देश और राष्ट्र को कितना नुकसान होता है। निश्चित रूप से आपका इस्लामी उत्साह आपको उन चीजों को करने से रोकेगा जो इस्लाम के जीवन को नुकसान पहुंचाएंगी।

जो लोग राजनीति के बारे में सोचेंगे वे आपके अधिकारी और सेनापति हैं, जो आपकी विचार शक्ति के समान हैं।

कभी-कभी, चूँकि यह राजनीतिक रूप से काफी नुकसान को रोकता है, इसलिए जिस चीज़ को आप हानिकारक समझते हैं, वह शुद्ध लाभ है; आपके अधिकारी अपने अनुभव के कारण इसे देखते हैं, और आपको आदेश देते हैं। फिर आपके लिए संकोच करना जायज़ नहीं है। व्यक्तिगत जीवन में जो कार्य शरीयत के विरुद्ध हैं, वे किसी शिल्प में कौशल और विशेषज्ञता को अस्वीकार नहीं करते हैं, और न ही उस शिल्प को घृणित बनाते हैं। एक कुशल चिकित्सक या कुशल इंजीनियर का अवैध निजी आचरण उनकी चिकित्सा और इंजीनियरिंग से लाभ उठाने से नहीं रोकता है। इसलिए अपने कुछ अधिकारियों के शरीयत के विपरीत छोटे-मोटे कार्यों के कारण अपनी आज्ञाकारिता में विफल न हों, जो युद्ध के विज्ञान में अनुभवी हैं, उस कला में कुशल हैं, और जिनके विचार उनके इस्लामी उत्साह के माध्यम से प्रबुद्ध हैं। क्योंकि युद्ध का विज्ञान एक महत्वपूर्ण कला है। इसके अलावा, चूंकि आपके विद्रोह ने मूसा के चमकते हाथ की तरह शानदार शरीयत को दिखाया, इसलिए आपने उन कुछ अवैध कार्यों को शरीयत के दायरे में लौटने के लिए मजबूर कर दिया। आपकी इस वैधानिक एकता ने अन्य समाजों को निगल लिया जो विभाजन और विचारों के भ्रम का कारण थे, मूसा की छड़ी की तरह। इसने जादूगरों को भी सजदा करने पर मजबूर कर दिया। इस क्रांति में आपका कार्य एक दवा की तरह था, लेकिन अगर यह अत्यधिक हो जाए तो यह जहर बन जाएगा और इस्लाम के जीवन को एक गंभीर बीमारी की ओर ले जाएगा। साथ ही, आपके प्रयासों के कारण हमारे साथ निरंकुशता वर्तमान में है

नष्ट हो चुका है। लेकिन प्रगति के मामले में हम अभी भी यूरोप द्वारा उत्पीड़ित हैं। अत्यंत सावधानी और संयम की आवश्यकता है।

शानदार शरिया अमर रहे! सेना अमर रहे!

एस सहायता एन भालू

सोसायटियों और क्लबों के लिए एक महत्वपूर्ण चेतावनी

हमारा समाज अब एक संवैधानिक सरकार है। सरकार के भीतर सरकार होने का नुकसान स्पष्ट हो गया है। तथ्य यह है कि संस्कृति का एक समान स्तर नहीं होने के कारण पार्टियों के बीच दुश्मनी, कट्टरता और पक्षपात हुआ है। यह उन लोगों के लिए अनुकूल क्षेत्र बन गया है जो नफरत को बढ़ावा देते हैं, जो उस प्राकृतिक शक्ति का फायदा उठाकर राजनीति में हस्तक्षेप करते हैं और सामान्य प्रशासन में मनमानी शक्ति का प्रयोग करते हैं - जो सुखद है। इसलिए समूहों और पार्टियों के लिए अपने वर्तमान स्वरूप में बने रहना बेहद हानिकारक है, हालांकि यह किसी कंपनी के सदस्यों, या बुद्धिजीवियों या निष्पक्ष लोगों के लिए राजनीति की आलोचना करने, या शिक्षित लोगों के लिए एक-दूसरे को सलाह और परामर्श देने के लिए फायदेमंद हो सकता है। हमारी संवैधानिक सरकार अब समाज बनाती है।

बी एडुज्जमां एस सहायता नर्सी

दूसरा परिशिष्ट

पहला भाग

वास्तविकता के बीज

[इसमें पैंतीस साल पहले प्रकाशित सीड्स ऑफ रियलिटी नामक संग्रह से ली गई सूक्तियाँ शामिल हैं]

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

सारी प्रशंसा ईश्वर के लिए है, जो सारे संसार का पालनहार है, तथा हमारे स्वामी
मुहम्मद तथा उनके समस्त परिवार और साथियों पर आशीर्वाद और शांति हो।

1. एक बीमार युग, एक बीमार राष्ट्र, एक बीमार सदस्य के लिए नुस्खा कुरान का पालन करना है।
2. एक गौरवशाली किन्तु दुर्भाग्यपूर्ण महाद्वीप, एक गौरवशाली किन्तु अभागा राज्य, एक महान किन्तु स्वामीहीन लोगों के लिए नुस्खा इस्लामी एकता है।
3. जिसके पास पृथ्वी और सभी सितारों और सूर्य को ऊपर उठाने और घुमाने की शक्ति नहीं है

एक तेस्बीह के मोती ब्रह्मांड में कुछ भी बनाने का दावा नहीं कर सकते। क्योंकि हर चीज़ एक दूसरे से बंधी हुई है।

4. मृतकों के जी उठने पर सभी सजीव प्राणियों को जीवित करना ईश्वरीय शक्ति के लिए उतना ही कठिन हो सकता है जितना कि बसंत ऋतु में एक मक्खी को जीवित करना, जो शीत ऋतु की मृत्यु-रंजित नींद से बोझिल हो। क्योंकि पूर्व-शाश्वत शक्ति आवश्यक है; यह बदलती नहीं है; नपुंसकता इसे भेद नहीं सकती; इसमें बाधाएँ हस्तक्षेप नहीं कर सकतीं; इसमें कोई डिग्री नहीं हो सकती; सब कुछ एक जैसा है।

यह।

5. जिसने मच्छर की आँख बनाई, उसी ने सूर्य भी बनाया।
6. जिसने पिस्सू का पेट मंगवाया था, उसी ने सौरमंडल का भी ऑर्डर दिया था।
7. ब्रह्माण्ड के संकलन में ऐसी चमत्कारिकता है कि यदि यह मान लिया जाए कि असंभव सभी प्राकृतिक कारणों में इच्छाशक्ति और कार्य करने की शक्ति है, तो भी वे ऐसी चमत्कारिकता के सामने पूरी तरह से शक्तिहीन होकर झुक जाएँगे और कहेंगे: "आपकी महिमा हो! हमारे पास कोई शक्ति नहीं है; वास्तव में आप शक्तिशाली, बुद्धिमान हैं!"

8. कारणों को वास्तविक प्रभाव नहीं दिया गया है, क्योंकि ईश्वरीय एकता और महिमा ऐसा ही चाहती है।
केवल, वस्तुओं के बाह्य पहलू में, कारण शक्ति के हाथ के लिए एक आवरण मात्र हैं; और ईश्वरीय गरिमा और महानता इसी की मांग करती है, ताकि सतही दृष्टि से शक्ति के हाथ को तुच्छ वस्तुओं के साथ सीधे संपर्क में न देखा जाए।

9. वस्तुओं के आंतरिक आयाम, जहां दैवी शक्ति का संबंध है, पारदर्शी और शुद्ध हैं।

10. प्रकट जगत अदृश्य जगत पर फैला हुआ एक फीतादार पर्दा है।

11. एक बिंदु बनाने और उसे उसके स्थान पर स्थापित करने के लिए एक असीम शक्ति की आवश्यकता होती है जो पूरे ब्रह्मांड का निर्माण कर सकती है। ब्रह्मांड की इस महान पुस्तक के प्रत्येक अक्षर और विशेष रूप से इसके सभी जीवित अक्षरों का एक चेहरा है जो सभी वाक्यों को देखता है, और एक आँख है जो उन्हें देखती है।
12. यह सर्वविदित है: वे सभी ईद के अर्धचंद्र की तलाश में थे, लेकिन कोई भी इसे नहीं देख सका। एक बुजुर्ग व्यक्ति ने कसम खाई कि उसने इसे देखा था। लेकिन उसने जो देखा वह अर्धचंद्र नहीं था; यह एक घुमावदार सफेद पलक थी। चाँद की तुलना में पलक क्या है?... सभी प्राणियों को बनाने वाले की तुलना में सूक्ष्म कणों की गति क्या है?

13. प्रकृति एक प्रिंटिंग प्रेस की तरह है, प्रिंटर की तरह नहीं। यह एक कढ़ाई है, कढ़ाई करने वाला नहीं। यह निष्क्रिय है, सक्रिय नहीं। यह एक पैटर्न है, स्रोत नहीं। यह एक आदेश है, आदेश देने वाला नहीं। यह एक कानून है, शक्ति नहीं। यह इच्छा से निकलने वाले कानूनों की संहिता है, बाहरी वास्तविकता नहीं।
14. अंतःकरण में आकर्षण और आकर्षण, जो कि चेतन प्राणियों का मूल स्वभाव है, एक आकर्षक सत्य के आह्वान के माध्यम से महसूस किया जाता है।
15. प्राणियों का मूल स्वभाव झूठ नहीं बोलता। बीज में बढ़ने की प्रवृत्ति घोषित करती है: "मैं अंकुरित होऊंगा और फल दूंगा!" यह सच बोलता है। अंडे में जीवन की इच्छा होती है; यह कहता है: "मैं मुर्गी बनूंगा!", और यह ईश्वरीय अनुमति से होता है। यह सच बोलता है। जमने की प्रवृत्ति के कारण, एक मुट्ठी पानी कहता है: "मैं और जगह घेर लूंगा!" और अडिग लोहा इसे झूठ नहीं बोल सकता; इसके शब्दों की सत्यता लोहे को चीर देती है। ये प्रवृत्तियाँ ईश्वरीय इच्छा से आने वाले रचनात्मक आदेशों की अभिव्यक्तियाँ हैं।

16. पूर्व-अनन्त शक्ति, जो चींटियों को भी बिना नहीं छोड़ती

एक राजकुमार, या रानी के बिना मधुमक्खियाँ, निश्चित रूप से मानव जाति को पैगम्बरों के बिना नहीं छोड़ती हैं। जिस तरह चंद्रमा का विभाजन प्रकट दुनिया में लोगों के लिए मुहम्मद (PBUH) का चमत्कार था, उसी तरह स्वर्गारोहण भी चीजों के आंतरिक आयामों की दुनिया में स्वर्गदूतों और आत्मिक प्राणियों के सामने उनका सर्वोच्च चमत्कार था। इस स्पष्ट आश्चर्य के माध्यम से, उनकी पैगम्बरी की संतता

सिद्ध हो गया, और बिजली या चंद्रमा की तरह, उस चमकते हुए अस्तित्व ने उन आंतरिक दुनियाओं के माध्यम से प्रकाश बिखेर दिया।

17. विश्वास की स्वीकारोक्ति के दो वाक्य एक दूसरे की गवाही देते हैं। पहला है 'कारण का प्रमाण
दूसरे का 'कारण के लिए प्रभाव का प्रमाण' है, जबकि दूसरा पहले का 'कारण के लिए प्रभाव का प्रमाण' है।
18. जीवन अनेकता के भीतर एकता की अभिव्यक्ति है, और इसलिए एकता की ओर ले जाता है। जीवन एक चीज़ को हर चीज़ का मालिक बना देता है।

19. आत्मा एक ऐसा कानून है जो बाहरी अस्तित्व रखता है, एक सचेत कानून है। सृष्टि के स्थिर और स्थायी कानूनों की तरह, आत्मा ईश्वरीय आदेश और इच्छा के गुण की दुनिया से आती है।
दिव्य शक्ति इंद्रियों से सुसज्जित अस्तित्व को वस्त्र पहनाती है। वह उस रत्न के लिए एक सूक्ष्म, प्रवाहमान प्राणी का आवरण बनाता है। विद्यमान आत्मा कल्पनीय कानून का भाई है। वे दोनों स्थायी हैं और दिव्य आदेश की दुनिया से आते हैं। यदि पूर्व-शाश्वत शक्ति ने बाह्य अस्तित्व में प्राणियों की प्रजातियों में शासन करने वाले कानूनों को वस्त्र पहनाया होता, तो वे आत्माएँ होतीं।

और यदि आत्मा चेतना को निर्वासित कर दे, तो भी यह एक अमर नियम होगा।
20. प्राणी प्रकाश के माध्यम से दिखाई देते हैं, और उनका अस्तित्व जीवन के माध्यम से जाना जाता है। दोनों ही प्रकटकर्ता हैं।
21. ईसाई धर्म या तो फूटेगा, या शुद्ध हो जाएगा,

इस्लाम के सामने अपने हथियार डाल देगा। ईसाई धर्म कई बार विभाजित हुआ और प्रोटेस्टेंटवाद उभरा। फिर प्रोटेस्टेंटवाद टूट गया और ईश्वरीय एकता की सच्ची पुष्टि के करीब पहुंच गया। यह फिर से टूटने की तैयारी कर रहा है। यह या तो फूटेगा और बुझ जाएगा, या यह इस्लाम की सच्चाइयों को अपने सामने देखेगा, जो सच्ची ईसाई धर्म का आधार है, और यह अपने हथियार डाल देगा।

पैगम्बर मुहम्मद (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) ने इस महान रहस्य की ओर संकेत करते हुए कहा: "यीशु आकाश से उतरकर प्रकट होंगे; वह मेरी कौम के होंगे और मेरी शरीयत के अनुसार कार्य करेंगे।"

22. प्रमाण से अधिक अधिकार की पवित्रता ही लोगों को अनुरूपता के लिए प्रेरित करती है।

23. धर्म के आवश्यक और निर्विवाद मामले, जो निन्यानबे प्रतिशत हैं, प्रत्येक हीरे के खंभे हैं, जबकि विवादास्पद मामले जो व्याख्या के लिए खुले हैं, केवल दस प्रतिशत हैं। नब्बे हीरे के खंभों को दस सोने के खंभों के संरक्षण में नहीं रखा जा सकता। किताबें और व्याख्याएँ कुरान को देखने के लिए दूरबीन होनी चाहिए; वे दर्पण होनी चाहिए; छाया या प्रतिनिधि नहीं!

24. जो कोई भी सक्षम है वह अपने लिए व्यवस्था की व्याख्या कर सकता है; लेकिन वह व्यवस्था नहीं बना सकता।

25. किसी विचार को स्वीकार करने के लिए दूसरों को बुलाना उलेमा द्वारा स्वीकृति पर निर्भर है; अन्यथा यह नवाचार है, और इसे अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए।

26. चूँकि मनुष्य स्वभाव से महान है, इसलिए वह सत्य की खोज करता है। कभी-कभी उसे झूठ का सामना करना पड़ता है, लेकिन वह उसे सत्य मानकर अपने हृदय में सुरक्षित रखता है। फिर, जब वह बिना चाहे ही वास्तविकता में उतरता है,

गुमराही उसके सिर पर वार करती है; यह मानकर कि यह वास्तविकता है, वह अपना सिर उसमें डुबा देता है।
27. दिव्य शक्ति के पास कई दर्पण हैं, जिनमें से प्रत्येक पिछले वाले से अधिक सूक्ष्म और पारदर्शी है; वे जल से वायु तक, वायु से आकाश तक, और आकाश से समानताओं की दुनिया तक; समानताओं की दुनिया से आत्माओं की दुनिया तक, और यहाँ तक कि समय और विचार तक भी। वायु के दर्पण में एक शब्द लाखों शब्दों में बदल जाता है। शक्ति की कलम प्रजनन के इस रहस्य को लिखती है

सचमुच अद्भुत ढंग से। प्रतिबिंब में या तो उसकी पहचान होती है या फिर उसकी पहचान उसके स्वभाव के साथ होती है। सघन प्राणियों की छवियाँ गतिशील होती हैं लेकिन मृत होती हैं। जबकि अपने दर्पणों में एक प्रकाशमान आत्मा की छवियाँ जीवित होती हैं और उससे जुड़ी होती हैं; भले ही वे समान न हों, वे उससे भिन्न नहीं हैं।

28. चूँकि सूर्य अपने अक्षीय घूर्णन में स्वयं को हिलाता है, इसलिए उसके फल गिरते नहीं; जबकि यदि वह स्वयं को न हिलाता, तो ग्रह गिर जाते और बिखर जाते।
29. यदि विचार का प्रकाश हृदय के प्रकाश से प्रकाशित होकर उसके साथ मिश्रित न हो, तो वह अंधकार है और अत्याचार को जन्म देता है। यदि आँख का सफेद भाग, जो दिन जैसा दिखता है, उसकी काली पुतली के साथ न हो, जो रात जैसा दिखता है, तो आँख आँख नहीं रह जाती; वह अदृश्य हो जाती।
इसी प्रकार, यदि हृदय का काला भाग श्वेत विचार में उपस्थित नहीं है, तो उसमें अंतर्दृष्टि का अभाव है।
30. अगर ज्ञान में हृदय की अंतर्दृष्टि का अभाव है, तो वह अज्ञान है। किसी चीज़ का पक्ष लेना एक बात है, विश्वास करना दूसरी बात है।

31. निरर्थक चीजों पर कढ़ाई करना सरल दिमाग को गुमराह करना है।
32. एक विद्वान मार्गदर्शक भेड़ होना चाहिए, पक्षी नहीं। भेड़ अपने मेमने को दूध देती है, जबकि पक्षी अपने चूजे को उल्टी करके खाना देता है।

दमिश्क धर्मोपदेश / वास्तविकता के बीज - पृष्ठ 102

33. किसी भी चीज़ का अस्तित्व उसके सभी भागों के अस्तित्व पर निर्भर करता है। जहाँ तक अस्तित्वहीनता का सवाल है, चूँकि यह एक भाग के न होने से होती है, इसलिए कमज़ोर व्यक्ति अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए विनाश का समर्थन करता है; वह सकारात्मक के बजाय नकारात्मक रूप से कार्य करता है।
34. यदि शासन के नियमों को बुद्धि के सिद्धांतों के साथ संयोजित नहीं किया जाता, तथा बल के बंधनों को सत्य के नियमों के साथ संयोजित नहीं किया जाता, तो वे जनसाधारण के बीच फलदायी नहीं होंगे।
35. अत्याचार ने न्याय की टोपी पहन ली है; विश्वासघात ने देशभक्ति का लबादा ओढ़ लिया है; जिहाद को विद्रोह का नाम दे दिया गया है; कैद को स्वतंत्रता कह दिया गया है!
विपरीतों ने रूप बदल लिया है!
36. जो राजनीति लाभ के इर्द-गिर्द घूमती है वह बर्बरता है।
37. भूखे पशु के प्रति मित्रता दिखाने से उसकी करुणा नहीं, बल्कि भूख जागृत होती है।
इसके दोनों नुकीले दांत और पंजे अपना किराया चाहेंगे!
38. समय ने दिखा दिया है कि स्वर्ग सस्ता नहीं है, और न ही नरक अनावश्यक है।
39. जबकि दुनिया में उच्च वर्ग के रूप में जाने जाने वाले लोगों के गुण विनम्रता और नम्रता का कारण होने चाहिए, वे उत्पीड़न और अहंकार का कारण बने हैं। और जबकि गरीब और आम लोगों की गरीबी और शक्तिहीनता करुणा और उदारता का कारण होनी चाहिए, वे कैद और निंदा का कारण बने हैं।

40. जब तक किसी वस्तु से सम्मान और अच्छी चीजें प्राप्त होनी हों, तब तक वे उसे उच्च वर्ग को दे देते हैं, लेकिन यदि वह बुरी चीज हो, तो वे उसे आम लोगों में बांट देते हैं।
41. यदि कोई कल्पित लक्ष्य नहीं है, या उसे भुला दिया गया है या भुलाए जाने का दिखावा किया गया है, तो विचार सदैव 'मैं' के इर्द-गिर्द घूमते रहते हैं।

दमिश्क धर्मोपदेश / वास्तविकता के बीज - पृष्ठ 103

42. सभी क्रांतियों और भ्रष्टाचार का मूल, तथा सभी निम्न नैतिकताओं का प्रेरणा और स्रोत सिर्फ दो कहावतें हैं: पहली कहावत: "जब तक मेरा पेट भरा हुआ है, तो इससे
मुझे क्या फर्क पड़ता है कि दूसरे लोग भूख से मरें?"
दूसरा कथन: "तुम कष्ट सहते हो ताकि मैं आराम से रह सकूँ; तुम काम करते हो ताकि मैं खा सकूँ।"
पहली बात को मिटाने का सिर्फ़ एक ही उपाय है और वह है ज़कात अदा करना। जबकि दूसरी बात का उपाय है सूद और ब्याज पर रोक लगाना। कुरानिक न्याय

दुनिया के दरवाज़े पर खड़ा है और सूदखोरी और ब्याज से कहता है: "प्रवेश वर्जित है! यहाँ प्रवेश वर्जित है! तुम्हें यहाँ प्रवेश करने का अधिकार नहीं है!" मानवजाति ने आदेश पर ध्यान नहीं दिया, और उसे एक गंभीर झटका मिला। इसलिए उसे इस पर ध्यान देना चाहिए, इससे पहले कि उसे और भी अधिक गंभीर झटका मिले!

43. राष्ट्रों और राज्यों के बीच युद्ध की जगह मानव जाति के विभिन्न वर्गों के बीच युद्ध ने ले ली है। क्योंकि जिस तरह मनुष्य गुलाम नहीं बनना चाहता, उसी तरह वह मजदूर भी नहीं बनना चाहता।

44. जो व्यक्ति अपने लक्ष्य को पाने के लिए अवैध मार्ग अपनाता है, उसे आमतौर पर वह मिलता है जो वह चाहता था, उसके विपरीत। अवैध प्रेम का प्रतिफल, यूरोप के प्रति प्रेम की तरह, प्रेमी से क्रूर शत्रुता है।

45. भूतकाल और विपत्तियों को ईश्वरीय निर्णय के दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए, जबकि भविष्य और पापों को ईश्वर के समक्ष उत्तरदायित्व के दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए। इस बिंदु पर जबरिया और मुताज़िला में सामंजस्य स्थापित किया गया है।

46. जिन बातों का समाधान हो सकता है, उनमें नपुंसकता का सहारा नहीं लेना चाहिए, जबकि जिन बातों का कोई समाधान नहीं है, उनके लिए दण्ड का सहारा नहीं लेना चाहिए।

47. जीवन के घाव तो भर सकते हैं, लेकिन इस्लामी गौरव और सम्मान तथा राष्ट्रीय गौरव के घाव बहुत गहरे हैं।

48. कभी-कभी ऐसा होता है कि एक शब्द से पूरी सेना नष्ट हो जाती है और एक गोली से तीन करोड़ लोग नष्ट हो जाते हैं। कुछ परिस्थितियाँ ऐसी होती हैं कि एक छोटा-सा कार्य मनुष्य को सर्वोच्च से उच्चतम तक पहुँचा देता है, जबकि कुछ परिस्थितियाँ ऐसी होती हैं कि एक छोटा-सा कार्य उसे निम्न से निम्नतर तक पहुँचा देता है।

49. सच का एक दाना झूठ के ढेर को खा जाता है। हकीकत का एक दाना भ्रम के ढेर से बेहतर है। आप जो भी कहें वो सच होना चाहिए, लेकिन हर बात को सच कहना सही नहीं है।

50. जो व्यक्ति चीज़ों में अच्छाई देखता है, उसके विचार अच्छे होते हैं। और जिसके विचार अच्छे होते हैं, उसे जीवन में आनंद मिलता है।

51. आशा लोगों को जीवन देती है, जबकि निराशा उन्हें मार देती है।

52. आरंभिक दिनों से ही इस इस्लामी राज्य ने ईश्वर के वचन को कायम रखने, स्वतंत्रता को बनाए रखने और इस्लाम के लिए जिहाद करने का दायित्व अपने ऊपर ले लिया था, जो कि एक ऐसा दायित्व था जिसे यदि समुदाय का एक हिस्सा भी पूरा कर लेता तो बाकी लोग मुक्त हो जाते थे; इसने खुद को इस्लाम के लिए बलिदान करने का दायित्व माना, जो कि एकजुट था और खिलाफत का झंडा उठाए हुए था। इसलिए अब जो दुर्भाग्य इसे झेलना पड़ रहा है, उसकी भरपाई इस्लामी दुनिया की भावी समृद्धि और स्वतंत्रता से होगी। क्योंकि इस आपदा ने इस्लामी भाईचारे के विकास को आश्चर्यजनक रूप से गति दी है, जो हमारे जीवन का खमीर है।

---

1. सर्बियाई सैनिक द्वारा ऑस्ट्रियाई युवराज पर चलाई गई एक गोली से महायुद्ध छिड़ गया, तथा तीस मिलियन लोगों की जान चली गई।

53. सभ्यता के गुणों को ईसाई धर्म में शामिल करना, जो उसकी संपत्ति नहीं है, तथा इस्लाम के शत्रु को उसका मित्र बताना, यह दर्शाता है कि आकाश विपरीत दिशा में घूम रहा है।

54. एक धूमिल, बेजोड़ हीरा हमेशा चमकते कांच के टुकड़े से बेहतर होता है।

55. जो लोग सब कुछ भौतिकता में खोजते हैं, वे केवल वही जानते हैं जो उनकी आंखें देखती हैं, और ऐसी आंखें आध्यात्मिक मामलों में अंधी हैं।

56. यदि रूपक विद्या के हाथों से अज्ञान के हाथों में पड़ें, तो वे रूपांतरित हो जाते हैं

उनके शाब्दिक अर्थों को गलत समझा जा रहा है, जिससे अंधविश्वास का द्वार खुल रहा है।
57. ईश्वरीय कृपा से बड़ी कृपा कोई कृपा नहीं है। हर चीज को वैसा ही वर्णित करना चाहिए जैसा वह है।
58. प्रसिद्धि मनुष्य को वह भी प्रदान करती है जो उसका नहीं है।

59. हदीसें जीवन का स्रोत और वास्तविकता की प्रेरणा हैं।
60. धर्म का पुनरुत्थान राष्ट्र का पुनरुत्थान है। धर्म का जीवन ही जीवन का प्रकाश है।
61. कुरान, जो मानवता के लिए दया है, केवल ऐसी सभ्यता को स्वीकार करता है जिसमें सभी की, या कम से कम बहुसंख्यकों की खुशी शामिल हो। आधुनिक सभ्यता पाँच नकारात्मक सिद्धांतों पर आधारित है: 1. इसका आधार बल है, जिसका चिह्न आक्रमण है।

2. इसका उद्देश्य और लक्ष्य लाभ है, जिसका चिह्न धक्का-मुक्की और खींचतान है।
3. जीवन में इसका सिद्धांत संघर्ष है, जिसका चिह्न कलह है।
4. जनता के बीच का बंधन नस्लवाद और नकारात्मक राष्ट्रवाद है, जो दूसरों को निगलने के माध्यम से पोषित होता है; इसका चिह्न टकराव है।

5. इसकी मोहक सेवा वासना और जुनून को भड़काती है और इच्छाओं को संतुष्ट करती है। लेकिन वासना मनुष्य को पशु में बदल देती है।

लेकिन मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की शरिया में जो सभ्यता समाहित है और जिसका आदेश है, वह यह है: इसका आधार बल के बजाय सत्य है, जिसका चिह्न न्याय और सद्भाव है। इसका लक्ष्य लाभ के बजाय सद्गुण है, जिसका चिह्न प्रेम और आकर्षण है। इसकी एकता का साधन जातिवाद और राष्ट्रवाद के बजाय धर्म, देश और वर्ग के बंधन हैं, और इनका चिह्न सच्चा भाईचारा, शांति और बाहरी आक्रमण के विरुद्ध एकमात्र बचाव है। जीवन में संघर्ष के सिद्धांत के बजाय पारस्परिक सहायता का सिद्धांत है, जिसका चिह्न सहमति और एकजुटता है। और यह वासना के बजाय मार्गदर्शन प्रदान करता है, जिसका चिह्न मानव प्रगति और आध्यात्मिक उन्नति है।

हमारे अस्तित्व के रक्षक इस्लाम से अपने हाथ मत हटाओ; पूरी ताकत से उससे चिपके रहो, नहीं तो तुम खो जाओगे!

62. सामान्य आपदा बहुमत की गलती से उत्पन्न होती है। आपदा अपराध का परिणाम है, और पुरस्कार का परिचय है।

63. एक शहीद सोचता है कि वह जीवित है। चूँकि उसे मृत्यु की पीड़ा नहीं झेलनी पड़ी, इसलिए वह अपने बलिदान को शाश्वत मानता है और उसे समाप्त नहीं करता। लेकिन, वह उसे अधिक पवित्र पाता है।
64. कुरान का शुद्ध न्याय किसी निर्दोष का जीवन और खून नहीं बहाता, चाहे वह पूरी मानवता के लिए ही क्यों न हो। ईश्वरीय शक्ति और न्याय की दृष्टि से दोनों एक ही हैं। लेकिन स्वार्थ के कारण मनुष्य ऐसा बन जाता है कि वह अपनी महत्वाकांक्षा के मार्ग में बाधा बनने वाली हर चीज को नष्ट कर देता है।

यहां तक कि यदि वह चाहे तो पूरी दुनिया को नष्ट कर सकता है, और वह मानवजाति को मिटा सकता है।
65. भय और कमज़ोरी बाहरी प्रभावों को बढ़ावा देते हैं।
66. काल्पनिक हानि के लिए निश्चित लाभ का त्याग नहीं किया जाना चाहिए।
67. वर्तमान समय में इस्तांबुल की राजनीति स्पैनिश फ्लू जैसी बीमारी है।
68. बुरे आदमी से कहो, “तुम अच्छे हो, तुम अच्छे हो,” तो यह कोई अनोखी बात नहीं कि वह अच्छा बन जाएगा। और अच्छे आदमी से कहो, “तुम बुरे हो, तुम बुरे हो,” तो उसका बुरा बन जाना कोई अनोखी बात नहीं।
69. जब तक शत्रु का शत्रु उसका शत्रु बना रहता है, तब तक वह मित्र है; जब तक शत्रु का मित्र उसका मित्र बना रहता है, तब तक वह शत्रु है।

70. हठधर्मिता यह है कि यदि शैतान किसी की सहायता करता है तो उसे "फ़रिश्ता" कहता है और उस पर दुआएँ भेजता है। लेकिन यदि वह अपने विरोधियों में से किसी फ़रिश्ते से मिलता है तो उसे "शैतान जिसने अपना चोला बदल लिया है" कहता है और उस पर लानत भेजता है।

71. एक बीमार व्यक्ति के लिए दवा दूसरे के लिए ज़हर हो सकती है। अगर कोई दवा अपनी सीमा से ज़्यादा असरदार हो जाए तो वह बीमारी का कारण बन जाती है।

72. समाज में एकजुटता के कारण उसकी सभी गतिविधियों में शांति बनी रहती है, जबकि आपसी ईर्ष्या के कारण उसकी सभी गतिविधियाँ ठप्प पड़ जाती हैं।

73. यदि समुदाय एक नहीं बल्कि एक पूर्ण, अविभाजित संख्या है, तो जोड़ छोटा बनाता है, जैसे भिन्नों को गुणा करना।2

---

2. यह सर्वविदित है कि अंकगणित में गुणा और योग बढ़ता है: चार गुणा चार सोलह बनता है। जबकि भिन्न, गुणा और योग के विपरीत, छोटे होते हैं: एक तिहाई गुणा एक तिहाई नौवां बनाता है। ठीक उसी तरह, अगर लोगों के बीच समग्रता, शुद्धता और एकता नहीं है, तो गुणा करने से वे छोटे, बिगड़े हुए और मूल्यहीन हो जाते हैं।

74. अस्वीकृति को गैर-अस्तित्व की स्वीकृति के साथ भ्रमित किया जाता है। अस्वीकृति का प्रमाण स्थापित प्रमाण की अनुपस्थिति है। गैर-अस्तित्व की स्वीकृति के लिए गैर-अस्तित्व के प्रमाण की आवश्यकता होती है। एक संदेह है जबकि दूसरा इनकार है।

75. यदि ईमान के मामले में संदेह एक या सौ प्रमाणों को नष्ट कर दे, तो भी जो सिद्ध किया गया है, उसे कोई हानि नहीं पहुँचती; क्योंकि प्रमाण तो सैकड़ों हैं।

76. मुसलमानों के बहुमत का अनुसरण किया जाना चाहिए। क्योंकि जब उन्होंने बहुमत का अनुसरण किया, तो उमय्यद, जो धर्म में ढीले थे, अंततः सुन्नी समुदाय में प्रवेश कर गए। जहाँ तक शिया का सवाल है, जो धर्म में दृढ़ थे, लेकिन अपने आचरण के मामले में अल्पमत में रहे, अंततः उनमें से केवल एक भाग ने राफ़िदा का अनुसरण किया।

77. अगर अच्छे के बारे में एकमत होने से बेहतर के बारे में मतभेद पैदा हो जाए, तो कभी-कभी अच्छा बेहतर से बेहतर होता है; सही सच से ज़्यादा सच्चा होता है। हर किसी को अपने तरीके के बारे में कहना चाहिए कि “यह सही है”, उसे यह नहीं कहना चाहिए कि “यही एकमात्र सही तरीका है।” या उसे यह कहना चाहिए, “यह अच्छा है”, लेकिन उसे यह नहीं कहना चाहिए कि “यही एकमात्र अच्छा तरीका है।”

78. यदि स्वर्ग न होता तो नरक में यातना न होती।

79. जैसे-जैसे समय बढ़ता है, क़ुरआन जवान होता जाता है; उसके संकेत स्पष्ट होते जाते हैं। जैसे प्रकाश कभी अग्नि के रूप में प्रकट होता है, वैसे ही कभी तीव्र वाक्पटुता अतिशयोक्ति के रूप में प्रकट होती है।

80. गर्मी की डिग्री ठंड के हस्तक्षेप से होती है; सुंदरता की डिग्री कुरूपता के हस्तक्षेप से होती है। पूर्व-शाश्वत शक्ति आवश्यक, अनिवार्य और अंतर्निहित है। नपुंसकता इसे भेद नहीं सकती; इसमें कोई डिग्री नहीं हो सकती; इसके संबंध में सब कुछ समान है।

81. सूर्य की छवि, जो उसकी अभिव्यक्ति का तेज है, समुद्र की सतह पर और उसकी सभी बूंदों में एक ही पहचान प्रदर्शित करती है।

82. जीवन एकता की अभिव्यक्ति है; एकता उसका परिणाम भी है।

83. जब तक यह अज्ञात है कि मनुष्यों में पवित्र कौन हैं, शुक्रवार को किस समय प्रार्थनाएँ स्वीकार की जाती हैं, रमज़ान की कौन सी रात शक्ति की रात है, और ईश्वरीय नामों में से कौन सा नाम सबसे बड़ा है, तब तक अन्य चीजें अपना मूल्य रखती हैं और उन्हें महत्व दिया जाता है।

बीस वर्ष का संदिग्ध जीवन, एक हजार वर्ष के जीवन से श्रेष्ठ है, जिसका अंत निश्चित है।

84. इस संसार में पाप का परिणाम परलोक में उसकी सज़ा का प्रमाण है।

85. शक्ति की दृष्टि में जीविका उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी कि जीवन। शक्ति अस्तित्व में लाती है, ईश्वरीय निर्धारण रूप में वस्त्र धारण करता है, ईश्वरीय कृपा पोषण करती है। जीवन एक सारांश है, एक निर्दिष्ट उत्पाद है और प्रत्यक्ष है। जीविका सारांश नहीं है; यह क्रमिक और व्यापक है, और विचार का कारण बनती है। भूख से मृत्यु नहीं होती, क्योंकि मृत्यु शरीर में वसा के रूप में संग्रहीत भोजन के समाप्त होने से पहले ही हो जाती है। अर्थात्, आदत छोड़ने से होने वाली बीमारी मारती है, जीविका की कमी नहीं।

86. मांसाहारी जंगली जानवरों का वैध भोजन मृत जानवरों के असंख्य अवशेष हैं; वे न केवल पृथ्वी को स्वच्छ करते हैं, बल्कि अपना भोजन भी ढूंढते हैं।

87. मुँह में जाने और गले से नीचे उतरने से पहले एक कौर का मूल्य एक कुरुश और एक का मूल्य दस कुरुश के बराबर होता है। मुँह में केवल कुछ सेकंड का अंतर होता है। स्वाद की इंद्रिय को संतुष्ट और प्रसन्न करने के लिए एक से दस तक की कीमत बढ़ाना, जो कि

वह निरीक्षक और द्वारपाल के समान है, वह अत्यन्त अपव्ययी और फिजूलखर्च है।
88. जब सुख की इच्छा हो तो व्यक्ति को कहना चाहिए: "ऐसा लगता है जैसे मैंने इसे खा लिया।" (सनकी येदिम) जिसने इसे अपना सिद्धांत बना लिया, वह "सनकी येदिम" नामक मस्जिद खा सकता था, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया।3
89. पहले मुसलमानों में भूख नहीं थी, सुख की चाह थी, अब वे भूखे हैं, सुख की चाह नहीं रखते।

90. अस्थायी सुख पर मुस्कुराने के बजाय अस्थायी दुखों पर मुस्कुराना चाहिए और उनका स्वागत करना चाहिए। क्योंकि पिछले सुखों के कारण व्यक्ति कहता है: “हाय!”, और “हाय!” एक छिपे हुए दर्द का अर्थ है। जबकि पिछले दुखों के कारण व्यक्ति कहता है: “ओह!”, और “ओह!” एक स्थायी सुख और भरपूरी की बात करता है।

91. विस्मृति भी एक वरदान है। यह व्यक्ति को केवल एक दिन का कष्ट सहने देती है, और शेष दिन भुला देती है।

92. हर विपत्ति में एक हद तक उदारता होती है, जैसे गर्मी की एक हद तक। बड़ी विपत्तियों के बारे में सोचना चाहिए और छोटी विपत्ति में उदारता की हद को ध्यान में रखना चाहिए, और ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए। क्योंकि अगर विपत्ति को बढ़ा-चढ़ाकर बताया जाए, तो वह बढ़ जाएगी; और अगर उसके बारे में चिंता की जाए, तो वह दोगुनी हो जाएगी; दिल में जो छवि, कल्पना है, वह वास्तविकता में बदल जाएगी; और वह दिल को भी झकझोर देगी।

93. समाज में हर किसी के पास एक खिड़की होती है, जिसे पद कहते हैं, जिसके माध्यम से देखा जा सकता है और देखा जा सकता है। अगर खिड़की उसके कद से ऊंची है, तो व्यक्ति अहंकार के कारण लंबा हो जाएगा; और अगर यह उसके कद से कम है, तो वह विनम्रता के कारण झुक जाएगा ताकि देख सके

---

3. यानी व्यक्ति ने अपने संयम से बचाए गए पैसे को अलग रखा और उससे मस्जिद बनवाई। यह मस्जिद इस्तांबुल के फ़ातिह जिले में है। [ट्र.]

और उस स्तर पर देखा जा सकता है। मनुष्य में महानता का माप छोटापन है, अर्थात विनम्रता। छोटेपन का पैमाना बड़ापन है; अर्थात अहंकार।

94. बलवान के सामने निर्बल की गरिमा बलवान में अहंकार बन जाती है; जबकि निर्बल के सामने बलवान की विनम्रता निर्बल में अपमान बन जाती है। अपने पद पर आसीन व्यक्ति की गंभीरता गरिमा है, और उसकी विनम्रता अपमान है। जबकि अपने घर में उसकी गंभीरता अहंकार है, और उसकी विनम्रता विनम्रता है। यदि कोई व्यक्ति अकेला है, तो उसकी सहनशीलता और आत्म-त्याग अच्छे कार्य हैं। लेकिन यदि वह एक से अधिक है, तो वे विश्वासघात और अशुभ हैं।

किसी को अपने नाम पर गर्व करना चाहिए और घमंड नहीं करना चाहिए, लेकिन वह राष्ट्र के नाम पर गर्व कर सकता है और उसे अपना गर्व नहीं करना चाहिए।

95. किसी मामले की प्रारंभिक योजना बनाते समय उसे दूसरों पर छोड़ देना आलस्य है, जबकि परिणाम की प्रतीक्षा करना ईश्वर पर निर्भर रहना है। अपने परिश्रम के फल और भाग्य के साथ समर्पण संतोष है, और प्रयास करने की इच्छा को मजबूत करता है। जबकि जो मौजूद है उसी से काम चलाना उद्यम की कमी है।

96. जिस तरह शरीअत के हुक्मों के सामने आज्ञाकारिता और विद्रोह है, उसी तरह ब्रह्मांड में रचनात्मक आदेशों के सामने आज्ञाकारिता और विद्रोह है। पहले के संबंध में, पुरस्कार और दंड अधिकतर परलोक में हैं, जबकि दूसरे के संबंध में, वे अधिकतर इसी दुनिया में हैं। उदाहरण के लिए, धैर्य का पुरस्कार जीत है; आलस्य का दंड गरीबी है; प्रयास का पुरस्कार धन है, और स्थिरता का पुरस्कार विजय है। समानता के बिना न्याय न्याय नहीं है।

97. परस्पर समानता विरोधाभास का कारण है; अनुरूपता एकजुटता का आधार है; छोटापन विरोधाभास का कारण है; अनुरूपता एकजुटता का आधार है; छोटापन विरोधाभास का कारण है;

चरित्र अहंकार का स्रोत है; दुर्बलता गर्व का स्रोत है; नपुंसकता विरोध का स्रोत है; और जिज्ञासा ज्ञान का शिक्षक है।

98. आवश्यकता के माध्यम से, और विशेष रूप से भूख के माध्यम से, सृष्टिकर्ता की शक्ति ने सबसे पहले मनुष्य और सभी जानवरों पर लगाम लगाई है, और उन्हें व्यवस्थित किया है। साथ ही, उसने दुनिया को अराजकता से बचाया है, और आवश्यकता को सभ्यता का स्वामी बनाकर प्रगति सुनिश्चित की है।

99. संकट बुराई सिखाता है। निराशा गुमराही का स्रोत है; और हृदय का अंधकार आत्मा के संकट का स्रोत है।

100. मोहवश पुरुष सुशील हो जाते हैं, और स्त्रियाँ निर्लज्ज होकर पुरुषोचित हो जाती हैं।

भाइयों की सभा में एक सुंदर स्त्री का प्रवेश पाखंड, प्रतिद्वंद्विता और ईर्ष्या को जगाता है। यानी, महिलाओं के अनावरण से सभ्य मनुष्य में बुरे संस्कारों का अनावरण हुआ।

101. छोटी-छोटी मुस्कुराती हुई लाशों के चित्रित रूपों ने आधुनिक मनुष्य की बुराई-प्रदूषित विकृत भावना को वह बनाने में बड़ी भूमिका निभाई है जो वह है।

102. निषिद्ध मूर्ति या तो क्रूर अत्याचार है, या मूर्त वासना है, या मूर्त पाखंड है।

103. जो व्यक्ति इस्लाम की सीमाओं में प्रवेश कर चुका है और उसके निर्विवाद मामलों का पालन कर रहा है, उसके लिए विस्तार की इच्छा पूर्णता की इच्छा है। लेकिन जो व्यक्ति आलस्य के कारण सीमाओं से बाहर माना जाता है, उसके लिए विस्तार की इच्छा विनाश की इच्छा है। तूफ़ान और भूकंप के समय इज्तिहाद के दरवाज़े न खोलना और खिड़कियाँ भी बंद कर देना उचित है। जो लोग बहुत ज़्यादा स्वतंत्र और सहज हैं, उन्हें छूट नहीं देनी चाहिए, बल्कि दृढ़ता और सख़्ती से चेतावनी देनी चाहिए।

104. दुर्भाग्यपूर्ण सत्य बेकार हाथों में बेकार हो जाते हैं।

105. हमारा ग्लोब एक जीवित प्राणी जैसा दिखता है; इसमें जीवन के लक्षण दिखाई देते हैं। अगर इसे घटाकर देखा जाए तो अंडे के आकार का, क्या यह एक प्रकार का जानवर नहीं बन जाएगा? या अगर एक सूक्ष्म जीव को पृथ्वी के आकार में बड़ा कर दिया जाए, तो क्या यह उससे मिलता-जुलता नहीं होगा? अगर इसमें जीवन है, तो इसमें आत्मा भी है। अगर दुनिया को मनुष्य के आकार में छोटा कर दिया जाए, और सितारों को उसके अस्तित्व के कणों और पदार्थ की तरह बना दिया जाए, तो क्या वह भी एक जीवित चेतन प्राणी नहीं होगा? भगवान के पास ऐसे कई जानवर हैं।

106. दो शरीयत हैं:

पहला है शरिया, जिसे हम जानते हैं, जो मनुष्य, सूक्ष्म जगत के कार्यों और आचरण को आदेश देता है, तथा वाणी के गुण से आगे बढ़ता है।

दूसरा सृष्टि का सर्वोच्च शरिया है, जो संसार की गति और शेष भाग को आदेश देता है, मैक्रोएन्थ्रोपोस, इच्छा के गुण से आगे बढ़ता है, और कभी-कभी इसे गलत तरीके से प्रकृति कहा जाता है।
फ़रिश्ते एक विशाल समुदाय हैं; वे रचनात्मक आदेशों के वाहक, प्रतिनिधि और मानवीकरण हैं जो इच्छा के गुण से उत्पन्न होते हैं और सृष्टि के शरीअत हैं।

107. यदि आप किसी सूक्ष्म जीव की इन्द्रियों को मनुष्य की इन्द्रियों के साथ तौलें तो आपको एक अजीब रहस्य दिखाई देगा: मनुष्य या.सिन का रूप है, उसमें सूरा या.सिन अंकित है।

108. भौतिकवाद एक आध्यात्मिक महामारी है जिसने मनुष्य को भयंकर बुखार से संक्रमित कर दिया है, जिससे उस पर ईश्वरीय प्रकोप छा गया है। जितनी अधिक धारणा और आलोचना करने की क्षमता बढ़ती है, उतनी ही यह महामारी फैलती है।

109. सबसे अधिक दुखी, व्यथित और पीड़ित वह व्यक्ति है जो काम नहीं करता। क्योंकि आलस्य अस्तित्वहीनता का ही एक हिस्सा है, जबकि प्रयास करना अस्तित्व का जीवन और जीवन की जागृत अवस्था है।
110. बैंकों से लाभ कमाना, जो सूद और ब्याज के द्वार हैं, काफिरों के लिए है, जो मानव जाति में सबसे बुरे हैं, सबसे अत्याचारी हैं और सबसे नीच हैं। वे इस्लामी दुनिया के लिए पूरी तरह से नुकसान का कारण हैं, इसलिए मानव जाति की समृद्धि को ध्यान में नहीं रखा जाना चाहिए। क्योंकि अगर काफिर युद्धप्रिय और आक्रामक हैं, तो वे सम्मान और सम्मान से रहित हैं।

111. जुमे की नमाज़ में खुतबा धर्म के ज़रूरी और निर्विवाद मामलों का ज़िक्र करने के लिए होता है, सैद्धांतिक मामलों में शिक्षा देने के लिए नहीं। अरबी शब्द इनको और भी ऊँचे अंदाज़ में याद दिलाते हैं। अगर हदीस और क़ुरआन की आयतों को संतुलित किया जाए तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि सबसे ज़्यादा वाक्पटु व्यक्ति भी आयतों की वाक्पटुता को प्राप्त नहीं कर सकता और उनके बराबर नहीं हो सकता।

एस सहायता एन भालू

दमिश्क धर्मोपदेश का दूसरा परिशिष्ट

दूसरा हिस्सा

सूरा अल-इखलास1 का एक संकेत

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

सारी प्रशंसा ईश्वर के लिए है, जो सारे संसार का पालनहार है, तथा शांति और आशीर्वाद उसके
रसूलों के प्रमुख मुहम्मद पर हो।

'वह है' का विशिष्टीकरण साक्षी की एकता की ओर संकेत है: वास्तविकता की दृष्टि से, उसके अलावा कुछ भी नहीं देखा जाता है।

ईश्वर, एक, ईश्वरीय एकता का स्पष्ट कथन है: उसके अलावा पूजा की कोई सच्ची वस्तु नहीं है।

ईश्वर, जो सदा से प्रार्थना करता आया है, ईश्वरीय प्रभुत्व की एकता की ओर संकेत करता है: कोई सृष्टिकर्ता नहीं है

और पालनहार उसे बचाए। यह ईश्वरीय शक्ति की एकता का भी संकेत है

---

1. कुरान, सूरा 112.

और शक्ति: उसके अलावा कोई भी आत्मनिर्भर और पूर्णतः आत्मनिर्भर नहीं है।
वह ईश्वरीय महिमा की एकता की ओर संकेत नहीं करता है, और ईश्वर के साथ हर तरह के साझीदारों की संगति को अस्वीकार करता है।
अर्थात्, जो परिवर्तन या विभाजन के अधीन है, या जो प्रजनन करता है, वह ईश्वर नहीं हो सकता। यह ईश्वर के साथ 'दस बुद्धि' या स्वर्गदूतों, यीशु या उज़ैर के रूप में ईश्वर के साथ साझीदारों की संगति को अस्वीकार करता है, जो ईश्वरीय संतान हैं।

और न ही वह पैदा हुआ है, यह ईश्वर की अनंतता और उसकी एकता को साबित करता है। यह कार्य-कारण, सितारों की पूजा, मूर्तिपूजा और प्रकृतिवाद के रूप में ईश्वर को भागीदार मानने से इनकार करता है। यानी, जो कुछ भी अपने मूल से बना है या अलग है, या किसी पदार्थ से पैदा हुआ है, वह ईश्वर नहीं हो सकता।
और उसके जैसा कोई नहीं है, यह ईश्वरीय एकता की व्यापक पुष्टि है। यानी, उसके सार में, या उसके गुणों में, या उसके कार्यों में उसका कोई समान, साथी या समकक्ष नहीं है।
उसके समान कोई चीज़ नहीं, और वह सब कुछ सुननेवाला, देखनेवाला है।[2]
कुरान का यह सूरा ईश्वर के साथ किसी भी तरह के साझीदार को अस्वीकार करता है, और इसके छह वाक्य ईश्वरीय एकता की पुष्टि के सात स्तर हैं। प्रत्येक वाक्य दूसरे वाक्य का परिणाम और प्रमाण दोनों है।

अपने सभी भागों और सदस्यों के साथ, और यहां तक कि अपनी कोशिकाओं और अपने सभी कणों के साथ, ब्रह्मांड, जो ईश्वरीय एकता का सर्वोच्च पुष्टिकर्ता और इसका सबसे बड़ा प्रमाण है, घोषणा करता है कि "ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है," एक मेवलेवी दरवेश की तरह ईश्वर के नामों का उल्लेख करते हुए, सभी इस शक्तिशाली प्रमाण की गूंजती ध्वनि में योगदान करते हैं, जैसे कि ईश्वरीय एकता की पुष्टि करने वाली जीभें।

यदि तुम कुरान की आयत पर कान लगाओगे, जो ईश्वरीय एकता का स्पष्ट प्रमाण है, तो तुम

---

2. कुरान, 42:11.

अपने हृदय की गहराई से एक अत्यंत उन्नत, गंभीर, हार्दिक, परिचित, आश्वस्त करने वाली, स्वर्गीय आवाज को सुनें, जो प्रमाणों से सुसज्जित है, जो लगातार जपती है: "ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।"
इस प्रकाशित प्रमाण के छह पहलू सभी पारदर्शी हैं। इसके ऊपर चमत्कार की मुहर है; इसके भीतर मार्गदर्शन की रोशनी है;
इसके नीचे प्रमाण और तर्क हैं; इसके दाईं ओर बुद्धि को जांच करने के लिए बुला रहा है; इसके बाईं ओर विवेक को गवाही देने के लिए बुला रहा है; इसके सामने अच्छा है; इसका लक्ष्य दोनों दुनियाओं का सुख है; और इसका आधार बिंदु शुद्ध रहस्योद्घाटन है। संदेह और भ्रम इसे कैसे भेद सकते हैं?

* * *

इच्छा, मन, भावना और सूक्ष्म आंतरिक क्षमताएँ, जो विवेक के चार तत्व और आत्मा की चार क्षमताएँ हैं, प्रत्येक का एक अंतिम लक्ष्य होता है। इच्छा का अंतिम लक्ष्य ईश्वर की आराधना है; मन का अंतिम लक्ष्य ईश्वर का ज्ञान है; भावनाओं का अंतिम लक्ष्य ईश्वर से प्रेम है; और आंतरिक क्षमताओं का अंतिम लक्ष्य ईश्वर का दर्शन है। तक़वा के नाम से जानी जाने वाली संपूर्ण उपासना में निम्नलिखित शामिल हैं

शरिया इन चारों को विकसित करता है, उन्हें सुधारता है और उन्हें उनके अंतिम लक्ष्य की ओर ले जाता है।

* * *

यदि सृजन में साधनों और कारणों को वास्तविक प्रभाव दिया गया होता, तो उन्हें सार्वभौमिक चेतना भी दी जानी चाहिए थी, और यह वस्तुओं में पूर्ण कला के विपरीत होता।
हालाँकि, निम्नतम से उच्चतम और निम्नतम से उच्चतम तक वस्तुओं में कला की उत्कृष्टता

सबसे छोटे से लेकर सबसे बड़े तक, प्रत्येक के जन्मजात कद के अनुपात में है। इस प्रकार, कुछ सच्चे कारणकर्ता के करीब नहीं हैं और कुछ उससे दूर हैं, और उनमें से कुछ मध्यस्थों के माध्यम से नहीं बनाए गए हैं और कुछ बिना किसी के। मनुष्य के स्वैच्छिक कार्यों में पूर्णता का अभाव मजबूरी के विचारों को खारिज करता है और इच्छा को प्रमाणित करता है।

यह ध्यान देने योग्य है कि व्यवस्था के संदर्भ में, मनुष्य द्वारा अपनी इच्छाशक्ति के हस्तक्षेप के माध्यम से अपनी बुद्धि के कार्य के रूप में बनाया गया शहर, उनके छत्ते में रहने वाले मधुमक्खियों के समुदाय से कमतर है, जो प्रेरणा का फल है। जबकि छत्ते की कोशिकाओं का शहर, मधुमक्खियों की कला का प्रदर्शन, अनार के फल और उसके फूल से व्यवस्था के संदर्भ में कमतर है। इसका मतलब यह है कि ब्रह्मांड में सामान्य आकर्षण जिस भी कलम से प्रवाहित होता है, सबसे सूक्ष्म अविभाज्य कणों में मौजूद सबसे छोटा आकर्षण उस कलम के बिंदु हैं।

इस्लाम कहता है: ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है, और यह स्वीकार नहीं करता कि कारणों और मध्यस्थों का कोई वास्तविक प्रभाव होता है। यह मध्यस्थों को स्वयं के अलावा किसी अन्य के अर्थ को दर्शाने वाले के रूप में देखता है।
ईश्वरीय एकता में विश्वास और उसके प्रति समर्पण के कर्तव्य इसकी मांग करते हैं। हालाँकि, क्योंकि यह भ्रष्ट हो चुका है, वर्तमान ईसाई धर्म कारणों और मध्यस्थों को प्रभाव मानता है, और उन्हें खुद को इंगित करने के रूप में देखता है। ईश्वर के पुत्र के रूप में यीशु और पुरोहिताई में उनका विश्वास इसकी मांग करता है, और इसका आग्रह करता है। वे अपने संतों को अपने लिए ऐसे देखते हैं जैसे कि वे किसी दूसरे को इंगित नहीं करते हैं, बल्कि चमक के स्रोत के रूप में, एक दृष्टिकोण के अनुसार दीपक की रोशनी की तरह - सूर्य के प्रकाश से परिवर्तित। हम संतों को दूसरे के अर्थ को इंगित करने वाले के रूप में देखते हैं, यानी प्रतिबिंब और अभिव्यक्ति के स्थान के रूप में, जैसे कि एक दर्पण सूर्य के प्रकाश को फैलाता है।

____

3. नक्शबंदी पद्धति इसी रहस्य पर आधारित है।

इसी कारण से आध्यात्मिक यात्रा विनम्रता से शुरू होती है, आत्म-हीनता से गुज़रती है और ईश्वर में विनाश के स्थान पर पहुँचती है। यह अनंत स्थानों से यात्रा शुरू करती है। ऐसी यात्रा अहंकार और दुष्ट आत्मा के अहंकारी अभिमान से बुझ जाती है। हालाँकि, सच्चा ईसाई धर्म नहीं, बल्कि दर्शनशास्त्र से हिल गया भ्रष्ट ईसाई धर्म अहंकार को मजबूत करता है। यदि उच्च पद और पद का व्यक्ति शक्तिशाली अहंकार के साथ ईसाई है, तो वह अपने धर्म में अधिक दृढ़ हो जाता है, जबकि इसी तरह की स्थिति में एक मुसलमान धर्म में ढीला हो जाता है।

* * *

गतिविधि में तीव्र और अलग-अलग आनंद, जब वह संभाव्य से वास्तविक की ओर जाती है, वह है

ब्रह्मांड में परिवर्तन का खमीर और कानून का केंद्र जिसके माध्यम से सभी चीजें परिपूर्ण होती हैं। जेल से बाहर निकलकर बगीचे में जाना और बीज से अंकुर तक जाना एक ही आनंद है। यदि गतिविधि में परिवर्तन शामिल है, तो आनंद बहुत बढ़ जाता है। यही कारण है कि कर्तव्यों में कठिनाई सहन की जाती है। हालाँकि बुद्धिमान प्राणियों के लिए पूर्ण पूर्णता आकर्षक है, लेकिन मूर्ख प्राणियों के लिए गतिविधि उसी हद तक आकर्षक है और प्रयास को प्रोत्साहित करती है। यही कारण है कि सहजता ही कठिनाई है और कठिनाई ही सहजता है।

* * *

• लालच और जल्दबाजी नुकसान का कारण है। लालची और जल्दबाज़ी करने वाला व्यक्ति सृष्टि में क्रमिक कारणों के अनुसार कार्य नहीं करेगा, जैसे कि सीढ़ियों की सीढ़ियाँ,

और इसलिए सफल नहीं होगा। अगर वह सफल भी हो जाए, तो चूँकि वह स्वाभाविक प्रगति के कुछ चरणों को छोड़ देता है, इसलिए वह निराशा में पड़ जाता है, और फिर, जब असावधानी से ग्रसित हो जाता है, तो उसके लिए दरवाज़ा खोल दिया जाता है। • सर्वशक्तिमान ईश्वर ने आंतरिक हृदय को विश्वास और ज्ञान और अपने प्रति प्रेम के लिए बनाया है, जबकि

बाहरी हृदय को उसने अन्य चीज़ों के लिए बनाया है। आपराधिक लालच दिल को छेदता है, और उसमें मूर्तियों को डाल देता है। ईश्वर नाराज़ होता है और लालची व्यक्ति को उसके उद्देश्य के विपरीत सज़ा देता है। • जो बदमाश महत्वाकांक्षा के कारण राजनीतिक विचारों को इस्लामी मान्यताओं के स्थानों पर ले गए, उन्हें सम्मान और गौरव नहीं मिला, बल्कि उन्हें निंदित और अपमानित किया गया। कामुक प्रेम की निराशा और निराशा इसी लालच और महत्वाकांक्षा से उत्पन्न होती है। इस तरह के प्रेम के बारे में सभी कविताएँ शोक का विलाप हैं। • यदि आप रात को बेचैनी से सोने की कोशिश करते हैं, तो आप नींद को भगा देंगे और जागते रहेंगे। • दो भिखारी हैं, एक लगातार ज़िद करने वाला, दूसरा आरक्षित और आत्म-निहित। इस व्यापक कानून का एक और उदाहरण यह है कि व्यक्ति बाद वाले को देना पसंद करेगा।

* * *

हमारी सबसे बड़ी विपत्ति और बीमारी वह आलोचना है जो गर्व और धोखे पर आधारित है। यदि निष्पक्षता आलोचना का उपयोग करती है, तो यह सत्य को काटती है। जबकि यदि यह गर्व है जो इसका उपयोग करता है, तो यह इसे विकृत और नष्ट कर देता है। सबसे खराब प्रकार वह है जो विश्वास के सिद्धांतों और धर्म के प्रश्नों पर आरोपित होता है। क्योंकि विश्वास में पुष्टि, मन का व्यायाम, प्रतिबद्धता और दोनों शामिल हैं।

समर्पण और अनुपालन। इस तरह की आलोचना अनुपालन, प्रतिबद्धता और मानसिक अभ्यास को नष्ट कर देती है। पुष्टि करने के बजाय, व्यक्ति खुद को प्रतिबद्ध महसूस नहीं करता। संदेह और हिचकिचाहट के इस समय में, सकारात्मक विचारों और उत्साहजनक बयानों पर अनुकूल रूप से विचार करना आवश्यक है जो उज्ज्वल, गर्म दिलों से निकलते हैं, और मन और प्रतिबद्धता के अभ्यास को बढ़ावा देना और मजबूत करना है। जिसे वे "निष्पक्ष, वस्तुनिष्ठ तर्क" कहते हैं वह अस्थायी अविश्वास है। नौसिखिए और सच्चाई के लिए नए लोग ऐसा करते हैं।

* * *

चमत्कारी कुरान की शिक्षा देने वाले - उस सचेतक और शुभ समाचार लाने वाले - का दृष्टिकोण

और उनकी आलोचनात्मक अंतर्दृष्टि इतनी सटीक, उत्कृष्ट, स्पष्ट और मर्मज्ञ थी कि वे उनकी कल्पना के साथ वास्तविकता को भ्रमित और अस्पष्ट नहीं कर सकते थे; और सत्य का उनका मार्ग इतना अधिक संदेहपूर्ण, आत्मनिर्भर और ऊंचा था कि वे लोगों को धोखा नहीं दे सकते थे।

क्योंकि ज्ञानी आंखें धोखा नहीं देतीं, और सत्य की खोज करनेवाला मन धोखा नहीं देता।

* * *

कुरान में इस आयत में चुगली की घृणितता का वर्णन किया गया है: क्या तुममें से कोई अपने मृत भाई का मांस खाना पसंद करेगा?

छह वाक्यों में, छह स्तरों पर, यह चुगली करने वाले की कड़ी निंदा करता है। यह इस प्रकार है:

____

4. कुरान, 49:12.

अपने प्रश्नवाचक रूप में यह कहता है: "सोचो! क्या ऐसी बात की अनुमति दी जा सकती है? यदि तुम्हारा मन स्वस्थ नहीं है, तो अपने हृदय को देखो; क्या वह ऐसी बात से प्रेम कर सकता है? और यदि तुम्हारा हृदय स्वस्थ नहीं है, तो अपने विवेक की जांच करो; क्या वह समाज के जीवन को नष्ट करने के लिए सहमत होगा, मानो अपने ही मांस को अपने ही दांतों से नोच रहा हो? और यदि तुम्हारे पास कोई सामाजिक विवेक नहीं है, तो अपनी मानवता की जांच करो; क्या उसमें ऐसी भूख और ऐसी राक्षसी लोलुपता हो सकती है? यदि तुम्हारे पास कोई मानवता नहीं है, तो सहानुभूति के बारे में सोचो; क्या वह ऐसा कार्य करने के लिए प्रवृत्त हो सकता है जो उसकी अपनी कमर तोड़ दे? और यदि तुम्हारे पास कोई मानवता नहीं है, तो क्या तुम्हारा जन्मजात स्वभाव इतना भ्रष्ट हो गया है कि तुम अपने नंगे दांतों से एक लाश को नोचते हो?

अर्थात्, चुगली करना मनुष्य के मन, हृदय, विवेक, मानवता, सहानुभूति और जन्मजात प्रकृति के साथ-साथ शरीयत के लिए भी प्रतिकूल है, और इसलिए इसे पूरी तरह से अस्वीकार किया जाना चाहिए।

* * *

जो व्यक्ति सहयोग का सही अर्थ नहीं समझता, वह पत्थर से भी अधिक निर्जीव है। क्योंकि कुछ पत्थर अपने भाईयों के साथ सहयोग करने के लिए स्वयं झुक जाते हैं। ऐसा पत्थर, पत्थर होते हुए भी, गुंबद में अपने भाई की ओर झुक जाता है, जब वह निर्माता के हाथ से छूटकर अपना सिर झुकाता है, तो वह अपने भाई के सिर को छूता है, और वे गिरने से बच जाते हैं।

यानी गुंबदों के पत्थर कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हैं ताकि गिर न जाएं।

* * *

सबसे छोटे अविभाज्य कण से लेकर मनुष्य तक और मनुष्य से लेकर सूर्यों के सूर्य तक शंक्वाकार क्रमिक श्रृंखला के केंद्र में स्थित अद्वितीय प्राणी, श्रेष्ठ मनुष्य है।

* * *

मनुष्य के पास जानी-पहचानी इंद्रियों के अलावा अन्य इंद्रियाँ भी होती हैं; उसके पास स्वाद की इंद्रिय जैसी प्रेरक इंद्रियाँ और लालसा की इंद्रियाँ होती हैं। उसके पास बहुत सारी अचेतन इंद्रियाँ होती हैं।

* * *

कभी-कभी इच्छा विचार का रूप ले लेती है, और लालची व्यक्ति पशुवत इच्छा को विचार मान लेता है।

* * *

यह अजीब बात है कि कुछ लोग बदबूदार कीचड़ में गिर जाते हैं, फिर खुद को धोखा देने के लिए कहते हैं कि यह कस्तूरी और एम्बरग्रीस है, और इसे अपने चेहरे पर मल लेते हैं।

* * *

शहीद एक संत है। यह एक दायित्व है कि यदि समुदाय के कुछ लोग इसे अपनाते हैं, तो बाकी लोग दोषमुक्त हो जाते हैं, जिहाद सभी पर अनिवार्य हो गया है। वास्तव में, यह अब दोगुना अनिवार्य हो गया है। हज और जकात की तरह, जिहाद में इरादे की बहुत कम भूमिका होती है। हालाँकि, वास्तविकता के मामले में, इरादे की कमी अभी भी इरादे से मिलती जुलती है। यानी, यदि इरादे का उल्टा न हो तो

यह बात बिलकुल स्पष्ट है कि जिहाद का परिणाम सच्ची शहादत है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जिहाद की जितनी अधिक आवश्यकता होती है, यह उतना ही अधिक निश्चित होता जाता है, और इरादे का प्रभाव, जिसमें इच्छाशक्ति शामिल होती है, कम होता जाता है। अगर इस पापी राष्ट्र के लिए अचानक हजारों संत प्रकट हो जाएं, तो यह कोई छोटा इनाम नहीं होगा।

* * *

हमारे यहाँ अगर कोई सही रास्ते से भटक गया है तो वह आम तौर पर अनैतिक और विवेकहीन है। क्योंकि विवेक में ईमान की आवाज़ को दबा देने से पाप की इच्छा बढ़ती है। इसका मतलब यह है कि अपने विवेक और आध्यात्मिक जीवन को झकझोरने और उन्हें तिरस्कार में डाले बिना वह पूरी तरह से स्वेच्छा से कोई बुरा काम नहीं कर सकता। यही वजह है कि इस्लाम दुष्टों को विश्वासघाती और देशद्रोही मानता है और उनकी गवाही को स्वीकार नहीं करता। यह धर्मत्यागियों को ज़हर समझता है और उन्हें मौत की सज़ा देता है। जबकि यह ईसाई प्रजा और संधि पर हस्ताक्षर करने वाले काफ़िरों को मान्यता देता है। हनफ़ी स्कूल एक गैर-मुस्लिम प्रजा की गवाही को स्वीकार करता है। न्याय को धर्म के नाम पर लागू किया जाना चाहिए ताकि यह दिमाग, दिल और आत्मा पर प्रभावी हो सके और लोग इसके अनुरूप हो सकें। अन्यथा यह केवल कल्पना को प्रभावित करता है।

तब अपराधी केवल राज्य द्वारा निर्धारित दण्ड से ही भयभीत रहता है, यदि वह दण्ड लागू हो जाता है, अथवा वह जनता की निन्दा से भी डरता है; यदि ऐसा होता है।

* * *

एक अपराधी के कारण अनेक निर्दोष लोगों को ले जा रही नाव को नहीं डुबोया जा सकता।
इसी प्रकार, शत्रुता

किसी ऐसे आस्तिक के प्रति पक्षपात नहीं किया जाना चाहिए, जिसमें अनेक निर्दोष गुण हों, केवल एक आपराधिक गुण के कारण।

विशेष रूप से, ईश्वरीय एकता की आस्था और पुष्टि, प्रेम के कारण, उहुद पर्वत की तरह हैं, जबकि शत्रुता के कारण कंकड़ की तरह हैं। हालाँकि यह सोचना अनुचित है कि कंकड़ उहुद पर्वत से भारी हैं, लेकिन एक आस्तिक के लिए दूसरे आस्तिक के प्रति शत्रुतापूर्ण होना उसी हद तक हृदय की कमी है। आस्तिक के बीच शत्रुता केवल दया का रूप ले सकती है।

संक्षेप में: ईमान प्रेम की मांग करता है और इस्लाम भाईचारे की मांग करता है।
शब्द सामान की तरह हैं, उनमें बर्बादी जायज़ नहीं है।

एस सहायता एन भालू

दमिश्क धर्मोपदेश / एक पत्र - पृष्ठ 126

एक पत्र:

जागृत मानवजाति को बचाने के लिए कुरान के सिद्धांत

उसके नाम में उसकी महिमा हो!

आप पर शांति बनी रहे, तथा ईश्वर की दया और आशीर्वाद सदैव बना रहे।
मेरे प्रिय, सच्चे भाईयो!
सबसे पहले: मैं आपको सभी त्यौहारों और पवित्र रात्रियों के लिए पूरे दिल से बधाई देता हूं, चाहे वे भूतकाल के हों या भविष्यकाल के, भौतिक और आध्यात्मिक, और ईश्वरीय दया से प्रार्थना करता हूं कि आपकी प्रार्थनाएं और पूजा स्वीकार्य हों, और मैं उन्हें "आमीन" कहता हूं।

दूसरा: मैं आपके दो प्रश्नों का निजी तौर पर उत्तर देने के लिए बाध्य हूँ, जो कई मायनों में महत्वपूर्ण हैं, और आपने अक्सर अर्थपूर्ण ढंग से पूछे हैं: आपका पहला प्रश्न: ऐसा क्यों था कि द्वितीय संवैधानिक काल के आरंभ में
आप राजनीति में पूरी तरह से शामिल थे, फिर भी अब लगभग चालीस वर्षों से आपने इसे पूरी तरह से त्याग दिया है?

उत्तर: मुझे पूर्ण निश्चयता से समझ में आ गया कि

दमिश्क धर्मोपदेश / एक पत्र - पृष्ठ 127

आज तक मानव जाति द्वारा किए गए जघन्य अपराध राजनीति के लिए आधारभूत कानून के दुरुपयोग से उत्पन्न हुए हैं और इसे इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है कि "राष्ट्र की भलाई और समुदाय की भलाई के लिए व्यक्तियों की बलि दी जा सकती है।" चूँकि मनुष्य द्वारा बनाए गए इस मौलिक कानून की कोई निर्दिष्ट सीमा नहीं है, इसलिए इसने अत्यधिक दुरुपयोग का रास्ता खोल दिया है। इस अत्याचारी कानून ने दो विश्व युद्धों के लिए फतवा जारी किया और एक हजार साल की मानवीय प्रगति को उलट दिया।

इसी तरह इसने दस अपराधियों के कारण नब्बे निर्दोष लोगों के विनाश की अनुमति दी। आम भलाई के बहाने, व्यक्तिगत घृणा ने एक अपराधी के कारण एक शहर को नष्ट कर दिया। चूंकि रिसाले-ए-नूर ने अपने कुछ संग्रहों और बचाव भाषणों में इस तथ्य को साबित किया है, इसलिए मैं आपको उनका हवाला देता हूं।

इस प्रकार, मनुष्य की राजनीति और कूटनीति के इस अत्याचारी कानून के सामने मैंने चमत्कारिक व्याख्या के कुरान के नीचे वर्णित मौलिक नियमों की खोज की, जो कि सर्वोच्च सिंहासन से आते हैं। वे इन आयतों द्वारा व्यक्त किए गए हैं:

कोई बोझा ढोने वाला किसी दूसरे का बोझा नहीं उठा सकता। 1 * यदि कोई किसी मनुष्य की हत्या करता है - जब तक कि चाहे वह हत्या के लिए या पृथ्वी पर भ्रष्टाचार फैलाने के लिए दंड के रूप में हो, यह ऐसा होगा मानो उसने समस्त मानवजाति का वध कर दिया हो।
[2] ये दो श्लोक निम्नलिखित सिद्धांत सिखाते हैं: दूसरे जवाबदेह नहीं हैं

किसी व्यक्ति के अपराध के लिए। और, उसकी सहमति के बिना, एक निर्दोष व्यक्ति को पूरी मानव जाति के लिए भी बलिदान नहीं किया जा सकता है। यदि वह स्वेच्छा से अपनी सहमति देता है और खुद को बलिदान करता है, तो उसका आत्म-बलिदान एक तरह की शहादत है और यह एक अलग मामला है। यह मनुष्य के लिए सच्चा न्याय स्थापित करता है। विवरण के लिए मैं आपको रिसाले-ए नूर का संदर्भ देता हूं।

---

1. कुरान, 6:164, आदि.
2. कुरान, 5:32.

दूसरा प्रश्न : बहुत पहले जब आप पूर्व की खानाबदोश जनजातियों के बीच भ्रमण कर रहे थे, तो आप उन्हें प्रगति और आधुनिक सभ्यता की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करते थे। लेकिन अब लगभग चालीस वर्षों से आप इसे 'निम्न' सभ्यता कहते हैं और समाज के जीवन से अलग होकर एकांत में चले गए हैं। ऐसा क्यों है?

उत्तर: चूँकि आधुनिक पश्चिमी सभ्यता प्रकट धर्मों के मूल नियमों के विपरीत काम करती है, इसलिए इसकी बुराइयाँ इसके अच्छे पहलुओं पर भारी पड़ गई हैं, और इसकी गलतियाँ और हानिकारक पहलू इसके लाभों पर भारी पड़ गए हैं; और सामान्य शांति और एक खुशहाल सांसारिक जीवन, सभ्यता के सच्चे उद्देश्य, नष्ट हो गए हैं। और चूँकि मितव्ययिता और संतोष का स्थान अपव्यय और अपव्यय ने ले लिया है, और आलस्य और आराम की इच्छा ने प्रयास और सेवा की भावना को मात दे दी है, इसने दुर्भाग्यपूर्ण मानव जाति को बेहद गरीब और बेहद आलसी बना दिया है। प्रकट कुरान के मूल नियम की व्याख्या करते हुए: खाओ और पियो, लेकिन ज़्यादा बर्बाद मत करो,[3]

और,

मनुष्य के पास उसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं है जिसके लिए वह प्रयत्न करता है,[4]

रिसाले-ए-नूर में कहा गया है: "इस जीवन में मनुष्य की खुशी मितव्ययिता और प्रयास में निहित है, और इसी के माध्यम से अमीर और गरीब में सामंजस्य स्थापित होगा।" मैं इस स्पष्टीकरण के अनुरूप एक या दो संक्षिप्त बातें यहाँ कहना चाहूँगा।

पहला: खानाबदोश अवस्था में, मनुष्य को केवल तीन या चार चीजों की आवश्यकता होती थी, और दस में से केवल दो ही ऐसे थे जो उन्हें प्राप्त नहीं कर पाते थे। लेकिन अब, अपव्यय, दुर्व्यवहार, भूख को उत्तेजित करने और रीति-रिवाज़ और व्यसन जैसी चीज़ों के ज़रिए, वर्तमान सभ्यता ने लोगों को बहुत ज़्यादा परेशान कर दिया है।

---

3. कुरान, 7:31.
4. कुरान, 53:39.

अनावश्यक ज़रूरतें ज़रूरी लगती हैं, और जिन चार चीज़ों की उसे पहले ज़रूरत थी, उनकी जगह अब आधुनिक सभ्य मनुष्य को बीस चीज़ों की ज़रूरत है। और बीस में से सिर्फ़ दो ही ऐसे हैं जो पूरी तरह से वैध तरीके से उन ज़रूरतों को पूरा कर पाते हैं; अठारह किसी न किसी तरह से ज़रूरतमंद बने रहते हैं।
कहने का मतलब यह है कि आधुनिक सभ्यता मनुष्य को बहुत गरीब बना देती है। अपनी जरूरतों के कारण यह मनुष्य को गलत कामों और अवैध लाभ की ओर धकेलती है। यह हमेशा गरीब निम्न वर्ग को उच्च वर्ग को चुनौती देने के लिए प्रोत्साहित करती है। इसने कुरान के पवित्र मौलिक कानून को त्याग दिया है, जिसमें जकात की अदायगी को अनिवार्य बनाया गया है और सूद और ब्याज पर रोक लगाई गई है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि निम्न वर्ग उच्च वर्ग के प्रति आज्ञाकारी रहे और उच्च वर्ग निम्न वर्ग के प्रति सहानुभूति रखे, और पूंजीपतियों को अत्याचार करने और गरीबों को विद्रोह करने के लिए प्रोत्साहित किया। इसने मानव जाति की शांति को नष्ट कर दिया है।

दूसरा बिंदु: चूँकि आधुनिक सभ्यता के चमत्कार प्रत्येक प्रभु की देन हैं, इसलिए उन्हें वास्तविक धन्यवाद की आवश्यकता है और उन्हें मानव जाति के लाभ के लिए उपयोग किया जाना चाहिए। लेकिन अब हम देखते हैं कि चूँकि उन्होंने बड़ी संख्या में लोगों को आलसी बनने और बुराई में लिप्त होने के लिए प्रोत्साहित किया है, और उन्हें आराम और सुविधा से अपनी इच्छाओं पर ध्यान देने की इच्छा दी है; उन्होंने इन लोगों की प्रयास और प्रयास के लिए उत्सुकता को नष्ट कर दिया है। और असंतोष और अपव्यय के माध्यम से, उन्होंने उन्हें अपव्यय, अपव्यय, अत्याचार और गैरकानूनी कामों की ओर धकेल दिया है।

उदाहरण के लिए, जैसा कि रिसाले-ए-नूर की दुनिया की कुंजी में कहा गया है, हालांकि रेडियो एक महान उपहार है और मानव जाति की भलाई के लिए इस्तेमाल किए जाने के रूप में धन्यवाद मांगता है, क्योंकि इसका चार-पांचवां हिस्सा अनावश्यक, अर्थहीन तुच्छ बातों पर इस्तेमाल किया जाता है, इसने आलस्य और दुराचार को बढ़ावा दिया है, और काम के प्रति उत्सुकता को नष्ट कर दिया है। मैंने खुद भी कई सबसे लाभकारी लोगों के साथ ऐसा देखा है

चमत्कार, जिनका उपयोग प्रयास और काम तथा मनुष्य के सच्चे लाभ और आवश्यकताओं के लिए किया जाना चाहिए, दस में से आठ चमत्कार मनुष्य को मौज-मस्ती में लिप्त होने, अपनी इच्छाओं को पूरा करने और आलसी होने के लिए प्रेरित कर रहे हैं, और उनमें से केवल एक या दो ही आवश्यक आवश्यकताओं पर खर्च किए जा रहे हैं। इन दो छोटे उदाहरणों जैसे हजारों उदाहरण हैं।

संक्षेप में: चूँकि आधुनिक पश्चिमी सभ्यता ने वास्तव में प्रकट धर्मों पर ध्यान नहीं दिया है, इसने मनुष्य को दरिद्र बना दिया है और उसकी ज़रूरतें बढ़ा दी हैं। इसने मितव्ययिता और संतोष के सिद्धांत को नष्ट कर दिया है, और अपव्यय, लालच और लोभ को बढ़ा दिया है। इसने अत्याचार और जो कुछ भी गैरकानूनी है, उसके लिए रास्ता खोल दिया है। लोगों को अपव्यय के साधनों का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित करके, इसने उन जरूरतमंद दुर्भाग्यपूर्ण लोगों को पूरी तरह से आलस्य में डाल दिया है। इसने प्रयास और काम करने की इच्छा को नष्ट कर दिया है। इसने दुराचार और अपव्यय को बढ़ावा दिया है, और उनके जीवन को बेकार की चीज़ों पर बर्बाद कर दिया है। इसके अलावा, इसने उन जरूरतमंद और आलसी लोगों को बीमार बना दिया है। दुर्व्यवहार और अपव्यय के माध्यम से, यह सौ प्रकार की बीमारियों को फैलाने का साधन रहा है।

मानवजाति को तीन भयानक बातों से लगातार खतरा बना रहता है: गंभीर ज़रूरतें, बुराई और व्यभिचार की इच्छा, और मृत्यु - और अनगिनत बीमारियाँ, जो उसे हमेशा मौत की याद दिलाती रहती हैं - जिसे नास्तिक धाराएँ जिन्होंने अपनी घुसपैठ करने वाली सभ्यता के ज़रिए मानवजाति को जगाया है, वे हमेशा के लिए खत्म हो जाना बताती हैं। ये सभी मानवजाति को नरक जैसी यातना देते हैं। मानवजाति की इस भयावह आपदा के सामने, चमत्कारिक व्याख्या के कुरान के संकेतों और संकेतों से यह समझा जा सकता है कि अपने चार सौ मिलियन छात्रों और अपने पवित्र, प्रकट किए गए मौलिक नियमों के जागरण के साथ, यह उन तीन भयानक घावों को ठीक कर देगा - जैसा कि इसने एक हज़ार तीन सौ साल पहले किया था; और अगर

प्रलय का दिन जल्दी नहीं टूटता, यह दिखाते हुए कि मृत्यु बाहरी विनाश नहीं है, बल्कि प्रकाश की दुनिया के लिए भेजे जाने वाले पत्रों की तरह है, यह मानवता को सांसारिक जीवन और परलोक दोनों का सुख प्रदान करेगी; और जो सभ्यता सर्वज्ञ कुरान से विकसित होगी, उसमें सभ्यता के गुण उसकी बुराइयों पर हावी होंगे; और जैसा कि अब तक हुआ है, धर्म का एक हिस्सा सभ्यता के एक हिस्से के लिए रिश्वत के रूप में नहीं दिया जाएगा, बल्कि सभ्यता उन स्वर्गीय नियमों की सेवा और सहायता करेगी। जैसा कि सर्वज्ञ कुरान यह संकेत देता है, इसलिए जागरूक मानवता ईश्वरीय दया से इसकी प्रतीक्षा करती है, इसकी तलाश करती है, और इसके लिए ईश्वरीय दया की याचना करती है।

वह शाश्वत है, वह शाश्वत है!

एस सहायता एन भालू